FAIZANE MERAJ (HINDI)

वोह सरवरे किश्वरे रिसालत जो अ़र्श पर जल्वा गर हुवे थे

फ़ैज़ाने मे'राज

المدينة العلمية
(دعوتِ اسلامی)
शो'बए इस्लाही कुतुब

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

क़िताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه **दीनी** किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तर्जमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले।

(المُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکربیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
बक़ीअ़
व मग़फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी उस इ़ल्म पर अ़मल न किया)

(تاریخ دمشق لابن عساکر، ج ۵۱ ص ۱۳۸ دار الفکر بیروت)

क़िताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

क़िताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

www.dawateislami.net

फ़ैज़ाने मे’राज

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **दा’वते इस्लामी** की मजलिस **“अल मदीनतुल इल्मिय्या”** ने येह किताब “**उर्दू**” ज़बान में पेश की है और **मजलिसे तराजिम** ने इस किताब का “**हिन्दी**” रस्मुल ख़त़ (लीपियांतर) करने की सआदत ह़ासिल की है [**भाषांतर** (TRANSLATION) नहीं बल्कि सिर्फ़ **लीपियांतर** (TRANSLITERATION) या’नी ज़बान तो **उर्दू** ही है जब कि लीपि **हिन्दी** रखी है] और **मक्तबतुल मदीना** से **शाएअ़** करवाया है।

इस किताब में अगर किसी जगह **कमी-बेशी** या **ग़लत़ी** पाएं तो **मजलिसे तराजिम** को (ब ज़रीअ़ए SMS या E-MAIL) **मुत्त़लअ़** फ़रमा कर सवाब कमाइये।

उर्दू से हिन्दी रस्मुल ख़त़ का लीपियांतर चार्ट

त = ت	फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
झ = جھ	ज = ج	स = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ	थ = تھ
ढ = ڈھ	ध = دھ	ड = ڈ	द = د	ख़ = خ	ह़ = ح
ज़ = ژ	ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر	ज़ = ذ

अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط	ज़ = ض	स = ص	श = ش	स = س
ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق	फ़ = ف	ग़ = غ	’ = ءُ
य = ی	ह = ہ	व = و	न = ن	म = م	ल = ل	घ = گھ
् = ْ	ु = ُ	ि = ِ	– = َ	ी = ئ	ू = وُ	ा = آ

-: राबित़ा :-

मजलिसे तराजिम, मक्तबतुल मदीना (दा’वते इस्लामी)

मदनी मर्कज़, क़ासिम हाला मस्जिद, सेकन्ड फ़्लोर,
नागर वाड़ा मेन रोड, बरोडा, गुजरात, अल हिन्द

Mo. + 91 9327776311

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

www.dawateislami.net

वोह सरवरे किश्वरे रिसालत जो अ़र्श पर जल्वागर हुवे थे

फ़ैज़ाने मे'राज

-: पेशकश :-

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

शो'बए इस्लाही कुतुब

नाशिर

मक्तबतुल मदीना

421,उर्दू मार्केट, मटया महल,

जामेअ़ मस्जिद, देहली-6

www.dawateislami.net

नाम किताब : फ़ैज़ाने मे'राज
पेशकश : शो'बए इस्लाही कुतुब (मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या)
सिने त़बाअ़त : ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम, सि. 1435 हि.
ता'दाद : ---
नाशिर : मक्तबतुल मदीना देहली (हिन्द)
क़ीमत : ---

तस्दीक़ नामा

तारीख़ : 7 रजबुल मुरज्जब, सि. 1435 हि. ह़वाला नम्बर : 193

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ اَجْمَعِيْنَ

तस्दीक़ की जाती है कि किताब

''फ़ैज़ाने मे'राज'' (उर्दू)

(**मत़बूआ़ : मक्तबतुल मदीना**) पर मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल की जानिब से नज़रे सानी की कोशिश की गई है। मजलिस ने इसे अ़क़ाइद, कुफ़्रिया इ़बारात, अख़्लाक़िय्यात, फ़िक़्ही मसाइल और अ़रबी इ़बारात वग़ैरा के ह़वाले से मक़्दूर भर मुलाह़ज़ा कर लिया है, अलबत्ता कम्पोज़िंग या किताबत की ग़लतियों का ज़िम्मा मजलिस पर नहीं।

मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल
(दा'वते इस्लामी)
07-05-2014

E - mail : ilmiapak@dawateislami.net

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह किताब छापने की इजाज़त नहीं।

www.dawateislami.net

याद दाश्त

(दौराने मुत़ालआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़्हा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये । اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इ़ल्म में तरक़्क़ी होगी ।)

उ़नवान	सफ़्हा	उ़नवान	सफ़्हा

www.dawateislami.net

इजमाली फ़ेहरिस्त

अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (तआ़रुफ़)	6	वाक़िआ़ए **मे'राज** से माख़ूज़ चन्द अनमोल मदनी फूल	49
पेशे लफ़्ज़	8		
वाक़िआ़ए **मे'राज** का बयान	13	क़ुरआन में **मे'राज** का बयान	56
बैतुल मुक़द्दस की त़रफ़ रवानगी	16	**मे'राज** के ह़वाले से मुफ़ीद मा'लूमात	62
आस्मान की त़रफ़ उ़रूज	26	शबे **मे'राज** के मुशाहदात	70
दीदारे इलाही और हम कलामी का शरफ़	36	इन्आ़माते इलाहिय्या से मुतअ़ल्लिक़	70
जन्नत की सैर	39	अ़ज़ाबे इलाही से मुतअ़ल्लिक़	81
जहन्नम का मुआ़यना	40	**मे'राज** शरीफ़ से मुतअ़ल्लिक़ चन्द मन्ज़ूम कलाम	99
वापसी का सफ़र	41		
वाक़िआ़ए **मे'राज** का ए'लान	42	तफ़्सीली फ़ेहरिस्त	122

तीन[3] नफ़्अ़ बख़्श चीज़ें

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जब आदमी इन्तिक़ाल करता है तो उस का अ़मल मुन्क़त़अ़ हो जाता है मगर तीन[3] अ़मल जारी रहते हैं : (1) सदक़ए जारिया (2) या जिस इ़ल्म से नफ़्अ़ ह़ासिल किया जाता हो (3) या नेक बच्चा जो उस के लिये दुआ़ करता हो।

(صحیح مسلم، کتاب الوصیۃ، باب ما یلحق الانسان...الخ، ص٦٣٨، الحدیث: ١٦٣١)

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

"फ़ैज़ाने मे'राज" के दस हुरूफ़ की निस्बत से इस किताब को पढ़ने की 10 निय्यतें

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : نِیَّۃُ الْمُؤْمِنِ خَیْرٌ مِّنْ عَمَلِہٖ
या'नी मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।

(المعجم الکبیر للطبرانی، ۳/۵۲۵، الحدیث:۵۸۰۹)

दो मदनी फूल :

﴾1﴿ बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।
﴾2﴿ जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

(1) हर बार ह़म्द व सलात और (2) तअ़व्वुज़ व तस्मिय्या से आग़ाज़ करूंगा (इसी सफ़ह़े पर ऊपर दी हुई दो अ़रबी इ़बारात पढ़ लेने से इन निय्यतों पर अ़मल हो जाएगा) (3) रिज़ाए इलाही के लिये इस किताब का अव्वल ता आख़िर मुत़ालआ़ करूगां। (4) ह़त्तल वस्अ़ इस का बा वुज़ू और (5) क़िब्ला रू मुत़ालआ़ करूंगा (6) जहां जहां "**अल्लाह**" का नामे पाक आएगा वहां عَزَّوَجَلَّ और (7) जहां जहां "**सरकार**" का इस्मे मुबारक आएगा वहां صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पढ़ूंगा। (8) दूसरों को येह किताब पढ़ने की तरग़ीब दिलाऊंगा। (9) इस ह़दीसे पाक تَهَادَوْا تَحَابُّوْا एक दूसरे को तोह़फ़ा दो आपस में मह़ब्बत बढ़ेगी। (مؤطا امام مالک، ص ۴۸۳، الحدیث: ۱۷۳۱) पर अ़मल की निय्यत से (एक या ह़स्बे तौफ़ीक़) येह किताब ख़रीद कर दूसरों को तोह़फ़तन दूंगा। (10) किताबत वग़ैरा में शरई ग़लत़ी मिली तो नाशिरीन को तह़रीरी त़ौर पर मुत्तलअ़ करूंगा। اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ (नाशिरीन को किताबों की अग़लात़ सिर्फ़ ज़बानी बता देना ख़ास मुफ़ीद नहीं होता।)

www.dawateislami.net

अल मदीनतुल इल्मिय्या

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَلٰی اِحْسَانِهٖ وَبِفَضْلِ رَسُوْلِهٖ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **"दा'वते इस्लामी"** नेकी की दा'वत, एह़याए सुन्नत और इशाअ़ते इ़ल्मे शरीअ़त को दुन्या भर में आ़म करने का अ़ज़्मे मुसम्मम रखती है, इन तमाम उमूर को ब ह़ुस्ने ख़ूबी सर अन्जाम देने के लिये मुतअ़द्दिद मजालिस का क़ियाम अ़मल में लाया गया है जिन में से एक मजलिस **"अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या"** भी है जो **दा'वते इस्लामी** के **उ़लमा व मुफ़्तियाने किराम** كَثَّرَهُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی पर मुश्तमिल है, जिस ने ख़ालिस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती काम का बीड़ा उठाया है। इस के मुन्दरिजए ज़ैल **छे शो'बे** हैं :

﴾1﴿ शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत ﴾2﴿ शो'बए दर्सी कुतुब
﴾3﴿ शो'बए इस्लाह़ी कुतुब ﴾4﴿ शो'बए तख़रीज
﴾5﴿ शो'बए तफ़्तीशे कुतुब ﴾6﴿ शो'बए तराजिमे कुतुब

"अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या" की अव्वलीन तरजीह़ सरकारे आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, अ़ज़ीमुल बरकत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिदअ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त,

www.dawateislami.net

बाइसे ख़ैरो बरकत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी अश्शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُالرَّحْمٰن की गिरां मायह तसानीफ़ को अ़सरे ह़ाज़िर के तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ ह़त्तल वस्अ़ सह्ल उस्लूब में पेश करना है। तमाम इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें इस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती **मदनी काम** में हर मुमकिन तआ़वुन फ़रमाएं और **मजलिस** की त़रफ़ से शाएअ़ होने वाली कुतुब का ख़ुद भी मुत़ालआ़ फ़रमाएं और दूसरों को भी इस की तरग़ीब दिलाएं ।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **''दा'वते इस्लामी''** की तमाम मजालिस ब शुमूल **''अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या''** को **दिन ग्यारहवीं** और **रात बारहवीं** तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए और हमारे हर अ़मले ख़ैर को ज़ेवरे इख़्लास से आरास्ता फ़रमा कर **दोनों जहां की भलाई** का सबब बनाए। हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और **जन्नतुल फ़िरदौस** में **जगह** नसीब फ़रमाए ।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

रमज़ानुल मुबारक **1425** हि.

www.dawateislami.net

पेशे लफ़्ज़

मो'जिज़ात सीरते अम्बिया का बहुत ही नुमाया और रौशन बाब हैं, इन की ह़क़्क़ानिय्यत से इन्कार किसी त़रह़ मुमकिन नहीं, क़ानूने इलाही है कि उस ने जब भी ख़ल्क़ की ह़िदायत के लिये किसी नबी عَلَيْهِ السَّلَام को भेजा तो साथ ही उन्हें कोई न कोई मो'जिज़ा भी अ़त़ा फ़रमाया जिसे देख कर लोगों की अ़क़्लें दंग रह जातीं और मुन्किरीन जान तोड़ कोशिश के बा वुजूद उस की मिसाल लाने से आजिज़ रहते, जैसे ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के मुबारक अ़सा का सांप बनना और ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَيْهِ السَّلَام का मुर्दे ज़िन्दा करना वगैरा। फिर जब हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को मबऊ़स फ़रमाया तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को सब से ज़ियादा मो'जिज़ात दिये बल्कि जो मो'जिज़े दीगर अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को फ़र्दन फ़र्दन अ़त़ा हुए वोह सब और उन से भी कहीं ज़ाइद आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ाते आ़ली में जम्अ़ कर दिये। प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इन ला ता'दाद मो'जिज़ात में से एक बहुत ही मुनफ़रिद, मुमताज़ और नुमाया मो'जिज़ा **मे'राज** है। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم रात के थोड़े से हिस्से में सातों आसमान, अ़र्श व कुरसी से भी ऊपर तशरीफ़ ले गए और काइनात की सरह़दें पार कर के ला मकां की सैर फ़रमा कर वापस ज़मीन पर जल्वागर हुवे।

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मीठे मीठे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इस अ़ज़ीम मो'जिज़े का फ़ैज़ान आ़म करने के लिये तब्लीगे़ कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** की मजलिस **अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** ने इस पर काम किया और कमो बेश एक माह की क़लील मुद्दत में पायए तकमील तक पहुंचाया।

www.dawateislami.net

कुछ किताब के बारे में...

वाक़िअए **मे'राज** शरीफ़ बहुत वसीअ मौज़ूअ है और इस पर मवाद भी कसरत से मिल जाता है लेकिन मुश्किल येह पेश आती है कि इस से मुतअ़ल्लिक़ रिवायात में इख़्तिलाफ़ बहुत ज़ियादा है, ऐसे मक़ामात पर हमारी कोशिश येह रही है कि सब रिवायात बयान करने के बजाए सिर्फ़ वोह रिवायात ज़िक्र कर दी जाए जिसे उ़लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ने तरजीह़ दी है और अगर मुत़ाबक़त बयान की है तो फ़क़त़ उसे ही ज़िक्र किया जाए। किताब का मज़मून चार ह़िस्सों में बयान किया गया है : **पहला ह़िस्सा** वाक़िअए **मे'राज** पर मुश्तमिल है। **दूसरे ह़िस्से** में **मे'राज** शरीफ़ से मुतअ़ल्लिक़ आयाते क़ुरआनिय्या और इन से माख़ूज़ चन्द मदनी फूल बयान किये गए हैं। **तीसरे ह़िस्से** में **मे'राज** शरीफ़ से मुतअ़ल्लिक़ कुछ मुतफ़र्रिक़ और मुफ़ीद मा'लूमात दी गई है और **चौथा ह़िस्सा** उन मुशाहदात के बयान में है जिन्हें प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने **मे'राज** की रात मुलाह़ज़ा फ़रमाया। इस में जो भी ख़ूबियां हैं यक़ीनन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मदद व तौफ़ीक़, उस के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अ़त़ा, औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام की इ़नायत और शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना **अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की नज़रे शफ़क़त का समरा है और ख़ामियों में हमारी कोताह फ़हमी का दख़्ल है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से दुआ है कि वोह **दा'वते इस्लामी** की तमाम मजालिस ब शुमूल अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या को मज़ीद बरकतें अ़त़ा फ़रमाए। اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

अब आइये ! येह किताब ख़ुद भी पढ़िये और दूसरों को भी तरग़ीब दीजिये ...!!!

सो'बए इ़ल्माही कुतुब
अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (सरदाराबाद)

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

फ़ैज़ाने मे'राज

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : जुमुआ़ के दिन मुझ पर कसरत से दुरूद भेजो क्यूंकि येह ह़ाज़िरी का दिन है, इस में फ़िरिश्ते ह़ाज़िर होते हैं। जो कोई भी मुझ पर दुरूद भेजता है उस का दुरूद मुझ पर पेश किया जाता है जब तक कि वोह दुरूद पढ़ता रहता है। ह़ज़रते अबू दरदा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने अ़र्ज़ किया : क्या विसाल शरीफ़ के बा'द भी ? इरशाद फ़रमाया : हां विसाल के बा'द भी, **बेशक अल्लाह तआ़ला ने ज़मीन पर अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के जिस्मों को खाना ह़राम फ़रमा दिया है लिहाज़ा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नबी ज़िन्दा हैं, उन्हें रिज़्क़ दिया जाता है।**"[1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अहले इस्लाम का अ़क़ीदा है कि तमाम अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام अपनी अपनी क़ब्रों में उसी त़रह़ ब ह़याते ह़क़ीक़ी ज़िन्दा हैं जैसे दुन्या में थे।[2]

سُبْحٰنَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ ऊपर बयान की गई रिवायत से भी येही ज़ाहिर होता है।

---

(1)...سنن ابن ماجه، کتاب الجنائز، باب ذکر وفاته...الخ، ص۲۶۳، الحدیث:۱۶۳۷.

(2).....बहारे शरीअ़त, हिस्सा अव्वल, अ़क़ाइद मुतअ़ल्लिक़ए नबुव्वत, 1/58

www.dawateislami.net

जब अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की येह शान है तो सब नबियों के सरदार, महबूबे परवर दगार, हुज़ूर अहमदे मुजतबा, मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शान का आ़लम क्या होगा.....? यक़ीनन आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आज भी ह़यात हैं और अपने गुलामों की दस्तगीरी व मुश्किल कुशाई फ़रमाते हैं, मगर हमारी कमबीन (कमज़ोर) निगाहें आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को देखने से क़ासिर हैं। सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن क्या ख़ूब फ़रमाते हैं :

तू ज़िन्दा है वल्लाह, तू ज़िन्दा है वल्लाह
मेरे चश्मे आ़लम से छुप जाने वाले (1)

मो'जिज़ए मे'राज और ज़माने के ह़ालात

जब से प्यारे आक़ा, मीठे मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी नबुव्वत व रिसालत का ए'लान फ़रमाया था और लोगों को ख़ुदाए वाह़िद عَزَّوَجَلَّ की इबादत की त़रफ़ बुलाना शुरूअ़ फ़रमाया था तब से शिर्को कुफ़्र की फ़ज़ाओं में परवान चढ़ने वाले लोग आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की जान के दुश्मन हो गए थे। ह़ालांकि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुबारक ह़यात के हर हर बाब का हर हर वरक़ उन के सामने था जो शबनम से ज़ियादा पाकीज़ा, फूलों से ज़ियादा शगुफ़्ता, आफ़्ताब व माहताब से ज़ियादा रौशन व चमकदार और ज़ाहिरी बात़िनी हर क़िस्म के ऐ़ब व बुराई से पाक था, इस के बा वुजूद वोह आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को झुटलाने लगे, नबुव्वत की

(1).....ह़दाइक़े बख़्शिश, ह़िस्सा अव्वल, स. 158

www.dawateislami.net

रौशन निशानियां देख कर जब ला जवाब हो जाते और कुछ बन नहीं पड़ता तो इन्हें सह़र व जादूगरी क़रार दे देते । ज़ालिमों ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की राह में कांटे बिछाए, जिस्मे नाज़नीन पर पथ्थर बरसाए, तकालीफ़ व मसाइब के पहाड़ तोड़ डाले और त़ा'न व तश्नीअ़ का बाज़ार ख़ूब गर्म किया, इन तमाम मज़ालिम में उस वक़्त और इज़ाफ़ा हो गया जब ए'लाने नबुव्वत के दसवें साल आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के चचा अबू त़ालिब और इस के कुछ रोज़ बा'द उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना ख़दीजतुल कुब्रा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا का इन्तिक़ाल हुवा ।

रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इन तमाम रुकावटों के बा वुजूद दा'वते इस्लाम को मौक़ूफ़ (तर्क) न फ़रमाया और लोगों को कुफ़्रो शिर्क से रोकते रहे। उस नाज़ुक दौर में जो कोई भी आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की दा'वते ह़क़ को क़बूल कर के मुशर्रफ़ ब इस्लाम होता, कुफ़्फ़ार के ज़ोरो सितम का निशाना बन जाता । बह़र ह़ाल वक़्त रफ़्ता रफ़्ता गुज़रता गया और हमेशा की त़रह़ येह साल भी अपने इख़्तिताम को पहुंचा, फिर ग्यारहवां साल शुरूअ़ होता है, इस में भी त़ा'न व तश्नीअ़ और ज़ोरो सितम का बाज़ार उसी त़रह़ गर्म है और प्यारे व मह़बूब आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तमाम तर रुकावटों, परेशानियों और मुसीबतों के बा वुजूद ए'लाए कलिमतुल ह़क़ (ह़क़ की सर बुलन्दी) के लिये मसरूफ़े अ़मल हैं, करते करते रजब का मुबारक महीना आ जाता है और जब इस की सत्ताईसवीं शब होती है तो इस मुबारक रात में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने मह़बूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को वोह शरफ़ अ़त़ा फ़रमाता है कि न किसी को मिला न मिले । येह वोह ह़ैरत अंगेज़ वाक़िआ़ था कि

www.dawateislami.net

सुनने वाले दंग रह जाते हैं, अ़क़्ल को दौलते कुल समझने वालों के कुफ़्र व इन्कार में इज़ाफ़ा होता है जब कि कामिलुल ईमान ख़ुश नसीबों का ईमान और बढ़ जाता है।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस हैरत अंगेज़ वाक़िए़ को **मे'राज** कहा जाता है, क़ुरआने करीम में **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ इस का मुख़्तसर ज़िक्र करते हुवे इरशाद फ़रमाता है :

سُبْحٰنَ الَّذِیْۤ اَسْرٰى بِعَبْدِهٖ لَیْلًا مِّنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ اِلَى الْمَسْجِدِ الْاَقْصَا الَّذِیْ بٰرَكْنَا حَوْلَهٗ لِنُرِیَهٗ مِنْ اٰیٰتِنَا ؕ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِیْعُ الْبَصِیْرُ ۝۱

(پ۱۵، بنی اسرائیل: ۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *पाकी है उसे जो रातों रात अपने बन्दे को ले गया मस्जिदे ह़राम (ख़ानए का'बा) से मस्जिदे अक़्सा (बैतुल मुक़द्दस) तक जिस के गिर्दा गिर्द हम ने बरकत रखी कि हम उसे अपनी अ़ज़ीम निशानियां दिखाएं बेशक वोह सुनता देखता है।*

आइये अब इस का तफ़्सीली बयान मुलाह़ज़ा कीजिये। चुनान्चे,

वाक़िअ़ए मे'राज का बयान

बिअ़्सत के ग्यारहवें साल, हिजरत से दो साल पहले, **27** रजबुल मुरज्जब, पीर शरीफ़ की सुहानी और नूर भरी रात है और पैकरे अन्वार, तमाम नबियों के सरदार, मदीने के ताजदार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, शहनशाहे अबरार, मह़बूबे रब्बे ग़फ़्फ़ार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم नमाज़े इ़शा अदा फ़रमाने के बा'द अपनी चचाज़ाद बहन ह़ज़रते उम्मे हानी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا के घर

www.dawateislami.net

आराम फ़रमा हैं कि दौलत ख़ानए अक़्दस की मुबारक छत खुली, ह़ज़रते जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلَام नीचे ह़ाज़िर हुवे और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को ह़ज़रते उम्मे हानी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के घर से मस्जिदे ह़राम में ला कर ह़तीमे का'बा में लिटा दिया।(1)

शक़्क़े सद्र

अभी प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم यहीं (ह़तीमे का'बा में) करवट के बल लैटे हुवे थे और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर ऊंघ का असर बाक़ी था कि ह़ज़रते जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلَام फिर ह़ाज़िर हुवे, इस बार उन्हों ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सीनए पाक को हंसली की हड्डी से ले कर पेट के नीचे तक चाक किया और क़ल्बे अत़हर को बाहर निकाल लिया। फिर ईमान व ह़िकमत से भरा सोने का एक त़श्त (थाल) लाया गया, ह़ज़रते जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلَام ने प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के क़ल्बे अत़हर को आबे ज़मज़म से ग़ुस्ल दिया और फिर ईमान व ह़िकमत से भर कर वापस उस की जगह रख दिया।(2)

बुराक़ की सुवारी

इस के बा'द आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाहे अक़्दस में सुवारी के लिये गधे से बड़ा और ख़च्चर से छोटा एक सफ़ेद

(1).... मिरआतुल मनाजीह़, मे'राज का बयान, पहली फ़स्ल, 8/135
والسیرۃ النبویۃ لابن ھشام، ذکر الاسراء والمعراج، ۲/۳۸.
وفتح الباری، کتاب مناقب الانصار، باب المعراج، ۷/۲۵۶، تحت الحدیث: ۳۸۸۷.
(2)...صحیح البخاری، کتاب مناقب الانصار، باب المعراج، ص۹۷۶، الحدیث: ۳۸۸۷.
وفتح الباری، کتاب مناقب الانصار، باب المعراج، ص۲۵۶، تحت الحدیث: ۳۸۸۷، ملتقطاً

www.dawateislami.net

जानवर हाज़िर किया गया, जिसे बुराक़ कहा जाता है। इस पर ज़िन कसी हुई थी, लगाम पड़ी हुई थी और इस की रफ़्तार का आ़लम येह था कि ता ह़द्दे निगाह (जहां तक नज़र पहुंचती वहां) अपना क़दम रखता, बुलन्दी पर चड़ते हुवे इस के हाथ छोटे और पाउं लम्बे हो जाते और नीचे उतरते हुवे हाथ लम्बे और पाउं छोटे हो जाते जिस की वजह से दोनों सूरतों में इस की पीठ बराबर रहती और सुवार को किसी क़िस्म की मशक़्क़त का सामना न होता।(1)

सरवरे काइनात, शहनशाहे मौजूदात, मह़बूबे रब्बुल अर्दे वस्समावात صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जब उस पर सुवार होने का इरादा फ़रमाया और इस के क़रीब तशरीफ़ लाए तो इस ने ख़ुशी से फूले न समाते हुवे उछल कूद शुरूअ़ कर दी। येह देख कर ह़ज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام ने अपना हाथ इस की गरदन के बालों की जगह पर रखा और फ़रमाया : ऐ बुराक़ ! तुझे ह़या नहीं आती ? ख़ुदाए ज़ुल जलाल की क़सम ! हुज़ूर मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा, अह़मदे मुजतबा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से ज़ियादा इ़ज़्ज़तो करामत वाली कोई हस्ती तुझ पर सुवार नहीं हुई। येह सुन कर बुराक़ ह़या के मारे पसीने पसीने हो गया और उछल कूद ख़त्म कर के पुर सुकून हो गया।(2)

---

(1)...صحیح البخاری، کتاب مناقب الانصار، باب المعراج، ص۹۷۶، الحدیث: ۳۸۸۷.
وسنن الترمذی، کتاب تفسیر القرآن، باب ومن سورۃ بنی اسرائیل، ص۷۲۳، الحدیث: ۳۱۳۱
والمعجم الاوسط للطبرانی، ۳/۶۵، الحدیث: ۳۸۷۹، ملخصًا.
و شرح الزرقانی علی المواهب، المقصد الخامس فی تخصیصه صلی الله علیه وسلم...الخ، ۸/۷۵.

(2)...السیرۃ النبویۃ لابن هشام، ذکر الاسراء والمعراج، المجلد الاول، ۲/۳۶.
وسنن الترمذی، کتاب تفسیر القرآن، باب ومن سورۃ بنی اسرائیل، ص۷۲۳، الحدیث: ۳۱۳۱
وفتح الباری، کتاب مناقب الانصار، باب المعراج، ۷/۲۶۰، تحت الحدیث: ۳۸۸۷.

www.dawateislami.net

बैतुल मुक़द्दस की त़रफ़ रवानगी

फिर सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बुराक़ पर सुवार हुवे और इस शान से बैतुल मुक़द्दस की त़रफ़ रवाना हुवे जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा बूसैरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं :

سَرَيْتَ مِنْ حَرَمٍ لَيْلًا اِلٰى حَرَمٍ
كَمَا سَرَى الْبَدْرُ فِيْ دَاجٍ مِّنَ الظُّلَمِ[1]

या'नी आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने **मे'राज** की शब ह़रमे का'बा से ह़रमे बैतुल मुक़द्दस तक इस शान से सफ़र किया जैसे चौधवीं रात का चांद सख़्त तारीक रात के अन्धेरों में नूर बिखेरता हुवा चलता है ।

इस नूरानी सफ़र में फ़िरिश्तों के सरदार ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्राईले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام भी आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ थे ।[2]

तीन मक़ामात पर नमाज़

दौराने सफ़र एक मक़ाम पर ह़ज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام ने रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को उतर कर नमाज़ पढ़ने को कहा । आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने नमाज़ अदा फ़रमाई । ह़ज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام ने अ़र्ज़ किया : आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को मा'लूम है कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने किस जगह नमाज़ पढ़ी है ?

(1)...قصيدة البردة مع شرحها عصيدة الشهدة، الفصل العاشر في معراج...الخ، ص ٢٣٧.
(2)...صحيح البخاري، كتاب مناقب الانصار، باب المعراج، ص ٩٧٦، الحديث: ٣٨٨٧.

www.dawateislami.net

आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने त़यबा (या'नी मदीना शरीफ़) में नमाज़ पढ़ी है, इसी की त़रफ़ हिजरत होगी। फिर एक और मक़ाम पर ह़ज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को उतर कर नमाज़ पढ़ने के लिये कहा। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने नमाज़ अदा फ़रमाई। ह़ज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام अ़र्ज़ गुज़ार हुवे : आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को मा'लूम है कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने कहां नमाज़ पढ़ी है ? आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने त़ूरे सीना[1] पर नमाज़ पढ़ी है जहां अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को हम कलामी का शरफ़ अ़त़ा फ़रमाया था। फिर एक और जगह ह़ज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को उतर कर नमाज़ पढ़ने के लिये कहा। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने नमाज़ अदा फ़रमाई। इस के बा'द ह़ज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام ने अ़र्ज़ किया : आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को मा'लूम है कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने कहां नमाज़ पढ़ी है ? आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बैते लह़्म[2] में नमाज़ पढ़ी है जहां ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام की विलादत हुई थी।[3]

---

(1).....**तूर** से मुराद वोह पहाड़ है जो मिस्र और ऐला के दरमियान वाक़ेअ़ है, जिस पर ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से हम कलामी का शरफ़ मिला था, और सीना के बारे में ह़ज़रते इकरिमा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه का क़ौल है कि येह उस जगह का नाम है जहां **तूर पहाड़** वाक़ेअ़ है। [تفسیر المظهری، سورۃ التین، تحت الآیۃ: ۲، ۱۰/۲۷۳، ملتقطًا]

(2).....येह जगह बैतुल मुक़द्दस से जानिबे जुनूब छे[6] मील के फ़ासिले पर वाक़ेअ़ है। [صورۃ الارض، القسم الاول، الشام، ص۱۵۸]

(3). سنن النسائی، کتاب الصلوۃ، باب فرض الصلوۃ...الخ، ص ۸۱، الحدیث: ۴۴۸، بتغیر قلیل

www.dawateislami.net

सफ़रे बैतुल मुक़द्दस के चन्द मुशाहदात

क़ुदरत के अ़जाइबात का मुशाहदा फ़रमाते हुवे शहनशाहे मौजूदात, सय्याहे काइनात صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बैतुल मुक़द्दस की त़रफ़ रवां दवां थे कि रास्ते के किनारे एक बुढ़ी औ़रत खड़ी हुई देखी, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام से दरयाफ़्त फ़रमाया : येह कौन है? अ़र्ज़ किया : हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बढ़े चलिये। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आगे बढ़ गए, फिर किसी ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को पुकार कर कहा : هَلُمَّ يَا مُحَمَّد या'नी ऐ मुह़म्मद (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) इधर आइये। लेकिन ह़ज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام ने फिर वोही अ़र्ज़ किया कि हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बढ़े चलिये। चुनान्चे, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم रुके बिग़ैर आगे बढ़ गए फिर एक जमाअ़त पर गुज़र हुवा। उन्हों ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को सलाम अ़र्ज़ करते हुवे कहा :

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا اَوَّلُ، اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا آخِرُ، اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا حَاشِرُ

या'नी ऐ अव्वल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आप पर सलामती हो, ऐ आख़िर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आप पर सलामती हो। ऐ ह़ाशिर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आप पर सलामती हो। ह़ज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام ने अ़र्ज़ किया : हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! इन के सलाम के जवाब मर्ह़मत फ़रमाइये। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जवाब दिया। फिर

www.dawateislami.net

एक दूसरी जमाअ़त पर गुज़र हुवा वहां भी ऐसे ही हुवा, फिर तीसरी जमाअ़त पर गुज़र हुवा वहां भी ऐसे ही हुवा।

बा'द में ह़ज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में अ़र्ज़ किया : वोह बुढ़िया जिसे आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने रास्ते के किनारे खड़ी मुलाह़ज़ा फ़रमाया था वोह दुन्या थी इस की सिर्फ़ इतनी उ़म्र बाक़ी रह गई है जितनी उस बुढ़िया की है, जिस ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अपनी त़रफ़ माइल करना चाहा था वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का दुश्मन इब्लीस (शैत़ान) था, चाहता था कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उस की त़रफ़ माइल हो जाएं और जिन्हों ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को सलाम अ़र्ज़ किया था वोह ह़ज़रते इब्राहीम, ह़ज़रते मूसा और ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام थे।[1]

ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام नमाज़ में

सह़ीह़ मुस्लिम शरीफ़ की रिवायत में है कि जब आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का गुज़र ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की क़ब्रे मुबारक के पास से हुवा जो रैत के सुर्ख़ टीले के पास वाक़ेअ़ है, तो वोह अपनी क़ब्र में खड़े नमाज़ पढ़ रहे थे।[2]

---

(1)...دلائل النبوۃ للبیہقی، جماع ابواب المبعث، باب الدلیل علی...بالافق الاعلٰی، ۲/۳۶۲.

(2)...صحیح مسلم، کتاب الفضائل، باب من فضائل...الخ، ص۹۲۷، الحدیث: ۲۳۷۵.

www.dawateislami.net

बैतुल मुक़द्दस आमद

इस त़रह़ इन अ़जाइबाते कुदरत को मुलाह़ज़ा फ़रमाते और अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से मुलाक़ातें फ़रमाते सरवरे काइनात, शहनशाहे मौजूदात صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उस मुक़द्दस शहर में तशरीफ़ ले आए जहां मस्जिदे अक़्सा वाक़ेअ़ है, शहर में आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उस के बाबे यमानी से दाख़िल हुवे फिर मस्जिद की जानिब चले और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बुराक़ को दरवाज़ए मस्जिद में मौजूद उस कड़े के साथ बांधा जिस से पहले के अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام बांधा करते थे। बा'द में ह़ज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام उसे मस्जिद के इह़ाते में ले आए और अपनी उंगली के ज़रीए एक पथ्थर में सुराख़ कर के उस के साथ बांध दिया।[1]

अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की इमामत

प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शाने आ़ली के इज़्हार के लिये बैतुल मुक़द्दस में तमाम अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को जम्अ़ किया गया था। जब आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم यहां तशरीफ़ लाए तो इन सब ह़ज़रात ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को देख कर ख़ुश आमदीद कहा और नमाज़ के वक़्त सब ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इमामत के लिये आगे किया। फिर ह़ज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام ने दस्ते मुबारक पकड़ कर आगे बढ़ा दिया और

(1)...السیرۃ الحلبیۃ، باب ذکر الاسراء والمعراج...الخ، ۱/۵۲۳، ملتقطاً.
وشرح الزرقانی علی المواھب، المقصد الخامس...الخ، ۸/۱۰۳، ملخصًا.

www.dawateislami.net

आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने तमाम अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की इमामत फ़रमाई ।[1]

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा बूसैरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं :

ع وَقَدَّمَتْكَ جَمِيْعُ الْاَنْبِيَاءِ بِهَا
وَالرُّسُلِ تَقْدِيْمَ مَخْدُوْمٍ عَلٰى خَدَمِ[2]

या'नी बैतुल मुक़द्दस में तमाम अम्बिया व रुसुल عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को आगे किया जैसे मख़्दूम अपने ख़ादिमों के आगे होता है ।

سُبْحٰنَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ क्या ख़ूब नमाज़ है कि तमाम अम्बिया और रसूल عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام मुक़्तदी हैं, इमामुल अम्बिया صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इमाम हैं और पहला क़िब्ला जाए नमाज़ है, यक़ीनन काइनात में ऐसी नमाज़ कभी नहीं हुई, फ़लक़ ने ऐसा नज़ारा कभी नहीं देखा । बह्र ह़ाल आज शबे असरा के दुल्हा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अव्वल और आख़िर होने का उ़क़्दा भी खुल गया, इस के राज़ से भी पर्दा उठ गया और मा'ना रोज़े रोशन की त़रह़ वाज़ेह़ हो गए क्यूंकि आज आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जो कि सब से आख़िरी रसूल हैं, पहले के अम्बिया और रसूलों की इमामत फ़रमा रहे हैं । इसी राज़ को बयान करते हुवे आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं :

(1)...سنن النسائی، کتاب الصلاۃ، باب فرض الصلاۃ...الخ، ص ۸۱، الحدیث: ٤٤٨.
والمعجم الاوسط للطبرانی، باب العین، من اسمہ علی، ۳/ ١٦٥، الحدیث: ٣٨٧٩.
والسیرۃ الحلبیۃ، باب ذکر الاسراء والمعراج...الخ، ١/ ٥٢٥.

(2)...قصیدۃ البردۃ مع شرحہا عصیدۃ الشہدۃ، الفصل العاشر فی معراجہ...الخ، ص ٢٤٠.

www.dawateislami.net

नमाज़े अक़्सा में था येही सिर्र, इयां हों मानिये अव्वल आख़िर
कि दस्तबस्ता हैं पीछे हाज़िर, जो सल्तनत आगे कर गए थे (1)

दूध और शराब के पियाले

बुख़ारी शरीफ़ की रिवायत के मुताबिक़ यहां आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास दूध और शराब के दो पियाले लाए गए, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन्हें मुलाहज़ा फ़रमाया फिर दूध का पियाला क़बूल फ़रमा लिया। इस पर हज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام कहने लगे : اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ هَدَاكَ لِلْفِطْرَةِ لَوْ اَخَذْتَ الْخَمْرَ غَوَتْ اُمَّتُكَ "या'नी तमाम ता'रीफ़ें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये जिस ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की फ़ित्रत की जानिब रहनुमाई फ़रमाई, अगर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم शराब का पियाला क़बूल फ़रमाते तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत गुमराह हो जाती।" (2)

अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के ख़ुत्बे

बैतुल मुक़द्दस की इन नूरानी और रह़मत भरी फ़ज़ाओं में बा'ज़ अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने ख़ुत्बे भी फ़रमाए जिस में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़म्द और अपने ऊपर उस की बे पायां रह़मतों और ने'मतों का तज़किरा फ़रमाया, चुनान्चे सब से पहले ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने कहा :

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ اتَّخَذَ اِبْرَاهِيْمَ خَلِيْلًا وَّاَعْطَانِیْ مُلْكًا عَظِيْمًا وَجَعَلَنِیْ
اُمَّةً قَانِتًا لِّلّٰهِ يُؤْتَمُّ بِیْ وَاَنْقَذَنِیْ مِنَ النَّارِ وَجَعَلَهَا عَلَیَّ بَرْدًا وَّسَلَامًا

(1).....ह़दाइक़े बख़्शिश, ह़िस्सा अव्वल, स. 232

(2)...صحیح البخاری، ص ۱۱۸۱، الحدیث: ۴۷۰۹.

www.dawateislami.net

"या'नी तमाम ता'रीफ़ें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये जिस ने मुझे ख़लील बनाया, मुझे अ़ज़ीम बादशाहत अ़ता फ़रमाई, मुझे इमाम और अपना फ़रमां बरदार बन्दा बनाया, मेरी इक़्तिदा व पैरवी की जाती है, मुझे आग से नजात अ़ता फ़रमाई और इसे मुझ पर ठन्डी और सलामती वाली कर दिया।"

फिर ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام कहने लगे :

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ كَلَّمَنِیْ تَكْلِیْمًا وَّاصْطَفَانِیْ بِرِسَالَتِهٖ وَكَلِمَاتِهٖ وَقَرَّبَنِیْ اِلَیْهِ نَجِیًّا وَاَنْزَلَ عَلَیَّ التَّوْرَاةَ وَجَعَلَ هَلَاكَ اٰلِ فِرْعَوْنَ عَلٰی یَدِیْ وَنَجّٰی بَنِیْ اِسْرَائِیْلَ عَلٰی یَدِیْ

"या'नी तमाम ता'रीफ़ें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये जिस ने मुझ से कलाम फ़रमाया, मुझे अपनी रिसालत और कलिमात के लिये मुन्तख़ब फ़रमाया, मुझे राज़ कहने को क़रीब किया, मुझ पर तौरात नाज़िल फ़रमाई, मेरे हाथ पर फ़िरऔ़न को हलाक फ़रमाया और मेरे ही हाथ पर बनी इस्राईल को नजात अ़ता फ़रमाई।

इन के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने कहा :

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ خَوَّلَنِیْ مُلْكًا وَّاَنْزَلَ عَلَیَّ الزَّبُوْرَ وَاَلَانَ الْحَدِیْدَ وَسَخَّرَ لِیَ الطَّیْرَ وَالْجِبَالَ وَاٰتَانِیَ الْحِكْمَةَ وَفَصْلَ الْخِطَابِ

"या'नी तमाम ता'रीफ़ें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये जिस ने मुझे बादशाहत अ़ता फ़रमाई, मुझ पर ज़बूर नाज़िल फ़रमाई, लोहे को मेरे लिये नर्म फ़रमा दिया, मेरे लिये परन्दों और पहाड़ों को मुसख़्ख़र फ़रमा दिया, मुझे ह़िक्मत और फ़स्ले ख़िताब (ह़क़ व बात़िल में फ़र्क़ कर के फ़ैसला करने का इ़ल्म) अ़ता फ़रमाया।"

www.dawateislami.net

फिर ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام कहने लगे :

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ سَخَّرَ لِیَ الرِّیَاحَ وَالْجِنَّ وَالْاِنْسَ وَسَخَّرَ لِیَ الشَّیَاطِیْنَ یَعْمَلُوْنَ مَا شِئْتُ مِنْ مَّحَارِیْبَ وَتَمَاثِیْلَ وَعَلَّمَنِیْ مَنْطِقَ الطَّیْرِ وَكُلَّ شَیْءٍ وَّاَسَالَ لِیْ عَیْنَ الْقِطْرِ وَاَعْطَانِیْ مُلْكًا عَظِیْمًا لَّا یَنْۢبَغِیْ لِاَحَدٍ مِّنْۢ بَعْدِیْ

"या'नी तमाम ता'रीफ़ें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये जिस ने मेरे लिये हवाओं, जिन्नों और इन्सानों को मुसख़्ख़र फ़रमा दिया, शयात़ीन को भी मुसख़्ख़र फ़रमा दिया और अब येह वोह काम करते हैं जो मैं इन से चाहता हूं मसलन बुलन्दो बाला मकानात ता'मीर करना और तस्वीरें बनाना मुझे परन्दों की बोली और हर चीज़ सिखाई, मेरे लिये पिघले हुवे तांबे का चश्मा बहाया और मुझे ऐसी बादशाहत अ़त़ा फ़रमाई जो मेरे बा'द किसी के लिये नहीं।"

इन के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने कहा :

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ عَلَّمَنِیَ التَّوْرَاةَ وَالْاِنْجِیْلَ وَجَعَلَنِیْ اُبْرِئُ الْاَكْمَهَ وَالْاَبْرَصَ وَاُحْیِی الْمَوْتٰی بِاِذْنِهٖ وَرَفَعَنِیْ وَطَهَّرَنِیْ مِنَ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا وَاَعَاذَنِیْ وَاُمِّیْ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ فَلَمْ یَكُنْ لِّلشَّیْطٰنِ عَلَیْهَا السَّبِیْلُ

"या'नी तमाम ता'रीफ़ें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये जिस ने मुझे तौरात और इन्जील सिखाई, मुझे पैदाइशी अन्धे और कोढ़ के मरज़ वाले को तन्दुरुस्त करने वाला और अपने इ़ज़्न से मुर्दों को ज़िन्दा करने वाला बनाया, मुझे आस्मान पर उठाया, मुझे काफ़िरों से पाक किया, मुझे और मेरी मां को शैत़ान मर्दूद से पनाह अ़त़ा फ़रमाई जिस की वजह से उसे मेरी मां पर कोई राह नहीं।"

www.dawateislami.net

जब इन सब ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ह़म्दो सना और अपने ऊपर उस की बे पायां रह़मतों का बयान कर लिया तो सब के बा'द तमाम नबियों के सरदार, अह़मदे मुख़्तार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ख़ुत़बा दिया, ख़ुत़बे से पहले आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से फ़रमाया कि तुम सब ने अपने रब عَزَّوَجَلَّ की सना बयान की है और अब मैं रब عَزَّوَجَلَّ की ता'रीफ़ व सना बयान करता हूं, फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस त़रह़ ख़ुत़बा पढ़ा :

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ اَرْسَلَنِیْ رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِیْنَ وَكَافَّةً لِّلنَّاسِ بَشِیْرًا وَّنَذِیْرًا وَّاَنْزَلَ عَلَیَّ الْفُرْقَانَ فِیْهِ تِبْیَانُ كُلِّ شَیْءٍ وَّجَعَلَ اُمَّتِیْ خَیْرَ اُمَّةٍ اُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ وَجَعَلَ اُمَّتِیْ اُمَّةً وَّسَطًا وَّجَعَلَ اُمَّتِیْ هُمُ الْاَوَّلُوْنَ وَهُمُ الْاٰخِرُوْنَ وَشَرَحَ صَدْرِیْ وَوَضَعَ عَنِّیْ وِزْرِیْ وَرَفَعَ لِیْ ذِكْرِیْ وَجَعَلَنِیْ فَاتِحًا وَّخَاتِمًا

"या'नी तमाम ता'रीफ़ें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये जिस ने मुझे तमाम जहानों के लिये रह़मत और तमाम इन्सानों के लिये ख़ुश ख़बरी सुनाने वाला और डर सुनाने वाला बना कर भेजा, मुझ पर ह़क़ व बात़िल में फ़र्क़ करने वाली किताब (क़ुरआन) को नाज़िल फ़रमाया जिस में हर शै का रोशन बयान है, मेरी उम्मत को लोगों में ज़ाहिर होने वाली सब उम्मतों में बेहतरीन उम्मत बनाया, दरमियानी उम्मत बनाया और उन्हें अव्वल भी बनाया और आख़िर भी, मेरे लिये मेरा सीना कुशादा फ़रमाया, मुझ से बोझ को दूर फ़रमाया, मेरे ज़िक्र को बुलन्द फ़रमाया और मुझे फ़ातेह़ और ख़ातिम बनाया।"

www.dawateislami.net

येह सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया : بِهٰذَا فَضَلَكُمْ مُحَمَّدٌ या'नी इसी वजह से **मुह़म्मद** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने तुम पर फ़ज़ीलत पाई ।''(1)

سُبْحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ हमारे प्यारे नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शान किस क़दर आ़ली और बुलन्द है कि ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام भी आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शान बयान फ़रमाते और सब अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की फ़ज़ीलत का ए'लान फ़रमाते हैं, फिर हम क्यूं न कहें कि :

सब से औला व आ'ला हमारा नबी
सब से बाला व वाला हमारा नबी
ख़ल्क़ से औलिया, औलिया से रुसुल
और रसूलों से आ'ला हमारा नबी
मुल्के कौनैन में अम्बिया ताजदार
ताजदारों का आक़ा हमारा नबी (2)

आस्मान की त़रफ़ उ़रूज

पहला आस्मान

बैतुल मुक़द्दस के मुआ़मलात से फ़ारिग़ होने के बा'द प्यारे प्यारे आक़ा, मीठे मीठे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आस्मान की

---

(1)...دلائل النبوۃ للبیھقی، جماع ابواب المبعث، باب الدلیل...بالافق الاعلٰی، ۲/۴۰۰.
(2).....ह़दाइक़े बख़्शिश, ह़िस्सा अव्वल, स. 138, मुलतक़त़न.

www.dawateislami.net

त़रफ़ सफ़र शुरूअ़ फ़रमाया और हर बुलन्दी को पस्त फ़रमाते हुवे तेज़ी से आस्मान की त़रफ़ बढ़े चले गए, आन की आन में पहला आस्मान आ गया। रिवायत में है कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इस के एक दरवाज़े पर तशरीफ़ लाए जिसे **बाबुल ह़फ़ज़ह** कहा जाता है, इस पर **इस्माईल** नामी एक फ़िरिश्ता मुक़र्रर है। ह़ज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام ने दरवाज़ा खुलवाना चाहा। पूछा गया : कौन है ? ह़ज़रते जिब्रीले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام ने जवाब दिया : जिब्रील हूं। पूछा गया : आप के साथ कौन हैं ? जवाब दिया : मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم। पूछा गया : क्या इन्हें बुलाया गया है ? जवाब दिया : हां। इस पर कहा गया : مَرْحَبًا بِهٖ فَنِعْمَ الْمَجِیْءُ جَاءَ या'नी ख़ुश आमदीद ! क्या ही अच्छा आने वाला आया है !!!" फिर दरवाज़ा खोल दिया। जब आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم दरवाज़े से गुज़र कर आस्मान के ऊपर तशरीफ़ लाए तो देखा कि ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام तशरीफ़ फ़रमा हैं। ह़ज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام ने अ़र्ज़ किया : येह आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के वालिद ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام हैं, इन्हें सलाम फ़रमाइये। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने **सलाम** कहा। उन्हों ने **सलाम** का जवाब दिया, फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ख़ुश आमदीद करते हुवे कहने लगे : مَرْحَبًا بِالْاِبْنِ الصَّالِحِ وَالنَّبِیِّ الصَّالِحِ "या'नी सालेह़ बेटे और सालेह़ नबी को ख़ुश आमदीद।"[1]

---

(1)...صحیح البخاری، کتاب مناقب الانصار، باب المعراج، ص۹۷۶، الحدیث: ۳۸۸۷.
وعمدۃ القاری، کتاب مناقب الانصار، باب المعراج، ۱۱/۶۰۳، تحت الحدیث: ۳۸۸۷.

www.dawateislami.net

जन्नती व जहन्नमी अरवाह़

सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के दाएं बाएं कुछ लोगों को मुलाह़ज़ा फ़रमाया, जब आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام अपनी दाईं जानिब देखते तो हंस पड़ते हैं और जब बाईं जानिब देखते तो रो पड़ते हैं । ह़ज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام ने अ़र्ज़ किया : इन के दाईं और बाईं जानिब जो येह सूरतें हैं येह इन की अवलाद हैं, दाईं जानिब वाले जन्नती हैं और बाईं जानिब वाले जहन्नमी हैं ।[1]

दूसरा आस्मान

इस के बा'द प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दूसरे आस्मान की त़रफ़ सफ़र शुरूअ़ फ़रमाया, आन की आन में दूसरा आस्मान भी आ गया और यहां भी वोही मुआ़मला पेश आया कि ह़ज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام ने दरवाज़ा खुलवाना चाहा । पूछा गया : कौन है ? ह़ज़रते जिब्रीले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام ने जवाब दिया : जिब्रील हूं । पूछा गया : आप के साथ कौन हैं ? जवाब दिया : मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم । पूछा गया : क्या इन्हें बुलाया गया है ? जवाब दिया : हां । इस पर कहा गया : مَرْحَبًا بِهٖ فَنِعْمَ الْمَجِيْءُ جَاءَ "या'नी ख़ुश आमदीद ! क्या ही अच्छा आने वाला आया है !!!" फिर दरवाज़ा खोल दिया । जब आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم दरवाज़े से गुज़र कर

(1)...صحیح البخاری، کتاب الصلاۃ، باب کیف فرضت...الخ، ص ۱۶۱، الحدیث: ۳۴۹.

www.dawateislami.net

आस्मान के ऊपर तशरीफ़ लाए तो ह़ज़रते यह़्या और ह़ज़रते ईसा علیهما الصلوٰة والسلام को मुलाह़ज़ा फ़रमाया, येह दोनों ख़ालाज़ाद भाई हैं। ह़ज़रते जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلَام ने अ़र्ज़ किया : येह ह़ज़रते यह़्या और ह़ज़रते ईसा علیهما الصلوٰة والسلام हैं, इन्हें सलाम फ़रमाइये । आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने **सलाम** कहा। उन्हों ने सलाम का जवाब दिया फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को ख़ुश आमदीद करते हुवे कहने लगे : مَرْحَبًا بِالْاَخِ الصَّالِحِ وَ النَّبِیِّ الصَّالِحِ "या'नी सालेह़ भाई और सालेह़ नबी को ख़ुश आमदीद ।"(1)

तीसरा आस्मान

फिर तीसरे आस्मान की त़रफ़ सफ़र शुरूअ़ हुवा, जब वहां पहुंचे ह़ज़रते जिब्रीले अमीन عَلَیْہِ السَّلَام ने दरवाज़ा खुलवाना चाहा। पूछा गया : कौन है ? फ़रमाया : जिब्रील। पूछा गया : आप के साथ कौन हैं ? फ़रमाया : मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم । पूछा गया : क्या इन्हें बुलाया गया है ? फ़रमाया : हां। इस पर कहा गया : مَرْحَبًا بِهٖ فَنِعْمَ الْمَجِیْءُ جَاءَ "या'नी ख़ुश आमदीद ! क्या ही अच्छा आने वाला आया है !!!" फिर दरवाज़ा खोल दिया गया। दरवाज़े से गुज़र कर जब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आस्मान के ऊपर पहुंचे तो ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को मुलाह़ज़ा फ़रमाया। ह़ज़रते जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلَام ने अ़र्ज़ किया : येह ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام हैं इन्हें **सलाम** फ़रमाइये । आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने **सलाम** कहा ।

(1)...صحیح البخاری، کتاب مناقب الانصار، باب المعراج، ص۹۷۶، الحدیث:۳۷۸۷.

www.dawateislami.net

उन्हों ने सलाम का जवाब दिया और फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को खुश आमदीद करते हुवे कहने लगे : مَرْحَبًا بِالْاَخِ الصَّالِحِ وَالنَّبِيِّ الصَّالِحِ "या'नी सालेह़ भाई और सालेह़ नबी को खुश आमदीद।"(1)

चौथा आस्मान

फिर चौथे आस्मान की त़रफ़ सफ़र शुरूअ़ हुवा, वहां पहुंच कर भी येही मुआ़मला हुवा कि ह़ज़रते जिब्रीले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام ने दरवाज़ा खुलवाना चाहा। पूछा गया : कौन है? फ़रमाया : जिब्रील। पूछा गया : आप के साथ कौन हैं? फ़रमाया : मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم। पूछा गया : क्या इन्हें बुलाया गया है? फ़रमाया : हां। इस पर कहा गया : مَرْحَبًا بِهٖ فَنِعْمَ الْمَجِيْءُ جَاءَ "या'नी खुश आमदीद! क्या ही अच्छा आने वाला आया है!!!" और फिर दरवाज़ा खोल दिया गया। इस से गुज़र कर जब प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आस्मान के ऊपर तशरीफ़ लाए तो ह़ज़रते इदरीस عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को मुलाह़ज़ा फ़रमाया। ह़ज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام ने अ़र्ज़ किया : येह ह़ज़रते इदरीस عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام हैं, इन्हें **सलाम** फ़रमाइये। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने **सलाम** कहा। उन्हों ने सलाम का जवाब दिया और फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को खुश आमदीद करते हुवे कहा : مَرْحَبًا بِالْاَخِ الصَّالِحِ وَالنَّبِيِّ الصَّالِحِ "या'नी सालेह़ भाई और सालेह़ नबी को खुश आमदीद।"(2)

(1)...صحیح البخاری، کتاب مناقب الانصار، باب المعراج، ص۹۷۶، الحدیث:۳۸۸۷.

(2)...صحیح البخاری، کتاب مناقب الانصار، باب المعراج، ص۹۷۷، الحدیث:۳۸۸۷.

www.dawateislami.net

पांचवां आस्मान

इस के बा'द प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने पांचवें आस्मान की त़रफ़ सफ़र का आग़ाज़ फ़रमाया, यहां पहुंच कर भी ह़ज़रते जिब्रीले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام ने दरवाज़ा खुलवाना चाहा। पूछा गया : कौन है ? फ़रमाया : जिब्रील। पूछा गया : आप के साथ कौन हैं ? फ़रमाया : मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم। पूछा गया : क्या इन्हें बुलाया गया है ? फ़रमाया : हां। इस पर कहा गया : مَرْحَبًا بِهٖ فَنِعْمَ الْمَجِيْءُ جَاءَ "या'नी ख़ुश आमदीद ! क्या ही अच्छा आने वाला आया है !!!" फिर दरवाज़ा खोल दिया। सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम, صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم दरवाज़े से गुज़र कर आस्मान के ऊपर तशरीफ़ लाए और ह़ज़रते हारून عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को मुलाह़ज़ा फ़रमाया। ह़ज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام ने अ़र्ज़ किया : येह ह़ज़रते हारून عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام हैं, इन्हें सलाम फ़रमाइये। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सलाम कहां, उन्हों ने सलाम का जवाब दिया और फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ख़ुश आमदीद करते हुवे कहा : مَرْحَبًا بِالْاَخِ الصَّالِحِ وَالنَّبِيِّ الصَّالِحِ "या'नी सालेह़ भाई और सालेह़ नबीको ख़ुश आमदीद।"[1]

छटा आस्मान

पांचवें आस्मान पर ह़ज़रते सय्यिदुना हारून عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से मुलाक़ात फ़रमाने के बा'द प्यारे आक़ा, मीठे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

(1)...صحیح البخاری، کتاب مناقب الانصار، باب المعراج، ص ۹۷۷، الحدیث: ۳۸۸۷.

www.dawateislami.net

छटे आस्मान पर तशरीफ़ लाए। ह़ज़रते जिब्रीले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام ने दरवाज़ा खुलवाना चाहा। पूछा गया : कौन है ? फ़रमाया : जिब्रील। फिर पूछा गया : आप के साथ कौन हैं ? फ़रमाया : मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم। पूछा गया : क्या इन्हें बुलाया गया है ? फ़रमाया : हां। इस पर कहा गया : مَرْحَبًا بِهٖ فَنِعْمَ الْمَجِيْءُ جَاءَ "या'नी खुश आमदीद ! क्या ही अच्छा आने वाला आया है !!!" फिर दरवाज़ा खोल दिया गया। सरकारे आ़ली वक़ार, मह़बूबे रब्बे ग़फ़्फ़ार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم दरवाज़े से गुज़र कर आस्मान के ऊपर तशरीफ़ लाए और यहां ह़ज़रते मूसा कलीमुल्लाह عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को मुलाह़ज़ा फ़रमाया। ह़ज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام अ़र्ज़ गुज़ार हुवे : येह ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام हैं, इन्हें **सलाम** फ़रमाइये। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने **सलाम** कहा। उन्हों ने सलाम का जवाब दिया फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को खुश आमदीद करते हुवे कहा : مَرْحَبًا بِالْاَخِ الصَّالِحِ وَ النَّبِيِّ الصَّالِحِ "या'नी सालेह़ भाई और सालेह़ नबी को खुश आमदीद।" ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से मुलाक़ात फ़रमाने के बा'द जब शाहे आदमो बनी आदम, रसूले मोह़तशम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आगे बढ़े तो ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام गिर्या फ़रमाने लगे। दरयाफ़्त किया गया : आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को किस चीज़ ने रुलाया ? फ़रमाया : मुझे इस बात ने रुलाया है कि एक नौजवान जो मेरे बा'द मबऊ़स हुवे उन की उम्मत में से दाख़िले जन्नत होने वाले लोगों की ता'दाद मेरी उम्मत में से दाख़िले जन्नत होने वालों से ज़ियादा होगी।[1]

(1)...صحیح البخاری، کتاب مناقب الانصار، باب المعراج، ص۹۷۷، الحدیث:۳۸۸۷.

www.dawateislami.net

सातवां आस्मान

फिर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सातवें आस्मान पर तशरीफ़ लाए, यहां भी हज़रते जिब्रीले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام ने दरवाज़ा खुलवाना चाहा। पूछा गया : कौन है ? फ़रमाया : जिब्रील। पूछा गया : आप के साथ कौन हैं ? फ़रमाया : मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم। पूछा गया : क्या इन्हें बुलाया गया है ? फ़रमाया : हां। इस पर कहा गया : مَرْحَبًا بِهٖ فَنِعْمَ الْمَجِيْءُ جَاءَ "या'नी खुश आमदीद ! क्या ही अच्छा आने वाला आया है !!!" फिर दरवाज़ा खोल दिया। जब प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم दरवाज़े से गुज़र कर आस्मान के ऊपर तशरीफ़ लाए तो हज़रते इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को मुलाहज़ा फ़रमाया, आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام **बैतुल मा'मूर**(1) से टेक लगाए तशरीफ़ फ़रमा थे। हज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام ने अ़र्ज़ किया : येह आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के वालिद हैं, इन्हें **सलाम** कहिये। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने **सलाम** कहा, उन्हों ने सलाम का जवाब दिया। फिर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को खुश आमदीद करते हुवे कहा : مَرْحَبًا بِالْاِبْنِ الصَّالِحِ وَالنَّبِيِّ الصَّالِحِ "या'नी सालेह बेटे और सालेह नबी को खुश आमदीद।"(2)

---

(1).....**बैतुल मा'मूर** फ़िरिश्तों का क़िब्ला है, का'बए मुअ़ज़्ज़मा के मुक़ाबिल सातवें आस्मान के ऊपर है, बा'ज़ रिवायात में है कि हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने वहां फ़िरिश्तों को नमाज़ पढ़ाई जैसे बैतुल मुक़द्दस में नबियों को पढ़ाई थी।

(मिरआतुल मनाजीह़, **मे'राज** का बयान, पहली फ़स्ल, **8/144**)

(2).....صحيح البخاري، كتاب مناقب الانصار، باب المعراج، ص ٩٧٧، الحديث: ٣٨٨٧.
وصحيح مسلم، كتاب الايمان، باب الاسراء...الخ، ص ٧٩، الحديث: ١٦٢.

www.dawateislami.net

सिद्रतुल मुन्तहा

सातवें आस्मान पर ह़ज़रते इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से मुलाक़ात फ़रमाने के बा'द सय्यिदे वाला तबार, दो आ़लम के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **सिद्रतुल मुन्तहा** के पास तशरीफ़ लाए। येह एक नूरानी बैरी का दरख़्त है, जिस की जड़ छटे आस्मान पर और शाख़ें सातवें आस्मान के ऊपर हैं, इस के फल मक़ामे हजर के मटकों की त़रह़ बड़े बड़े और पत्ते हाथी के कानों की त़रह़ हैं। ह़ज़रते जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلَام ने अ़र्ज़ किया : येह **सिद्रतुल मुन्तहा** है। प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने यहां चार नह्रें मुलाह़ज़ा फ़रमाईं जो **सिद्रतुल मुन्तहा** की जड़ से निकलती थीं, इन में से दो तो **ज़ाहिर** थीं और दो **ख़ुफ़्या**। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلَام से दरयाफ़्त फ़रमाया : ऐ जिब्राईल ! येह नह्रें कैसी हैं ? अ़र्ज़ किया : ख़ुफ़्या नह्रें तो **जन्नत** की हैं[1] और ज़ाहिरी नह्रें **नील** और **फ़ुरात** हैं।[2]

मक़ामे मुस्तवा

जब प्यारे आक़ा, मीठे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सिद्रतुल मुन्तहा से आगे बढ़े तो ह़ज़रते जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلَام वहीं ठहर गए और

---

(1).....येह जन्नती नह्रें **कौसर** और **सल्सबील** हैं या **कौसर** और **नह्रे रह़मत**। (मिरआतुल मनाजीह़, **मे'राज** का बयान, पहली फ़स्ल, **8/144**)

(2).....صحیح البخاری، کتاب مناقب الانصار، باب المعراج، ص۹۷۶، الحدیث: ۳۸۸۷.
وصحیح مسلم، کتاب الایمان، باب الاسراء...الخ، ص۸۱، الحدیث: ۱۶۴.
ومرآۃ المناجیح، معراج کا بیان، پہلی فصل، ۸/۱۴۳.

www.dawateislami.net

आगे जाने से **मा'ज़िरत ख़्वाह** हुवे। फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आगे बढ़े और बुलन्दी की त़रफ़ सफ़र फ़रमाते हुवे एक मक़ाम पर तशरीफ़ लाए जिसे **मुस्तवा** कहा जाता है, यहां आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने क़लमों की चर चराहट समाअ़त फ़रमाई। येह वोह क़लम थे जिन से फ़िरिश्ते रोज़ाना के अह़कामे इलाहिय्या लिखते हैं और **लौह़े महफ़ूज़** से एक साल के वाक़िआ़त अलग अलग सह़ीफ़ों में नक़्ल करते हैं और फिर येह सह़ीफ़े शा'बान की पन्दरहवीं शब मुतअ़ल्लिक़ा हुक्काम फ़िरिश्तों के ह़वाले कर दिये जाते हैं।[1]

अ़र्शे उ़ला से भी ऊपर

फिर मुस्तवा से आगे बढ़े तो **अ़र्श** आया, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उस से भी ऊपर तशरीफ़ लाए और फिर वहां पहुंचे जहां ख़ुद "**कहां**" और "**कब**" भी ख़त्म हो चुके थे क्यूंकि येह अल्फ़ाज़ जगह और ज़माने के लिये बोले जाते हैं और जहां हमारे हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم रौनक़ अफ़रोज़ हुवे वहां जगह थी न ज़माना। इसी वजह से इसे ला मकां कहा जाता है।

सरागे़ ऐनो मता कहां था, निशाने कैफ़ो इला कहां था
न कोई राही न कोई साथी न संगे मन्ज़िल न मरह़ले थे[2]

---

(1)...المواهب اللدنية، المقصد الخامس، ٢/٣٨١.
وصحيح البخاري، كتاب الصلاة، باب كيف فرضت...الخ، ص١٦١، الحديث: ٣٤٩.
व मिरआतुल मनाजीह़, मे'राज का बयान, पहली फ़स्ल, **8/155**

(2).....ह़दाइक़े बख़्शिश, ह़िस्सा अव्वल, स. **235**

www.dawateislami.net

यहां अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ ने अपने प्यारे मह़बूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को वोह कु़र्बे ख़ास अ़ता फ़रमाया कि न किसी को मिला न मिले। **ह़दीस शरीफ़** में इस के बयान के लिये क़ा-ब क़ौसैन के अल्फ़ाज़ इस्ति'माल किये गए हैं।(1) जिन्हें उस वक़्त इस्ति'माल किया जाता है जब इन्तिहाई कु़र्ब और नज़्दीकी बताना मक़्सूद होता है।

दीदारे इलाही और हम कलामी का शरफ़

सरकारे आ़ली वक़ार, मह़बूबे रब्बुल इबाद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बेदारी की ह़ालत में सर की आंखों से अपने प्यारे रब तबारक व तआ़ला का दीदार किया कि पर्दा था न कोई ह़िजाब, ज़माना था न कोई मकान, फ़िरिश्ता था न कोई इन्सान, और बे वासित़ा कलाम का शरफ़ भी ह़ासिल किया।(2)

ला मकां की वह़ी

वोह वह़ी क्या थी जो रब तआ़ला ने इस कु़र्बे ख़ास में बन्दए ख़ास की त़रफ़ फ़रमाई और क्या राज़ नियाज़ हुवे, बुख़ारी शरीफ़ की ह़दीस में इसे इन अल्फ़ाज़ में बयान किया गया है : فَاَوْحٰۤى اِلٰى عَبْدِهٖ مَاۤ اَوْحٰى या'नी रब ने अपने बन्दे की त़रफ़ जो वह़ी की वोह की।" अकसर मुह़क़्क़िक़ीन फ़रमाते हैं कि उस वह़ी का मज़्मून किसी

(1)...صحیح البخاری، کتاب التوحید، باب قولہ تعالٰی: وکلم اللّٰہ...الخ، ص ۱۸۱۱، الحدیث: ۷۵۱۷

(2)..... रसूले पाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अ़र्श के ऊपर तशरीफ़ लाने और बे ह़िजाब रब तआ़ला का दीदार करने से मुतअ़ल्लिक़ तफ़्सीली मा'लूमात के लिये फ़तावा रज़विय्या जिल्द 30, सफ़्ह़ा 637 पर रिसाले مُنَبِّهُ الْمُنْيَةِ بِوُصُوْلِ الْحَبِيْبِ اِلَى الْعَرْشِ وَالرُّؤْيَةِ का मुत़ालआ़ कीजिये।

www.dawateislami.net

को मा'लूम नहीं कि **मुहिब्ब** और **महबूब** के असरार दूसरों पर ज़ाहिर नहीं किये जाते, अगर ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ को इन का इज़हार मक़्सूद होता ख़ुद ही बयान फ़रमा देता जब उस ने बयान नहीं किया कि फ़रमाया : वही की अपने बन्दे की त़रफ़ जो वही की, तो किस की मजाल है कि दरयाफ़्त करे ? (1)

बहर ह़ाल मुख़्तसर त़ौर पर इतना कहा जा सकता है कि दीनो दुन्या की जिस्मानी व रूह़ानी, ज़ाहिरी व बात़िनी ने'मतों और उ़लूमो मआ़रिफ़ जो कुछ भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अपनी ह़िक्मत के मुत़ाबिक़ अ़त़ा फ़रमाना चाहता था वोह सब कुछ अ़त़ा फ़रमा दिया अलबत्ता हर ने'मत और हर इ़ल्म व ह़िक्मत का ज़ुहूर अपने अपने वक़्त पर हुवा और होता रहेगा।(2)

पचास से पांच नमाज़ें

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अपने महबूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को हर दिन रात 50 नमाज़ों का तोह़फ़ा (भी) अ़त़ा फ़रमाया। वापस आते हुवे जब आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के पास पहुंचे तो वोह अ़र्ज़ गुज़ार हुवे कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के रब ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत पर क्या फ़र्ज़ फ़रमाया ? इरशाद फ़रमाया : 50 नमाज़ें। इस पर ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने अ़र्ज़ किया :

اِرْجِعْ اِلٰى رَبِّكَ فَاسْاَلْهُ التَّخْفِيْفَ فَاِنَّ اُمَّتَكَ لَا يُطِيْقُوْنَ ذٰلِكَ فَاِنِّيْ قَدْ بَلَوْتُ بَنِيْ اِسْرَائِيْلَ وَخَبَرْتُهُمْ

(1)...صحیح البخاری، کتاب التوحید، باب قولہ تعالی وکلم اللہ...الخ، ص ۱۸۱۱، الحدیث ۷۵۱۷. وانوارِ جمالِ مصطفےٰ، ص ۲۷۵، بتغیر.

(2).....मक़ालाते काज़िमी, 1/195, मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

"या'नी वापस अपने रब عَزَّوَجَلَّ के पास जाइये और उस से कमी का सुवाल कीजिये क्यूंकि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत से येह नहीं हो सकेगा, मैं ने बनी इस्राईल को आज़्मा कर देख लिया है और उन का तजरिबा कर लिया है।"

चुनान्चे, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم वापस रब तआ़ला की बारगाह में ह़ाज़िर हुवे और अ़र्ज़ किया : يَارَبِّ خَفِّفْ عَلٰى اُمَّتِىْ "या'नी ऐ मेरे रब ! मेरी उम्मत पर तख़्फ़ीफ़ फ़रमा।" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने पांच नमाज़ें कम कर दीं। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم वापस ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के पास तशरीफ़ लाए और फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने पांच नमाज़ें कम कर दी हैं। ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने फिर वोही अ़र्ज़ किया कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत से येह न हो सकेगा, वापस अपने रब عَزَّوَجَلَّ के पास जाइये और उस से कमी का सुवाल कीजिये। येह सिलसिला यूंही चलता रहा कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم रब तआ़ला की बारगाह में ह़ाज़िर होते तो वोह पांच नमाज़ें कम फ़रमा देता फिर ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के पास तशरीफ़ लाते तो वोह और कमी का अ़र्ज़ कर के वापस रब तआ़ला की बारगाह में भेज देते, ह़त्ता कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाया : ऐ मुह़म्मद (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) दिन और रात में येह पांच नमाज़ें हैं और हर नमाज़ का सवाब दस गुना है, इस त़रह़ येह **50** नमाज़ें हुईं। जो **नेकी का इरादा** करे फिर उसे न करे तो उस के लिये **एक नेकी** लिख दी जाएगी और अगर कर ले तो **दस नेकियां** लिखी जाएंगी और जो बुराई का इरादा करे फिर उस से बाज़ रहे तो उस के नामए आ'माल में कोई बुराई नहीं लिखी जाएगी

www.dawateislami.net

और अगर बुरा काम कर लिया तो एक बुराई लिखी जाएगी। प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के पास तशरीफ़ लाए और उन्हें इस बारे में बताया तो हज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने फिर वोही अ़र्ज़ किया कि वापस अपने रब عَزَّوَجَلَّ के पास जाइये और उस से कमी का सुवाल कीजिये। इस पर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मैं अपने रब عَزَّوَجَلَّ के पास इतनी बार गया हूं कि अब मुझे **ह़या** आती है।[1]

जन्नत की सैर

इस के बा'द आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **सिद्रतुल मुन्तहा** पर तशरीफ़ लाए, इस बार इस पर मुख़्तलिफ़ रंग छा गए। रिवायत में है कि फ़िरिश्तों ने **अल्लाह** तबारक व तआ़ला से प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत करने की इजाज़त त़लब की तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें इजाज़त अ़त़ा फ़रमा दी। पस वोह फ़िरिश्ते सिद्रह पर छा गए ताकि वोह हुज़ूर नबिय्ये रह़मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत का शरफ़ हासिल कर सकें। यहां से आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को जन्नत में लाया गया। इस में मोतियों की इमारतें थीं और इस की मिट्टी मुश्क थी, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने यहां चार क़िस्म की नह्रें मुलाह़ज़ा फ़रमाईं : **एक पानी की** जो तब्दील नहीं होता, **दूसरी दूध की** जिस का ज़ाइक़ा नहीं बदलता, **तीसरी शराब की** जिस में पीने वालों के लिये सिर्फ़ लज़्ज़त है (नशा बिल्कुल नहीं) और **चौथी पाकीज़ा** और साफ़ सुथरे शहद की।

(1)...صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب الاسراء...الخ، ص۷۹، الحدیث: ۱۶۲.

www.dawateislami.net

इस के अनार जसामत में डोलों की त़रह़ और परन्दे ऊंटों की त़रह़ थे, इस में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने नेक बन्दों के लिये ऐसे ऐसे इन्आ़मात तय्यार कर रखे हैं, जिन्हें किसी आंख ने देखा न किसी कान ने सुना और न किसी इन्सान के दिल में इस का ख़याल गुज़रा ।(1)

नह्रे कौसर पर तशरीफ़ आवरी

जन्नत की सैर के दौरान आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक नह्र पर तशरीफ़ लाए जिस के किनारों पर **जौफ़दार** (अन्दर से ख़ाली किये हुवे) मोतियों के ख़ैमे थे और इस की मिट्टी ख़ालिस मुश्क थी । आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام से दरयाफ़्त फ़रमाया : ऐ जिब्राईल ! येह क्या है ? अ़र्ज़ किया : येह कौसर है जो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के रब عَزَّوَجَلَّ ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अ़त़ा फ़रमाई है ।(2)

जहन्नम का मुआ़यना

जन्नत की सैर के बा'द आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को जहन्नम का मुआ़यना कराया गया, वोह इस त़रह़ कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जन्नत में ही मौजूद थे और जहन्नम पर से पर्दा हटा दिया गया

---

(1)...صحیح البخاری، کتاب احادیث الانبیاء، باب ذکر ادریس علیہ السلام، ص ۸۵۲، الحدیث: ۳۳۴۲
والدر المنثور، سورۃ النجم، تحت الآیۃ: ۱۶، ۱۴/۲۸.
ودلائل النبوۃ للبیہقی، جماع ابواب المبعث، باب الدلیل...بالافق الاعلی، ۲/۳۹۴.

(2)...صحیح البخاری، کتاب الرقاق، باب فی الحوض، ص ۱۶۱۲، الحدیث: ۶۵۸۱، بتقدم وتاخر

www.dawateislami.net

जिस से आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उसे मुलाहज़ा फ़रमा लिया। फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से उसे बन्द कर दिया गया और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم वापस सिद्रतुल मुन्तहा पर तशरीफ़ लाए।(1)

वापसी का सफ़र

इस के बा'द वापसी का सफ़र शुरूअ़ हुवा, वापस आते हुवे जब आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आस्माने दुन्या पर तशरीफ़ लाए और उस के नीचे नज़र फ़रमाई तो वहां गर्दो गुबार, शोरो ग़ोग़ा और धुवां था। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام से दरयाफ़्त फ़रमाया : ऐ जिब्राईल ! येह क्या है ? अ़र्ज़ किया : येह **शयातीन** हैं जो बनी आदम की आंखों पर मन्डलाते रहते हैं ताकि वोह ज़मीनो आस्मान की बादशाही में ग़ौरो फ़िक्र न कर सकें अगर येह गर्दो गुबार वग़ैरा न होता तो लोग (काइनात के) अ़जाइबात देखते।(2)

मक्कतुल मुकर्रमा زَادَهَا اللهُ شَرَفًا وَّ تَعْظِيْمًا के रास्ते में आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने क़ुरैश के तीन तिजारती क़ाफ़िले भी मुलाहज़ा फ़रमाए।(3)

---

(1)...دلائل النبوة للبيهقي، جماع ابواب المبعث، باب الدليل...بالافق الاعلىٰ، ٢/٣٩٥.
وحاشية الدردير على قصة المعراج، ص ٢٢.

(2)...مسند احمد، ٤/٣٧٨، الحديث: ٨٨٧٢.

(3).....इन क़ाफ़िलों का बयान आगे आ रहा है।

www.dawateislami.net

वाक़िअए मे'राज का ए'लान

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़ुदरते कामिला

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़ुदरत है कि उस ने रात के मुख़्तसर से हिस्से में अपने प्यारे महबूब عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को बैतुल मुक़द्दस और फिर सातों आस्मानों नीज़ अ़र्श व कुरसी से भी ऊपर ला मकां की सैर कराई, बा'ज़ नादान जो हर बात को अ़क़्ल के तराज़ू पर तोलने के आ़दी होते हैं ऐसे मुआ़मलात में भी अपनी नाक़िस अ़क़्ल को दख़्ल देते हैं, जब कुछ बन नहीं पड़ता तो मन घड़त और बातिल तावीलों और हीलों बहानों से ख़ालिक़े काइनात **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ की क़ुदरत के ही इन्कारी हो जाते हैं। (مَعَاذَاللّٰه)

याद रखिये ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ादिरे मुतलक़ है, वोह हर शै पर क़ादिर है। येह ज़मीनो आस्मान, येह पहाड़ो समन्दर, येह चांद व सूरज, येह फ़ासिले और येह सफ़र की मन्ज़िलें सब कुछ उसी का पैदा किया हुवा है, वोह जिस के लिये चाहे फ़ासिले समेट दे और जिस के लिये चाहे बढ़ा दे, अ़क़्लें इस का इह़ाता करने से क़ासिर हैं नीज़ उस ने अपनी क़ुदरते कामिला से अपने प्यारे अम्बिया व रुसुल عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को ऐसे बहुत से उमूर अ़ता फ़रमाए हैं जो आ़दतन नामुमकिन व मुह़ाल होते हैं, ऐसे उमूर को **मो'जिज़ा** कहा जाता है जैसे ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के मुबारक अ़सा (लाठी) का सांप बन जाना और ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का मुर्दों को ज़िन्दा करना

www.dawateislami.net

और मादरज़ाद (पैदाइशी) अन्धों को बीना (देखने वाला) करना वग़ैरा, और सब से अफ़्ज़ल नबी व रसूल हुज़ूर अह़मदे मुजतबा, मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को सब से ज़ियादा मो'जिज़ात अ़त़ा फ़रमाए। बस हमें उस की क़ुदरत पर पुख़्ता ईमान रखना चाहिये।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आस्माने हिदायत के रौशन सितारों ह़ज़राते सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان का अ़मल हमारे लिये बेहतरीन राहनुमा है, इन आ़ली रुतबा हस्तियों ने कमो बेश ज़िन्दगी के हर शो'बे में मिसाली किरदार अदा किया है और इस से बा'द वालों के लिये एक बेहतरीन नुमूना पेश किया है कि ख़्वाह कैसी ही ह़ैरान कुन बात हो और कैसा ही ह़ैरत अंगेज़ वाक़िआ़ हो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के फ़रामीन पर सिद्क़ दिल से ईमान लाना चाहिये। आइये ! अब वाक़िअ़ए **मे'राज** की तस्दीक़ के सिलसिले में अफ़्ज़लुस्सह़ाबा ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه का मुबारक अ़मल मुलाह़ज़ा कीजिये, लेकिन इस से पहले उस वक़्त के अह़वाल बयान किये जाते हैं जिस वक़्त मक्कतुल मुकर्रमा زَادَهَا اللهُ شَرَفًا وَّ تَعْظِيْمًا की पुर बहार फ़ज़ाओं में प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने **मे'राज** शरीफ़ का ए'लान फ़रमाया था लेकिन कुफ़्रो शिर्क की नजासत से आलूद कुफ़्फ़ार व मुशरिकीन अपनी रविश (त़रीक़े) के मुत़ाबिक़ इस के मानने से इन्कारी हुवे थे, चुनान्चे रिवायात के मुत़ाबिक़ **मे'राज** की सुब्ह़ प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सब से अलग थलग हो कर किसी जगह तशरीफ़ फ़रमा थे और बहुत फ़िक्र मन्द थे कि लोग **मे'राज** का वाक़िआ़

www.dawateislami.net

सुन कर यक़ीन नहीं करेंगे। इतने में अबू जहल का वहां से गुज़र हुवा, जब उस ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को सब से अलग थलग और फ़िक्र मन्दी की ह़ालत में बैठे देखा तो पास आ कर बैठ गया और (مَعَاذَاللہ) मज़ाक़ उड़ाते हुवे कहने लगा : क्या कोई नई बात हो गई है? प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : हां। पूछा : वोह क्या? फ़रमाया : मुझे रात को सैर कराई गई। दरयाफ़्त किया : कहां तक? फ़रमाया : बैतुल मुक़द्दस तक।

येह सुन कर उस दुश्मने रसूल ने लोगों को दा'वते इस्लाम से रोकने और बा'ज़ कमज़ोर ईमान वाले मुसलमानों को दीने इस्लाम से बरगश्ता करने की एक नई राह ढूंड ली लेकिन फ़ौरन आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तक्ज़ीब नहीं की और लोगों को इस बारे में नहीं बताया कि (مَعَاذَاللہ) कहीं लोगों के सामने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इस बात से इन्कार न कर दें। रिवायत में है कि उस ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से दरयाफ़्त किया : अगर मैं लोगों को आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास बुला लाऊं तो क्या आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उन्हें भी येह बात बयान करेंगे जो मुझे की है? सरकारे आ़ली वक़ार, मह़बूबे रब्बुल इ़बाद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : हां। फिर अबू जहल ने लोगों को बुलाया। जब लोग जम्अ़ हो गए और प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन्हें भी वोही बात बयान फ़रमाई तो (مَعَاذَاللہ) इसे झूट गुमान करते हुवे किसी ने ताली बजाई और किसी ने ह़ैरत से अपना हाथ सर पर रख लिया।[1]

(1)...مصنف ابن ابی شیبة، کتاب الفضائل، باب ما اعطی اللہ...الخ، ۷/۴۲۲، الحدیث: ۶۲، ملتقطاً

www.dawateislami.net

मुत्अ़म ने कहा : आप (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की आज की इस बात के इ़लावा पहले की सब बातें वाज़ेह़ थीं, मैं गवाही देता हूं कि (مَعَاذَاللهِ) आप झूटे हैं क्यूंकि हम बैतुल मुक़द्दस की त़रफ़ आते जाते एक एक महीना सफ़र करते हैं जब कि आप का ख़याल है कि आप रातों रात वहां से हो भी आए हैं, लात व उ़ज़्ज़ा की क़सम ! मैं आप की तस्दीक़ नहीं करूंगा ।[1]

बैतुल मुक़द्दस का २ बर२ पेश होना

लोगों में से बा'ज़ ऐसे भी थे जिन्हों ने बैतुल मुक़द्दस को देखा हुवा था उन्हों ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से बैतुल मुक़द्दस की निशानियां दरयाफ़्त कीं । मक्के मदीने के ताजदार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उस की निशानियां बयान फ़रमाने लगे । ह़त्ता कि बा'ज़ बातों में आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को शुबा हुवा तो बैतुल मुक़द्दस को आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सामने ला कर दारे अ़क़ील के पास रख दिया गया और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस की त़रफ़ देखते हुवे तमाम निशानियां बयान फ़रमा दीं । इस पर लोग पुकार उठे : जहां तक निशानियों का तअ़ल्लुक़ है, ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! वोह बिल्कुल दुरुस्त हैं ।[2]

क़ाफ़िलों की ख़बरें

बा'ज़ लोगों ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से अपने क़ाफ़िलों के बारे में भी दरयाफ़्त किया जो दूसरे मुल्कों से तिजारत कर के वापस

(1)...الدر المنثور، سورۃ بنی اسرائیل، تحت الآیۃ: ۱، ۹/۱۹۱.

(2)...مصنف ابن ابی شیبۃ، کتاب الفضائل، باب ما اعطی اللہ...الخ، ۷/۴۲۲، الحدیث: ۶۱، ملتقطاً

www.dawateislami.net

आ रहे थे, सरकारे आ़ली वक़ार, महबूबे रब्बे ग़फ़्फ़ार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन्हें क़ाफ़िलों के मुतअ़ल्लिक़ बताया और उन के आने का वक़्त और मक़ाम के बारे में भी ख़बर दी। सब कुछ आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के फ़रमाने के मुवाफ़िक़ वाक़ेअ़ हुवा, इस पर बजाए इस के कि वोह आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नबुव्वत व रिसालत पर ईमान लाते, उलटा आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर **जादूगरी** की तोहमत लगाने लगे।[1] (مَعَاذَاللهِ)

सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की तस्दीक़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! जब सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने लोगों को वाक़िअ़ए **मे'राज** की ख़बर दी तो अ़क़्ल परस्त कुफ़्फ़ार व मुशरिकीन की समझ में येह बात न आई कि कोई शख़्स रात के मुख़्तसर से हिस्से में बैतुल मुक़द्दस की सैर कैसे कर सकता है जिस के नतीजे में उन्हों ने रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तक्ज़ीब की एक नई राह ढूंड निकाली और वोह शोरे बद तमीज़ बपा किया जिस से बा'ज़ नापुख़्ता ईमान रखने वाले लोगों के क़दम भी डगमगा गए और वोह उन के दामे फ़रेब में फंस कर अपने ईमान का चराग़ गुल कर बैठे, चुनान्चे, रिवायत में है कि **मे'राज** की सुब्ह़ जब प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह वाक़िआ़ लोगों से बयान फ़रमाया

(1)...الخصائص الکبریٰ، باب خصوصیته بالاسراء، ۱/ ۲۸۰ و ۲۹٤، ملخصًا.

www.dawateislami.net

तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ईमान लाने वाले और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तस्दीक़ करने वाले बा'ज़ अफ़राद मुर्तद हो गए।[1]

इन के बर अ़क्स कामिल ईमान वालों के ईमान में और इज़ाफ़ा हो गया, ख़ुदाए ज़ुल जलाल की क़ुदरत पर इन का यक़ीन और पुख़्ता हो गया और रसूले पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सदाक़त का यक़ीन भी और ज़ियादा मोह़कम (मज़बूत़) हो गया,[2] जैसा कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सफ़रे **मे'राज** का ए'लान फ़रमाने पर बा'ज़ लोग दौड़ते हुवे ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه के पास पहुंचे और कहने लगे : क्या आप इस बात की तस्दीक़ कर सकते हैं जो आप के दोस्त ने कही है कि उन्हों ने रातों रात मस्जिदे ह़राम से मस्जिदे अक़्सा की सैर की? शायद उन का ख़याल था कि येह अ़क़्ल व फ़हम से बाला तर बात सुन कर ह़ज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का साथ छोड़ देंगे (مَعَاذَاللّٰه) लेकिन क़ुरबान जाइये सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه की शाने सिद्दीक़िय्यत पर कि जब आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने येह इन्तिहाई ह़ैरान कुन बात सुनी जिस पर अ़क़्ल के पैरूकार किसी त़रह़ भी यक़ीन करने के लिये तय्यार नहीं थे, तो बिग़ैर किसी तज़ब-ज़ुब और हिचकिचाहट के फ़ौरन प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तस्दीक़

(1)...المستدرك على الصحيحين للحاكم، كتاب معرفة الصحابة، الاحاديث المشعرة بتسمية ابي بكر صديقا رضي الله عنه، ٤/٥، الحديث: ٤٤٦٣.

(2)...السيرة النبوية والآثار المحمدية، باب ذكر الاسراء والمعراج، ١/٢٨١، ماخوذًا.

www.dawateislami.net

कर दी, रिवायत में है कि लोगों से येह बात सुन कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दरयाफ़्त फ़रमाया : اَوَ قَالَ ذٰلِكَ؟ क्या वाक़ेई आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह फ़रमाया है ? कहा : जी हां । इरशाद फ़रमाया : لَئِنْ كَانَ قَالَ ذٰلِكَ لَقَدْ صَدَقَ या'नी अगर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह फ़रमाया है तो यक़ीनन सच फ़रमाया है । लोगों ने कहा : क्या आप इस बात की तस्दीक़ करते हैं कि वोह रात को बैतुल मुक़द्दस गए और सुब्ह होने से पहले वापस आ गए ? फ़रमाया :

نَعَمْ ! اِنِّیْ لَاُصَدِّقُهٗ فِیْمَا هُوَ اَبْعَدُ مِنْ ذٰلِكَ اُصَدِّقُهٗ بِخَبَرِ السَّمَاءِ فِیْ غُدْوَةٍ اَوْ رَوْحَةٍ

जी हां ! मैं तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की आस्मानी ख़बरों की भी सुब्हो शाम तस्दीक़ करता हूं और यक़ीनन वोह तो इस बात से भी ज़ियादा हैरान कुन और तअ़ज्जुब ख़ेज़ है ।''[1]

उस दिन रसूले पाक, साहिबे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : یَا اَبَا بَكْرٍ اِنَّ اللّٰهَ قَدْ سَمَّاكَ الصِّدِّیْقَ या'नी ऐ अबू बक्र ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हें सिद्दीक़ का नाम दिया है !'' रिवायत में है कि इस के बा'द आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ **सिद्दीक़** मश्हूर हो गए ।[2]

---

(1)...المستدرك للحاكم، كتاب معرفة الصحابة، ذكر الاختلاف فی امر الخلافة ثم الاجماع علی خلافة ابی بكر رضی الله عنه، ٤/ ٢٥، الحديث: ٤٥١٥.

(2)...الخصائص الكبرىٰ، باب خصوصيته بالاسراء، ١/ ٢٩٤.

والمستدرك للحاكم، كتاب معرفة الصحابة، ذكر الاختلاف فی امر الخلافة ثم الاجماع علی خلافة ابی بكر رضی الله عنه، ٤/ ٢٥، الحديث: ٤٥١٥.

www.dawateislami.net

वाक़िआए मे'राज से माख़ूज़ चन्द अनमोल मदनी फूल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ख़ुदाए जुल जलाल ने अपने प्यारे महबूब, हुज़ूर अहमदे मुजतबा, मुहम्मदे मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इस क़दर कसीर मो'जिज़ात अ़ता फ़रमाए हैं कि शुमार नहीं किये जा सकते, जो मो'जिज़े दीगर अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को फ़र्दन फ़र्दन अ़ता हुवे वोह सब बल्कि उन से भी कहीं ज़ियादा आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ाते आ़ली में जम्अ़ कर दिये गए, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शान तो येह है कि

दिये मो'जिज़े अम्बिया को ख़ुदा ने
हमारा नबी मो'जिज़ा बन के आया

प्यारे मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इन हज़ारहा मो'जिज़ात में से एक मश्हूर तरीन मो'जिज़ा और काइनात का सब से मुनफ़रिद वाक़िआ़ **मे'राज शरीफ़** का है। येह एक मो'जिज़ा अपने ज़िम्न में बहुत से मो'जिज़ात लिये हुवे है मसलन आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का सीना मुबारक खोल कर **क़ल्बे अत़हर** को बाहर निकाल लिया जाना लेकिन इस के बा वुजूद आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को किसी क़िस्म का कोई नुक़्सान न पहुंचना बल्कि होशो ह़वास में रहते हुवे तमाम सूरते ह़ाल भी मुलाह़ज़ा फ़रमाना, इसी त़रह़ रोशनी से भी ज़ियादा तेज़ रफ़्तार **बुराक़** की सुवारी करना वग़ैरा इसी सफ़रे **मे'राज** में पेश आने वाले वाक़िआ़त हैं और बज़ाते ख़ुद भी मो'जिज़े की हैसिय्यत रखते हैं, बहर ह़ाल सफ़रे **मे'राज** सरकारे आ़ली वक़ार,

www.dawateislami.net

महबूबे रब्बुल इबाद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का वोह अ़ज़ीमुश्शान मो'जिज़ा है कि तारीख़ में इस की मिसाल नहीं मिलती और इस से आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शानो अ़ज़मत और बारगाहे रब्बुल इ़ज़्ज़त में आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की **महबूबिय्यत** आफ़्ताब से भी ज़ियादा रोशन और वाज़ेह़ तर हो जाती है।

आइये ! अब प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सफ़रे **मे'राज** से ह़ासिल होने वाले चन्द ख़ुश्बूदार **मदनी फूल** मुलाह़ज़ा कीजिये :

❁...मक्कतुल मुकर्रमा زَادَهَا اللهُ شَرَفًا وَّ تَعْظِيْمًا से बैतुल मुक़द्दस की त़रफ़ जाते हुवे रास्ते में ह़ज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام ने सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को तीन मक़ामात पर नमाज़ पढ़ने के लिये कहा और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने नमाज़ अदा फ़रमाई : (1)...**मदीनतुल मुनव्वरा** زَادَهَا اللهُ شَرَفًا وَّ تَعْظِيْمًا की पाक ज़मीन में, जिस की त़रफ़ मुसलमानों की हिजरत होने वाली थी। (2)...**तूर पहाड़** पर, जहां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से कलाम फ़रमाया था। (3)...**बैते लह़्म** में जहां ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की विलादत हुई।

इस से मा'लूम हुवा कि येह मक़ामात बहुत ही अ़ज़मत वाले हैं और क्यूं न हो कि इन्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के जलीलुल क़द्र अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के साथ निस्बत है। मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِي फ़रमाते हैं : जिस चीज़ को सालिह़ीन से

www.dawateislami.net

निस्बत हो जाए वोह चीज़ अ़ज़मत वाली बन जाती है।[1] नीज़ इस से तबर्रुकाते सालिह़ीन से बरकत लेने का सुबूत भी मिलता है। चुनान्चे, **ह़ाशियए सिन्धी** में है कि सरकारे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का येह अ़मले मुबारक आसारे सालिह़ीन को तलाश करने, उन से बरकत लेने और उन के पास **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत करने के सिलसिले में बहुत बड़ी दलील है।[2]

❁...नीज़ इस मुबारक सफ़र में आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को अपनी क़ब्रे मुबारक में नमाज़ पढ़ते मुलाह़ज़ा फ़रमाया। इस से पता चला कि अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام अपनी मुबारक क़ब्रों में ज़िन्दा हैं, वा'दए इलाहिय्या (كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ ؕ **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** हर जान को मौत चखनी है।)[3] की तस्दीक़ के लिये फ़क़त़ एक आन के लिये उन की वफ़ात शरीफ़ होती है फिर उसी त़रह़ ह़याते ह़क़ीक़ी अ़त़ा कर दी जाती है, सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं :

अम्बिया को भी अजल आनी है मगर ऐसी कि फ़क़त़ आनी है
फिर इस आन के बा'द उन की ह़याते मिस्ले साबिक़ वोही जिस्मानी है[4]

---

(1).....नूरुल इरफ़ान, पारह 2, सूरए बक़रह, तह़तल आयत, 158, स. 733.

(2)...حاشية السندي على النسائي، كتاب الصلاة، باب فرض الصلاة...الخ، ١/٢٤١، تحت الحديث: ٤٤٩

(3)...پ٤، آل عمران: ١٨٥.

(4).....ह़दाइक़े बख़्शिश, ह़िस्सा दुवुम, स. 372

www.dawateislami.net

ज़मीन उन के मुबारक जिस्मों को नहीं खाती, उन की ह़यात, ह़याते शुहदा से भी ज़ियादा अरफ़अ़ व आ'ला होती है, येही वजह है कि उन का माले विरासत तक़्सीम नहीं होता और उन के दुन्याए ज़ाहिर से पर्दा फ़रमाने के बा'द उन की अज़्वाज को किसी से निकाह़ करना मन्अ़ होता है।[1]

❁...इसी से येह भी मा'लूम हुवा कि येह ह़ज़राते कुदसिय्या عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام रब तबारक व तआ़ला के इज़्न व अ़त़ा से जहां चाहते हैं आते जाते हैं और रब तआ़ला ने उन्हें इस क़दर वसीअ़ इख़्तियारात और त़ाक़तो कुव्वत से नवाज़ा है कि काइनात में किसी को ह़ासिल नहीं।

❁...जब दीगर अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की येह शान है कि बैतुल मुक़द्दस में प्यारे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इक़्तिदा में नमाज़ अदा की फिर आन की आन में आस्मान पर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इस्तिक़बाल के लिये ह़ाज़िर हो गए तो ख़ुद सय्यिदुल अम्बिया, मह़बूबे किब्रिया صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अ़ज़्मतो शान और त़ाक़तो कुव्वत का आ़लम क्या होगा ? इस से मा'लूम हुवा कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में बुराक़ को ह़ाज़िर लाया जाना और हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का उस पर सुवार हो कर

(1).....बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा अव्वल, अ़क़ाइद मुतअ़ल्लिक़ए नबुव्वत, 1/58 बित्तग़य्युर

www.dawateislami.net

बैतुल मुक़द्दस और आस्मानों की सैर को तशरीफ़ ले जाना महज़ आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ता'ज़ीम व तकरीम और इज़हारे शान के लिये था। इस से हरगिज़ येह नहीं कहा जा सकता कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इस सैर के लिये बुराक़ के मोहताज थे, येह हो ही नहीं सकता है कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم कभी किसी मुआमले में किसी मख़्लूक़ के मोहताज हों। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم रब तआला के नाइबे अक्बर हैं जिस को जो मिला आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के तवस्सुल से ही मिला।

ला व रब्बिल अ़र्श जिस को जो मिला उन से मिला
बटती है कौनैन में ने'मत रसूलुल्लाह की
वोह जहन्नम में गया जो उन से मुस्तग़नी हुवा
है ख़लीलुल्लाह को हाजत रसूलुल्लाह की (1)

सब को हुज़ूरे अक्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की हाजत और हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم रब तआला के सिवा किसी के मोहताज नहीं। बुख़ारी शरीफ़ की हदीस है कि प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : اِنَّمَا اَنَا قَاسِمٌ وَّاللّٰهُ يُعْطِیْ "या'नी मैं तक़्सीम करने वाला हूं और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अ़ता फ़रमाता है।" (2)

---

(1).....हदाइक़े बख़्शिश, हिस्सा अव्वल, स. 152

(2)...صحیح البخاری، کتاب العلم، باب من یرد اللہ بہ خیرا...الخ، ص۹۲، الحدیث: ۷۱.

www.dawateislami.net

हकीमुल उम्मत हज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नई़मी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی फ़रमाते हैं : हुज़ूरे अन्वर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) का बुराक़ पर सुवार होना इज़हारे शान के लिये था जैसे दुल्हा घोड़े पर होते हैं बराती पैदल और घोड़ा ख़िरामां ख़िरामां चलता है। बुराक़ की येह रफ़्तार भी ख़िरामां थी वरना उस दिन ख़ुद हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की अपनी रफ़्तार बुराक़ से ज़ियादा तेज़ होती । देखो ! हज़राते अम्बियाए किराम (عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) ने बैतुल मुक़द्दस में हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) के पीछे नमाज़ पढ़ी और हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) को वदाअ़ किया मगर आस्मानों पर हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) से पहले पहुंच गए और हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) का इस्तिक़बाल किया, क्यूंकि आज इन हज़रात की कारकर्दगी का दिन था हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) के दुल्हा बनने का दिन था, येह है नबी की रफ़्तार।[1]

❁...वाक़िअ़ए **मे'राज** से येह बात भी पता चलती है कि रहमते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में ऐसी बारयाबी ह़ासिल है कि बार बार ह़ाज़िर हो सकते हैं कि ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की नमाज़ों में कमी के सिलसिले में अ़र्ज़ व मा'रूज़ सुन कर वहीं से दुआ न कर दी बल्कि बार बार ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام और रब तआ़ला के दरमियान आते जाते रहे।[2]

---

(1)...मिरआतुल मनाजीह़, **मे'राज** का बयान, पहली फ़स्ल **8/137**

(2)...المرجع السابق، ص۱۴۵، ماخوذاً.

www.dawateislami.net

❁...इस से नमाज़ों की अ़ज़मत का भी पता चला कि येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने प्यारे महबूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को सातों आस्मानों बल्कि अ़र्श व कुरसी से भी वराअ ला मकां में बुला कर अ़ता फ़रमाई हैं।

❁❁❁❁❁

मुर्सलीने ऊलुल अ़ज़्म

नबियों के मुख़्तलिफ़ दरजे हैं, बा'ज़ को बा'ज़ पर फ़ज़ीलत है और सब में अफ़्ज़ल हमारे आक़ा व मौला सय्यिदुल मुर्सलीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हैं, हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के बा'द सब से बड़ा मर्तबा ह़ज़रते इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام का है, फिर ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام, फिर ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام और ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام का, इन ह़ज़रात को मुर्सलीने ऊलुल अ़ज़्म कहते हैं। (बहारे शरीअ़त, अ़क़ाइदे मुतअ़ल्लिक़ए नबुव्वत, हिस्सा अव्वल, **1/52**)

उम्मते मुह़म्मदिया की फ़ज़ीलत

जिस त़रह़ हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) तमाम रसूलों के सरदार और सब से अफ़्ज़ल हैं, बिला तश्बीह हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के सदक़े में हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की उम्मत तमाम उम्मतों से अफ़्ज़ल। (المرجع السابق، ص۵۴)

www.dawateislami.net

क़ुरआन में मे'राज का बयान

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने क़ुरआने करीम में तीन[3] मक़ामात पर इस का ज़िक्र फ़रमाया है।[(1)]

पहला मक़ाम

सूरए बनी इस्राईल में इरशादे रब्बानी है :

سُبْحٰنَ الَّذِیْۤ اَسْرٰى بِعَبْدِهٖ لَیْلًا مِّنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ اِلَى الْمَسْجِدِ الْاَقْصَا الَّذِیْ بٰرَكْنَا حَوْلَهٗ لِنُرِیَهٗ مِنْ اٰیٰتِنَا ؕ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِیْعُ الْبَصِیْرُ ①

(پ۱۵، بنی اسرائیل: ۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *पाकी है उसे जो रातों रात अपने बन्दे को ले गया मस्जिदे ह़राम (ख़ानए का'बा) से मस्जिदे अक़्सा (बैतुल मुक़द्दस) तक जिस के गिर्दा गिर्द हम ने बरकत रखी कि हम उसे अपनी अ़ज़ीम निशानियां दिखाएं बेशक वोह सुनता देखता है।*

मदनी फूल

मुफ़स्सिरीने किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی फ़रमाते हैं : जब सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم शबे **मे'राज** दरजाते आ़लिया व मरातिबे रफ़ीआ़ (बुलन्द तरीन मर्तबों) पर फ़ाइज़ हुवे तो रब عَزَّوَجَلَّ ने ख़िता़ब फ़रमाया : ऐ मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) येह फ़ज़ीलत व शरफ़ मैं ने तुम्हें क्यूं अ़ता फ़रमाया ? हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ने अ़र्ज़ किया : इस लिये कि तू ने मुझे अ़ब्दिय्यत के साथ अपनी त़रफ़

(1).....मक़ालाते काज़िमी, 1/174

www.dawateislami.net

मन्सूब फ़रमाया, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई ।[1] इस आयते मुबारका में प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़मीनी सैर (मस्जिदे ह़राम से बैतुल मुक़द्दस तक) का ज़िक्र है । इस से चन्द एक मदनी फूल ह़ासिल हुवे :

...आयत को लफ़्ज़े سُبْحٰنَ से शुरूअ़ करने की ह़िक्मत

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इस आयत के शुरूअ़ में سُبْحٰنَ الَّذِیْ कह कर अपनी पाकी बयान फ़रमाई । येह कलिमा तअ़ज्जुब के मौक़अ़ पर बोला जाता है, उ़-लमा फ़रमाते हैं : चूंकि वाक़िअ़ए **मे'राज** बहुत ही ह़ैरत अंगेज़ वाक़िआ़ है और इन्सानी अ़क़्ल से बाला तर । इसी लिये फ़रमाया कि سُبْحٰنَ الَّذِیْ या'नी येह उस के इरादे से हुवा जो इ़ज़्ज़ से पाक है हर त़रह़ क़ादिर है । हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के जिस्मे अत़हर का ऊपर की त़रफ़ जाना, कुर्ए आग व ज़महरीर से सलामत गुज़र जाना, आस्मानों में दाख़िल हो जाना, जन्नत व दोज़ख़ की सैर फ़रमाना, फिर इस क़दर जल्द वापस आ जाना अगर्चे बहुत मुश्किल मा'लूम होता है, मगर रब्बे क़दीर के नज़दीक कुछ मुश्किल नहीं ।[2]

गुनाहों से नजात पाने का नुस्ख़ा

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِی फ़रमाते हैं : जो कोई इस इस्मे इलाही का वज़ीफ़ा करे या'नी يَاسُبْحٰنَ،يَاسُبْحٰنَ पढ़ा करे

(1).....ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह 15, सूरए बनी इस्राईल, तह़तल आयत, 1, स. 525
(2)....शाने ह़बीबुर्रह़मान, स. 112

www.dawateislami.net

अल्लाह तआ़ला उसे गुनाहों से पाक फ़रमाएगा। हर इस्मे इलाही की तजल्ली आ़मिल पर पड़ती है जो یَا غَنِی का वज़ीफ़ा पढ़े ख़ुद ग़नी और मालदार हो जावे।(1)

.....ख़ुदा तआ़ला की क़ुदरत का बयान

سُبْحٰنَ الَّذِیْ कह कर अपनी पाकी बयान फ़रमाने के बा'द اَسْرٰی का लफ़्ज़ इरशाद फ़रमाया जिस का मत़लब है : ले गया। ग़ौर कीजिये ! **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ ने हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को जाने वाला नहीं फ़रमाया बल्कि अपनी ज़ाते मुक़द्दसा को ले जाने वाला फ़रमाया। उ़लमा फ़रमाते हैं कि **अल्लाह** तआ़ला ने लफ़्ज़े سُبْحٰنَ और اَسْرٰی फ़रमा कर **मे'राजे** जिस्मानी पर होने वाले हर ए'तिराज़ का जवाब दिया है, गोया यूं फ़रमाया कि ऐ मुन्किरो ! ख़बरदार ! वाक़िअए **मे'राज** में मेरे ह़बीब (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) पर ए'तिराज़ करने का तुम्हें कोई ह़क़ नहीं। इस लिये कि इन्हों ने **मे'राज** करने और मस्जिदे अक़्सा या आस्मानों पर ख़ुद जाने का दा'वा नहीं किया। ऐसी सूरत में तुम्हें इन पर ए'तिराज़ करने का क्या ह़क़ है ? येह दा'वा तो मेरा है कि मैं अपने ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को ले गया। अब अगर मेरे ले जाने पर ए'तिराज़ है कि **अल्लाह** तआ़ला कैसे ले गया ? येह ले जाना और ज़रा सी देर में आस्मानों की सैर करा के वापस ले आना तो मुमकिन नहीं तो याद रखो कि मैं سُبْحٰنَ (हर इ़ज़्ज़ व कमज़ोरी से पाक) हूं। जो चीज़ मख़्लूक़ के लिये आ़दतन नामुमकिन और

---

(1).....नूरुल इ़रफ़ान, पारह 15, सूरए बनी इस्राईल, तह़्तल आयत, 1, स. 339

www.dawateislami.net

मुहाल है अगर मेरे लिये भी उसी त़रह़ मुहाल और नामुमकिन हो तो मैं आ़जिज़ और नातुवां ठहरूंगा और आ़जिज़ी व नातुवानी ऐ़ब है और मैं हर ऐ़ब से पाक हूं।(1)

....मे'राजे जिस्मानी का सुबूत

इस आयत से येह बात भी मा'लूम हुई कि सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की येह **मे'राज** फ़क़त़ रूह़ानी न थी बल्कि जिस्म और रूह़ दोनों के साथ थी चुनान्चे, आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن इरशाद फ़रमाते हैं कि **मे'राज** शरीफ़ यक़ीनन क़त़्अ़न इसी जिस्मे मुबारक के साथ हुवा न कि फ़क़त़ रूह़ानी जो उन के अ़त़ा से उन के ग़ुलामों को भी होता है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

سُبْحٰنَ الَّذِیْۤ اَسْرٰى بِعَبْدِهٖ (پ۱۵، بنی اسرائیل: ۱)

पाकी है उसे जो रात में ले गया अपने बन्दे को।

येह न फ़रमाया कि ले गया अपने बन्दे की रूह़ को।(2)

नोट

याद रहे कि **मे'राज** शरीफ़ ब ह़ालते बेदारी जिस्म व रूह़ दोनों के साथ वाक़ेअ़ हुई, यही जमहूर अहले इस्लाम का अ़क़ीदा है और अस्ह़ाबे रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की कसीर जमाअ़तें और हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के अजिल्ला अस्ह़ाब इसी के मो'तक़िद हैं।(3)

---

(1).....मक़ालाते काज़िमी, 1/124, मुल्तक़त़न.

(2).....फ़तावा रज़विय्या, 15/74

(3).....ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह 15, सूरए बनी इस्राईल, तह़तल आयत, 1, स. 525

www.dawateislami.net

दूसरा मक़ाम

सूरए बनी इस्राईल में ही दूसरे मक़ाम पर है :

وَمَا جَعَلْنَا الرُّءْيَا الَّتِيْٓ اَرَيْنٰكَ اِلَّا فِتْنَةً لِّلنَّاسِ (پ۱۵، بنی اسرائیل:۶۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और हम ने न किया वोह दिखावा जो तुम्हें दिखाया था मगर लोगों की आज़माइश को ।*

मे'राज शरीफ़ की सुब्ह़ जब प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने लोगों को इस बारे में बताया तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ईमान लाने वाले बा'ज़ लोग मुर्तद हो गए, इस आयत में उन लोगों को आज़माइश में डाले जाने का ज़िक्र है ।[1] इस आयत से भी येही पता चलता है कि **मे'राज** शरीफ़ सिर्फ़ रूह़ को न हुई बल्कि जिस्म और रूह़ दोनों को हुई क्यूंकि अगर ह़ालते ख़्वाब में फ़क़त़ रूह़ को **मे'राज** होती तो किसी को ए'तिराज़ न होता ।

तीसरा मक़ाम

सूरए नज्म में इरशादे रब्बानी है :

وَالنَّجْمِ اِذَا هَوٰى ۙ﴿۱﴾ مَا ضَلَّ صَاحِبُكُمْ وَمَا غَوٰى ۚ﴿۲﴾ وَمَا يَنْطِقُ عَنِ الْهَوٰى ۚ﴿۳﴾ اِنْ هُوَ اِلَّا وَحْيٌ يُّوْحٰى ۙ﴿۴﴾ عَلَّمَهٗ شَدِيْدُ الْقُوٰى ۙ﴿۵﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *इस प्यारे चमकते तारे* **मुह़म्मद** (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) *की क़सम ! जब येह* **मे'राज** *से उतरे तुम्हारे साह़िब न बहके न बे राह चले और वोह कोई बात अपनी ख़्वाहिश से नहीं करते वोह तो नहीं मगर वह़ी जो उन्हें की जाती है उन्हें सिखाया*

(1)...تفسیر قرطبی، سورۃ الاسراء، تحت الآیۃ: ۶۰، ۵/۱۷۵.

www.dawateislami.net

ذُوْ مِرَّةٍ ؕ فَاسْتَوٰى ۙ﴿۶﴾ وَهُوَ بِالْاُفُقِ
الْاَعْلٰى ؕ﴿۷﴾ ثُمَّ دَنَا فَتَدَلّٰى ۙ﴿۸﴾ فَكَانَ
قَابَ قَوْسَيْنِ اَوْ اَدْنٰى ۚ﴿۹﴾ فَاَوْحٰۤى
اِلٰى عَبْدِهٖ مَاۤ اَوْحٰى ؕ﴿۱۰﴾ مَا كَذَبَ
الْفُؤَادُ مَا رَاٰى ؕ﴿۱۱﴾ اَفَتُمٰرُوْنَهٗ عَلٰى
مَا يَرٰى ﴿۱۲﴾ وَلَقَدْ رَاٰهُ نَزْلَةً
اُخْرٰى ۙ﴿۱۳﴾ عِنْدَ سِدْرَةِ الْمُنْتَهٰى ﴿۱۴﴾
عِنْدَهَا جَنَّةُ الْمَاْوٰى ؕ﴿۱۵﴾ اِذْ يَغْشَى
السِّدْرَةَ مَا يَغْشٰى ۙ﴿۱۶﴾ مَا زَاغَ الْبَصَرُ
وَمَا طَغٰى ﴿۱۷﴾ لَقَدْ رَاٰى مِنْ اٰيٰتِ
رَبِّهِ الْكُبْرٰى ﴿۱۸﴾

(پ۲۷، النجم: ۱-۱۸)

सख़्त क़ुव्वतों वाले ताक़तवर ने फिर उस जल्वे ने क़स्द फ़रमाया और वोह आस्माने बरीं के सब से बुलन्द किनारे पर था फिर वोह जल्वा नज़दीक हुवा फिर ख़ूब उतर आया तो उस जल्वे और उस महबूब में दो हाथ का फ़ासिला रहा बल्कि इस से भी कम अब वही फ़रमाई अपने बन्दे को जो वही फ़रमाई दिल ने झूट न कहा जो देखा तो क्या तुम उन से उन के देखे हुवे पर झगड़ते हो और उन्हों ने तो वोह जल्वा दो बार देखा सिद्रतुल मुन्तहा के पास उस के पास जन्नतुल मावा है जब सिद्रा पर छा रहा था जो छा रहा था आंख न किसी तरफ़ फिरी न हद से बढ़ी बेशक अपने रब की बहुत बड़ी निशानियां देखीं।

इन आयात में नज्म (तारे) से क्या मुराद है इस की तफ़्सीर में मुफ़स्सिरीने किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی के बहुत से क़ौल हैं बा'ज़ ने सितारे मुराद लिये, बा'ज़ ने सितारों की एक ख़ास क़िस्म सुरय्या से इस की तफ़्सीर की और बा'ज़ ने क़ुरआन मुराद लिया है। राजेह क़ौल येह है कि इस से हादिये बर हक़, सय्यिदे अम्बिया, मुहम्मदे मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ाते गिरामी मुराद है जैसा कि ऊपर ज़िक्र किये गए आक़ाए ने'मत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن के तर्जमे से वाज़ेह होता है।[1]

(1)...तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह 27, सूरए नज्म, तहतल आयत 1, स. 969 मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

चुनान्चे, इन आयात में आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की आस्मानी सैर की त़रफ़ इशारा है।

मे'राज के ह़वाले से मुफ़ीद मा'लूमात

....मे'राज शरीफ़ का इन्कार करना कैसा ?

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْہَادِی फ़रमाते हैं : सत्ताईसवीं रजब को **मे'राज** हुई। मक्कए मुकर्रमा से हुज़ूर पुरनूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) का बैतुल मुक़द्दस तक शब के छोटे ह़िस्से में तशरीफ़ ले जाना नस्से कुरआनी से साबित है। इस का मुन्किर (इन्कार करने वाला) काफ़िर है और आस्मानों की सैर और मनाज़िले कुर्ब में पहुंचना अह़ादीसे सह़ीह़ा मो'तमदा मशहूरा (صحی حہ، مُعْ-تَ-مَدہ، مَشْ-ہُوْرَہ) से साबित है जो ह़द्दे तवातुर के क़रीब पहुंच गई हैं इस का मुन्किर (इन्कार करने वाला) गुमराह है।(1) उ़रूज या ए'राज या'नी सरकारे नामदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सर की आंखों से दीदारे इलाही करने और फ़ौक़ल अ़र्श (अ़र्श से ऊपर) जाने का मुन्किर (इन्कार करने वाला) **ख़ात़ी** या'नी **ख़त़ाकार** है।(2)

मे'राज शरीफ़ की ह़िक्मतें

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ का कोई काम ह़िक्मत से ख़ाली नहीं होता, उस ह़कीम عَزَّوَجَلَّ

(1)....ख़ज़ाइनुल इ़रफ़ान, पारह 15, सूरए बनी इस्राईल, तह़्तल आयत, 1, स. 525
(2)....कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब, स. 227

www.dawateislami.net

के हर काम में बे शुमार हिक्मतें होती हैं अगर्चे हमारी अ़क़्लें उसे समझने से क़ासिर हैं। यक़ीनन अपने महबूब عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को **मे'राज** कराने के सिलसिले में भी उस की बेशुमार हिक्मतें होंगी, यहां बिल्कुल ज़ाहिर सिर्फ़ चार(4) हिक्मतें बयान की जाती हैं चुनान्चे, मुफ़स्सिरे शहीर, हकीमुल उम्मत हज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नई़मी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْغَنِى फ़रमाते हैं :

(1)....तमाम मो'जिज़ात और दरजात जो अम्बिया को अ़लाहिदा अ़लाहिदा अ़ता फ़रमाए गए वोह तमाम बल्कि उन से बढ़ कर हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को अ़ता हुवे। इस की बहुत सी मिसालें हैं : हज़रते मूसा कलीमुल्लाह (عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) को येह दरजा मिला कि वोह कोहे तूर पर जा कर रब (عَزَّوَجَلَّ) से कलाम करते थे, हज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام चौथे आस्मान पर बुलाए गए और हज़रते इदरीस عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام जन्नत में बुलाए गए तो हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को **मे'राज** दी गई जिस में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से कलाम भी हुवा, आस्मान की सैर भी हुई, जन्नत व दोज़ख़ का मुआ़इना भी हुवा ग़रज़ कि वोह सारे मरातिब एक **मे'राज** में तै़ करा दिये गए।

(2).....तमाम पैग़म्बरों ने **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) की और जन्नत व दोज़ख़ की गवाहियां दीं और अपनी अपनी उम्मतों से पढ़वाया कि اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه मगर उन हज़रात में से किसी की गवाही देखी हुई न थी सुनी हुई थी और गवाही की इन्तिहा देखने पर होती है तो

www.dawateislami.net

ज़रूरत थी कि इस जमाअ़ते पाक अम्बिया में कोई हस्ती वोह भी हो कि उन तमाम चीज़ों को देख कर गवाही दे, उस की गवाही पर शहादत की तक्मील हो जाए । येह शहादत की तक्मील हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की ज़ात पर हुई ।

(3)....रब तआ़ला ने फ़रमाया :

اِنَّ اللّٰهَ اشْتَرٰى مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ اَنْفُسَهُمْ وَ اَمْوَالَهُمْ بِاَنَّ لَهُمُ الْجَنَّةَ ؕ (پ۱۱، التوبة: ۱۱۱)

या'नी **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) *ने मुसलमानों की जान व माल ख़रीद लिये जन्नत के बदले में ।*

अल्लाह तआ़ला मुसलमानों की जान व माल का ख़रीदार, मुसलमान फ़रोख़्त करने वाले और येह सौदा हुवा हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की मा'रिफ़त से और जिस की मा'रिफ़त से सौदा हो वोह माल को भी देखे और क़ीमत को भी । फ़रमाया गया : ऐ महबूब ! तुम ने मुसलमानों की जान व माल तो देख लिये, आओ ! जन्नत को भी देख जाओ और गुलामों की इमारतें और बाग़ात वग़ैरा भी मुलाहज़ा कर लो बल्कि ख़रीदार को भी देख लो या'नी खुद परवर दगार की ज़ात को भी ।

(4)...हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام तमाम ममलुकते इलाहिय्या के ब अ़ताए इलाही मालिक हैं इसी लिये जन्नत के पत्ते पत्ते पर, हूरों की आंखों में ग़रज़ कि हर जगह लिखा हुवा है : لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ या'नी येह कि चीज़ें **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) की बनाई हुई हैं और مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ को दी हुई हैं :

www.dawateislami.net

मैं तो मालिक ही कहूंगा कि हो मालिक के ह़बीब
या 'नी महबूबो मुह़िब में नहीं मेरा तेरा (1)

मर्ज़िये इलाही येह थी कि मालिक को उस की मिल्किय्यत दिखा दी जावे । صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم (2)

मे'राज शरीफ़ कितनी बार हुई ?

मे'राज शरीफ़ बेदारी की ह़ालत में, जिस्म और रूह़ के साथ सिर्फ़ एक बार हुई, हां ! रूह़ानी तौ़र पर बहुत दफ़्आ़ हुई । ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा अह़मद बिन मुह़म्मद क़स्त़लानी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه नक़्ल फ़रमाते हैं, बा'ज़ आ़रिफ़ीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن का फ़रमान है कि सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को **34** मरतबा **मे'राज** हुई इन में से एक जिस्म के साथ और बाक़ी रूह़ के साथ ख़्वाबों की सूरत में हुई ।(3)

क्या दीगर अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को भी मे'राज हुई ?

जैसी **मे'राज** हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को कराई गई और इस में जो ख़साइस व मरातिब आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अ़त़ा हुवे, येह आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ ही ख़ास है किसी और को ऐसी **मे'राज** नहीं हुई । बा'ज़ उ़लमा फ़रमाते हैं : तमाम अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को उन के मक़ाम व मर्तबे के मुत़ाबिक़ **मे'राज** कराई गई है । चुनान्चे, क़ुरआने

(1)....ह़दाइक़े बख़्शिश, ह़िस्सा अव्वल, स. **16**
(2).....शाने ह़बीबुर्रह़मान, स. **106**, मुलतक़त़न
(3)...المواهب اللدنية، المقصد الخامس، ٢/ ٣٤١.

www.dawateislami.net

करीम में ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के मुतअ़ल्लिक़ है :

وَ كَذٰلِكَ نُرِیْۤ اِبْرٰهِیْمَ مَلَكُوْتَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَ لِیَكُوْنَ مِنَ الْمُوْقِنِیْنَ ﴿۷۵﴾

(پ۷، الانعام: ۷۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और इसी त़रह़ हम इब्राहीम को दिखाते हैं सारी बादशाही आस्मानों और ज़मीन की और इस लिये कि वोह ऐनुल यक़ीन वालों में हो जाए।*

इस आयत में ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की **मे'राज** का ज़िक्र है। मुफ़स्सिरीने किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को सख़रा (एक चट्टान) पर खड़ा किया गया और आप के लिये समावात मकशूफ़ किये (खोल दिये) गए, यहां तक कि आप ने अ़र्श व कुरसी और आस्मानों के तमाम अ़जाइब और जन्नत में अपने मक़ाम का मुआ़इना फ़रमाया, आप के लिये ज़मीन कश्फ़ फ़रमा दी गई यहां तक कि आप ने सब से नीचे की ज़मीन तक नज़र की और ज़मीनों के तमाम अ़जाइब देखे।[1]

क्या दीगर अम्बिया عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام भी बुराक़ पर सुवार हुवे ?

अगर्चे दीगर अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने भी बुराक़ पर सुवारी फ़रमाई है जैसा कि मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام मक्कतुल मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا में अपने शहज़ादे ह़ज़रते इस्माईल عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام

(1)...کتاب المعراج، باب ذکر الاسئلۃ فی المعراج، ص ۷٤.

व ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह 7, सूरतुल अन्आ़म, तह़्तल आयत : 75, स. 262

www.dawateislami.net

से मुलाक़ात फ़रमाने के लिये बुराक़ पर सुवार हो कर तशरीफ़ लाते थे।[1] ताहम इस में भी आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की खुसूसिय्यत के पहलू मौजूद हैं चुनान्चे,

۞.....हज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा नूरुद्दीन अ़ली बिन इब्राहीम हल्बी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इस पर सुवारी के वक़्त येह ता हद्दे निगाह (जहां तक नज़र पहुंचती वहां) अपना क़दम रखता था जब कि पहले के अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام जब इस पर सुवार हुवे उस वक़्त इस की येह रफ़्तार नहीं थी।

۞.....एक रिवायत के मुताबिक़ हश्र में सिर्फ़ प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बुराक़ की सुवारी फ़रमाएंगे, चुनान्चे, मरवी है कि एक दफ़्आ़ हुज़ूर सय्यिदुल मुर्सलीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : हज़रते सालेह عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के लिये नाक़ए समूद[2] उठाया जाएगा, वोह अपनी क़ब्र से उस पर सुवार हो कर मैदाने हश्र में आएंगे। इस पर हज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अ़र्ज़ गुज़ार हुवे : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपनी मुक़द्दस ऊंटनी पर सुवार होंगे ? फ़रमाया :

---

(1)...فتح الباری، کتاب مناقب الانصار، باب المعراج، ۷/۲۰۹، تحت الحدیث: ۳۸۸۷.

(2).....नाक़ए समूद से मुराद वोह ऊंटनी है जो हज़रते सय्यिदुना सालेह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की दुआ़ से बतौरे मो'जिज़ा एक पथ्थर से पैदा हुई थी, क़ौमे समूद को इस ऊंटनी को मारने से मन्अ़ किया गया था, मगर उन्हों ने सरकशी की और इस के पाउं काट दिये जिस की वजह से उन पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का अ़ज़ाब नाज़िल हुवा।
(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह 8, सूरतुल अनआ़म, तहूतल आयत 73, स. 302 मुलख़्ख़सन)

www.dawateislami.net

नहीं, इस पर तो मेरी साहिब ज़ादी सुवार होगी और मैं बुराक़ पर तशरीफ़ रखूंगा कि उस रोज़ सब अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से अलग ख़ास मुझ ही को अ़ता होगा।[1]

ज़मीन से सिद्रतुल मुन्तहा का फ़ासिला

सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : "ज़मीन से सिद्रतुल मुन्तहा तक पचास हज़ार बरस की राह है, इस से आगे मुस्तवा, इस के बा'द को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जाने ! इस से आगे अ़र्श के सत्तर ह़िजाबात हैं हर ह़िजाब से दूसरे ह़िजाब तक पान सो (500) बरस का फ़ासिला और इस से आगे अ़र्श और इन तमाम वुस्अ़तों में फ़िरिश्ते भरे हुवे हैं।[2]

दीदारे इलाही

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मे'राज की शब हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का दीदार भी किया जैसा कि पीछे बयान हो चुका, याद रहे कि दुन्या में जागती आंखों से परवर दगारे आ़लम عَزَّوَجَلَّ का दीदार सिर्फ़ और सिर्फ़ सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ ख़ास है किसी और को नहीं हो सकता, चुनान्चे, शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपनी मायानाज़ किताब **"कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब"** में इरशाद फ़रमाते हैं : दुन्या में जागती

(1)....फ़तावा रज़विय्या, 30/214

(2)....मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 439

www.dawateislami.net

आंखों से परवर दगार عَزَّوَجَلَّ का दीदार सिर्फ़ सिर्फ़ सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ख़ास्सा है लिहाज़ा अगर कोई शख़्स दुन्या में जागती हालत में दीदारे इलाही का दा'वा करे उस पर हुक्मे कुफ़्र है जब कि एक क़ौल इस बारे में गुमराही का भी है चुनान्चे, सय्यिदुना मुल्ला अ़ली क़ारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْبَارِی मिनहुर्रौज़ में लिखते हैं : अगर किसी ने कहा : "मैं **अल्लाह** तआ़ला को दुन्या में आंख से देखता हूं" येह कहना कुफ़्र है। मज़ीद लिखते हैं : जिस ने अपने लिये दीदारे ख़ुदावन्दी का दा'वा किया और येह बात सराह़त के साथ (या'नी बिल्कुल वाज़ेह़ तौर पर) की और किसी तावील की गुन्जाइश नहीं छोड़ी तो उस का येह ए'तिक़ाद फ़ासिद और दा'वा ग़लत़ है, वोह गुमराही के गढ़े में है और दूसरे को गुमराह करता है।[1] हां ! ख़्वाब में दीदारे इलाही मुमकिन है चुनान्चे, मन्क़ूल है कि हमारे इमामे आ'ज़म, फ़क़ीहे अफ़्ख़म, शमसुल अइम्मा, सिराजुल उम्मा, ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ह़नीफ़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने सो बार ख़्वाब में परवर दगारे आ़लम عَزَّوَجَلَّ के दीदार की सआ़दत ह़ासिल की।[2]

❁❁❁❁❁

---

(1)....कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब, स. 228

ومنح الروض، ص٣٥٤و٣٥٦.

(2)...الخيرات الحسان، ص٩٥.

www.dawateislami.net

शबे मे'राज के मुशाहदात

शबे **मे'राज** प्यारे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने काइनात की सैर फ़रमाते हुवे करोड़ों अ़जाइबाते क़ुदरत मुलाह़ज़ा फ़रमाए, जन्नत में तशरीफ़ ले जा कर अपने ग़ुलामों के जन्नती मह़ल और मक़ामात भी मुलाह़ज़ा फ़रमाए नीज़ जहन्नम को मुआ़यना फ़रमा कर जहन्नमियों को होने वाले दर्दनाक अ़ज़ाब भी देखे और फिर इन में से बहुत कुछ उम्मत की तरग़ीब व तरहीब के लिये बयान फ़रमा दिया ताकि नेक और अच्छे आ'माल करने के ज़रीए़ लोग जहन्नम से बचने की तदबीर करें और जन्नत की लाज़वाल ने'मतों का सुन कर उन तक रसाई पाने के लिये कोशां हों। आइये ! इन में से चन्द एक वाक़िआ़त व मुशाहदात मुलाह़ज़ा कीजिये, चुनान्चे,

इन्आ़माते इलाही से मुतअ़ल्लिक़

.....जन्नत के दरवाज़े पर क्या लिखा था....?

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है, फ़रमाते हैं कि रसूले करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिस रात मुझे **मे'राज** हुई मैं ने जन्नत के दरवाज़े पर येह लिखा हुवा देखा कि **सदक़े का सवाब दस गुना और क़र्ज़ का 18 गुना है**। मैं ने जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام से दरयाफ़्त किया : क्या सबब है कि क़र्ज़ का दरजा सदक़े से बढ़ गया है ? उन्हों ने कहा कि साइल के पास माल होता है और फिर भी सुवाल करता है जब कि क़र्ज़ लेने वाला ह़ाजत की बिना पर ही क़र्ज़ लेता है।[1]

(1)...سنن ابن ماجه، كتاب الصدقات، باب القرض، ص ٣٨٩، الحديث: ٢٤٣١.

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दीने इस्लाम हमें मुसलमानों की ख़ैरख़्वाही का दर्स देता है, एक दूसरे से हमदर्दी का पैग़ाम देता है और इस बात की त़रफ़ हमारी रहनुमाई करता है कि अगर कभी कोई मुसलमान किसी परेशानी व मुसीबत का शिकार हो जाए तो उस से मुंह मोड़ने के बजाए परेशानी से निकलने में उस की मदद करनी चाहिये और अगर माली त़ौर पर किसी को आज़माइश का सामना हो तो तोह़्फ़े की सूरत में या क़र्ज़े ह़सना दे कर उसे इस से बाहर निकालना चाहिये, फिर इन आ'माले ह़सना पर बे शुमार अज्रो सवाब की बिशारतें भी अ़त़ा फ़रमाई ताकि मुसलमानों को इन में ख़ूब ख़ूब रग़बत हो और वोह सवाबे आख़िरत को पेशे नज़र रखते हुवे हर दुख दर्द में अपने मुसलमान भाई का साथ दें। लेकिन आह ! फ़ी ज़माना मुसलमानों में एक दूसरे की ख़ैर ख़्वाही की सोच बिल्कुल ख़त्म होती जा रही है, मालो दौलत का इन्हें ऐसा नशा चढ़ा है कि एक दूसरे से तआ़वुन का जज़्बा ही दम तोड़ता जा रहा है। ऐ काश ! हम ह़क़ीक़ी मा'नों में इस्लाम की ता'लीमात पर अ़मल पैरा हो जाएं और हर मुसलमान भाई की परेशानी को अपनी परेशानी समझ कर दूर करने की कोशिश करें कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रसूले करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो किसी मुसलमान से दुन्या की तक्लीफ़ों में से एक तक्लीफ़ दूर कर दे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की क़ियामत के दिन की तक्लीफ़ों में से एक तक्लीफ़ दूर

www.dawateislami.net

फ़रमाएगा, जो किसी तंगदस्त पर दुन्या में आसानी करे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ दुन्या व आख़िरत में उस पर आसानी फ़रमाएगा, जो दुन्या में किसी मुसलमान की पर्दा पोशी करे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की दुन्या व आख़िरत में पर्दा पोशी फ़रमाएगा और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बन्दे की मदद में रहता है जब तक बन्दा अपने भाई की मदद में रहता है।[1]

۞....मोतियों से बने हुवे गुम्बद नुमा ख़ैमे

जन्नत में आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मोतियों से बने हुवे गुम्बद नुमा ख़ैमे मुलाहज़ा फ़रमाए जिन की मिट्टी मुश्क थी। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام से दरयाफ़्त फ़रमाया : لِمَنْ هٰذَا يَا جِبْرِيْل "या'नी ऐ जिब्रील ! येह किस के लिये हैं ?" अ़र्ज़ किया : ऐ मुहम्मद (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) येह आप (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की उम्मत के अइम्मा और मुअज़्ज़िनीन के लिये हैं।[2]

سُبْحٰنَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ रिज़ाए इलाही के लिये अज़ान देने और इमामत करने की क्या ख़ूब फ़ज़ीलत है कि रब तआ़ला ने उन के लिये जन्नत में मोतियों से बने हुवे ख़ैमे तय्यार कर रखे हैं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें भी तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। आइये ! इस बारे में मज़ीद रिवायात मुलाहज़ा कीजिये, चुनान्चे,

۞.....मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ख़ुश गवार है : सवाब की ख़ातिर अज़ान देने वाला उस शहीद की

(1)...سنن الترمذی، کتاب البر والصلة، باب ماجاء فی السترة...الخ، ص٤٧٣، الحدیث: ١٩٣٠

(2)...المسند للشاشی، مسند عبادة بن الصامت، ٣/٣٢١، الحدیث: ١٤٢٨.

www.dawateislami.net

मानिन्द है जो ख़ून में लिथड़ा हुवा है और जब मरेगा क़ब्र में उस के जिस्म में कीड़े नहीं पड़ेंगे।(1)

۞.....सुल्ताने मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है : जिस ने पांचों 5 नमाज़ों की अज़ान ईमान की बिना पर ब निय्यते सवाब कही उस के जो गुनाह पहले हुवे हैं मुआ़फ़ हो जाएंगे और जो ईमान की बिना पर सवाब के लिये अपने साथियों की पांच 5 नमाज़ों में इमामत करे उस के पिछले गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाएंगे।(2)

۞...बुलन्दो बाला मह़ल्लात

मरवी है कि जन्नत में आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने चन्द बुलन्दो बाला मह़ल्लात मुलाह़ज़ा फ़रमाए जिन के बारे में पूछने पर ह़ज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام ने अ़र्ज़ किया कि येह **ग़ुस्सा पीने वालों** और **लोगों से अ़फ़्वो दर गुज़र करने वालों** के लिये हैं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ एह़सान करने वालों को पसन्द फ़रमाता है।(3)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ग़ुस्सा ग़ैर इख़्तियारी शै है, येह नफ़्स के उस जोश को कहते हैं जो बदला लेने पर उभारता है और इस से सीने में इन्तिक़ाम की आग भड़क उठती है। ऐसे में जो शख़्स अपने आप को क़ाबू में रखे और अ़फ़्वो दर गुज़र से काम ले, अह़ादीस में इस के बहुत से फ़ज़ाइल वारिद हैं जिन में से एक फ़ज़ीलत तो अभी बयान हुई, आइये ! अब मज़ीद

(1)...الترغیب والترھیب، کتاب الصلاۃ، الترغیب فی الاذان...الخ، ص۹۰، الحدیث:۲۴.

(2)...کنز العمال، کتاب الصلاۃ، قسم الاقوال، الفصل الرابع...الخ، ۲۸۹/۷، الحدیث:۲۰۹۰۲

(3)...مسند الفردوس، باب الراء، ۲/۲۵۵، الحدیث:۳۱۸۸.

www.dawateislami.net

फ़ज़ाइल मुलाहज़ा कीजिये, चुनान्चे सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है : जिस ने गुस्से को ज़ब्त कर लिया हालांकि वोह इसे नाफ़िज़ करने पर क़ादिर था तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बरोज़े क़ियामत उस को तमाम मख़्लूक़ के सामने बुलाएगा और इख़्तियार देगा कि जिस हूर को चाहे ले ले।(1)

और एक मक़ाम पर फ़रमाया : मेरी उम्मत के बेहतरीन लोग वोह हैं कि जब उन्हें गुस्सा आ जाए तो फ़ौरन रुजूअ़ कर लेते हैं।(2)

गुस्सा बिल्कुल न आए तो....?

याद रखिये ! गुस्सा ब ज़ाते खुद बुरा नहीं, हां ! गुस्से में आ कर शरीअ़त की नाफ़रमानी करना मज़मूम व नाजाइज़ है। सहीह मौक़अ़ पर गुस्सा आना भी ज़रूरी है, ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़जर मक्की عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى फ़रमाते हैं : गुस्से में तफ़रीत़ या'नी इस क़दर कम आना कि बिल्कुल ही ख़त्म हो जाए या फिर येह जज़्बा ही कमज़ोर पड़ जाए तो येह एक मज़मूम सिफ़त है क्यूंकि ऐसी सूरत में बन्दे की मुरव्वत और ग़ैरत ख़त्म हो जाती है और जिस में ग़ैरत या मुरव्वत न हो वोह किसी क़िस्म के कमाल का अहल नहीं होता क्यूंकि ऐसा शख़्स औरतों बल्कि ह़शरातुल अर्द (या'नी ज़मीनी कीड़े मकोड़ों) के मुशाबेह होता है। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى फ़रमाते हैं : जिसे गुस्सा दिलाया गया और वोह गुस्से में न आया तो वोह गधा है और जिसे राज़ी करने की कोशिश की गई और वोह राज़ी न हुवा तो वोह शैत़ान है।(3)

(1)...سنن ابی داود، کتاب الادب، باب من کظم غیظا، ص ۷۵۲، الحدیث: ٤٧٧٧.

(2)...المعجم الاوسط للطبرانی، باب المیم، من اسمه محمد، ٤/ ٢٢٤، الحدیث: ٥٧٩٣.

(3)...الزواجر، الباب الاول، الکبیرة الثالثة، الغضب بالباطل...الخ، ١/ ١٠٣.

www.dawateislami.net

....शाने सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

मे'राज की बा बरकत रात जब प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जन्नत में तशरीफ़ लाए तो रेशम के पर्दों से आरास्ता एक महल मुलाहज़ा फ़रमाया। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हज़रते जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلَام से दरयाफ़्त फ़रमाया : ऐ जिब्राईल ! येह किस के लिये है ? अ़र्ज़ किया : हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के लिये ![1]

سُبْحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ आ़शिक़े अक्बर हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की क्या ख़ूब शान है ! याद रहे कि नबियों और रसूलों عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के बा'द आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सब से अफ़्ज़ल हैं। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के फ़ज़ाइल बे शुमार हैं, रसूले करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर मर्दों में सब से पहले आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ही ईमान लाए, सफ़र व ह़ज़र में प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ रहे, प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की हमराही में ही हिजरत की सआ़दत ह़ासिल की और फ़नाफ़िर्रसूल के उस मक़ाम पर फ़ाइज़ हुवे कि अपना माल, जान, अवलाद, वत़न अल ग़रज़ हर शै रसूले नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर क़ुरबान कर दी। येही वजह है कि बारगाहे ख़ुदा व मुस्त़फ़ा عَزَّوَجَلَّ وصَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बहुत बुलन्द मरातिब पाए और ढेरों ढेर इन्आ़माते इलाहिया के ह़क़दार भी हुवे।

(1)... الریاض النضرۃ، الباب الاول فی مناقب ابی بکر، الفصل الحادی عشر، ۲/۱۱۰.

www.dawateislami.net

बयां हो किस ज़बान से मर्तबा सिद्दीक़े अक्बर का
है यारे ग़ार महबूबे ख़ुदा, सिद्दीक़े अक्बर का
रुसुल और अम्बिया के बा'द जो अफ़्ज़ल हो आ़लम से
येह आ़लम में है किस का मर्तबा ? सिद्दीक़े अक्बर का (1)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

....ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के क़दमों की आहट

जन्नत की सैर के दौरान सरदारे दो जहान, रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने किसी के क़दमों की आहट समाअ़त फ़रमाई जिस के बारे में आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को बताया गया कि येह **ह़ज़रते बिलाल** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं ! (2)

क़ुरबान जाइये ! क्या शान है मुअज़्ज़िने रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाले ह़बशी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की, कि प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इन के क़दमों की आहट जन्नत में समाअ़त फ़रमा रहे हैं । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को येह मक़ाम किस अ़मल के सबब ह़ासिल हुवा ? आइये ! मुलाह़ज़ा कीजिये : ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, फ़रमाते हैं कि (एक दफ़्आ़) सरकारे आ़ली वक़ार, महबूबे रब्बे ग़फ़्फ़ार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़ज्र के वक़्त ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से फ़रमाया : ऐ बिलाल ! मुझे बताओ तुम ने इस्लाम में कौन सा ऐसा अ़मल किया है जिस पर सवाब की उम्मीद सब से ज़ियादा है क्यूंकि मैं ने जन्नत में अपने आगे तुम्हारे क़दमों

---

(1).....ज़ोक़े ना'त, स. 57.

(2)...مشکاۃ المصابیح کتاب المناقب، باب مناقب عمر، ۲/۴۱۸، الحدیث: ۶۰۳۷، ملتقطًا

www.dawateislami.net

की आहट सुनी है। अ़र्ज़ किया : मैं ने अपने नज़दीक कोई उम्मीद अफ़ज़ा काम तो नहीं किया। हां ! मैं ने दिन रात की जिस घड़ी भी वुज़ू या ग़ुस्ल किया तो इस क़दर नमाज़ पढ़ ली जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मेरे मुक़द्दर में की थी।[1]

शर्हे़ ह़दीस

ऊपर ज़िक्र की गई ह़दीस की शर्ह़ करते हुवे ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِي फ़रमाते हैं : ग़ालिब येह है कि हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को किसी शब ख़्वाब में **मे'राज** हुई तब इस के सवेरे को ह़ज़रते बिलाल (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه) से येह सुवाल फ़रमाया क्यूंकि जिस्मानी **मे'राज** के सवेरे तो फ़ज्र जमाअ़त से पढ़ी न थी या येह सब हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जिस्मानी **मे'राज** में मुलाह़ज़ा फ़रमाया था मगर येह सुवाल किसी और दिन फ़ज्र की नमाज़ के बा'द फ़रमाया। येह ही मा'ना ज़ियादा ज़ाहिर है। मज़ीद फ़रमाते हैं : ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه का हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से आगे जन्नत में जाना ऐसा है जैसे नोकर चाकर बादशाहों के आगे **हटो-बचो** करते हुवे चलते हैं। मत़लब येह है कि ऐ बिलाल ! तुम ने ऐसा कौन सा काम किया जिस से तुम को मेरी येह ख़िदमत मयस्सर हुई ? ख़याल रहे कि **मे'राज** की रात न तो ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه, हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ जन्नत में गए न आप को **मे'राज** हुई बल्कि हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस रात वोह वाक़िआ़ मुलाह़ज़ा

(1)...صحیح المسلم، کتاب فضائل الصحابة، باب من فضائل بلال، ص۹۵۷، الحدیث: ۲۴۵۸.

www.dawateislami.net

फ़रमाया जो क़ियामत के बा'द होगा कि तमाम ख़ल्क़ से पहले हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जन्नत में दाख़िल होंगे इस त़रह़ कि ह़ज़रते बिलाल (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه) ख़ादिमाना हैसिय्यत से आगे आगे होंगे। इस से चन्द मस्अले मा'लूम हुवे एक येह कि **अल्लाह** तआ़ला ने हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को लोगों के अन्जाम पर ख़बरदार किया कि कौन जन्नती है और कौन दोज़ख़ी और कौन किस दरजे का जन्नती, दोज़ख़ी है, येह उ़लूमे ख़मसा में से हैं और दूसरे येह कि हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के कान व आंख लाखों बरस बा'द होने वाले वाक़िआ़त को सुन लेते हैं, देख लेते हैं येह वाक़िआ़ उस तारीख़ से कई लाख साल बा'द होगा मगर क़ुरबान उन कानों के आज ही सुन रहे हैं। तीसरे येह कि इन्सान जिस ह़ाल में ज़िन्दगी गुज़ारेगा उसी ह़ाल में वहां होगा ह़ज़रते बिलाल (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه) ने अपनी ज़िन्दगी हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में गुज़ारी वहां भी ख़ादिम हो कर ही उठे।

और ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के फ़रमान के "मैं ने दिन रात की जिस घड़ी भी वुज़ू या ग़ुस्ल किया तो इस क़दर नमाज़ पढ़ ली जो मेरे मुक़द्दर में थी" की वज़ाह़त करते हुवे मुफ़्ती साह़िब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : या'नी दिन रात में जब भी मैं ने वुज़ू या ग़ुस्ल किया तो दो नफ़्ल **तह़िय्यतुल वुज़ू** पढ़ लिये। मगर यहां अवक़ाते ग़ैरे मकरूह़ में पढ़ना मुराद है ताकि येह ह़दीस मुमानअ़त की अह़ादीस के ख़िलाफ़ न हो। ख़याल रहे कि हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ह़ज़रते बिलाल (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه) से येह पूछना इस लिये था ताकि आप येह जवाब दें और उम्मत इस पर अ़मल

www.dawateislami.net

करे, वरना हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तो हर शख़्स के हर छुपे खुले अ़मल से वाक़िफ़ हैं नीज़ येह दरजा सिर्फ़ ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को उन नवाफ़िल का है हज़ारहा आदमी येह नवाफ़िल पढ़ेंगे या पाबन्दी करेंगे मगर उन्हें येह ख़िदमत नसीब नहीं।(1)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

....ज़बरजद और याक़ूत के ख़ैमे

जन्नत की ह़सीनो जमील और प्यारी वादियों की सैर फ़रमाते हुवे प्यारे आक़ा, मीठे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक नह्र पर तशरीफ़ लाए जिसे बैज़ख़ कहा जाता है। उस पर मोतियों, सब्ज़ ज़बरजद और सुर्ख़ याक़ूत के ख़ैमे थे। इतने में एक आवाज़ आई : اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللهِ

आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام से दरयाफ़्त फ़रमाया कि ऐ जिब्रील ! येह कैसी आवाज़ है ? अ़र्ज़ किया : येह ख़ैमों में पर्दा नशीन ह़ूरें हैं, इन्हों ने अपने रब عَزَّوَجَلَّ से आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को सलाम कहने की इजाज़त त़लब की थी और रब तआ़ला ने इन्हें इजाज़त अ़त़ा फ़रमा दी। फिर वोह (ह़ूरें) कहने लगीं : हम ख़ुश रहने वालियां हैं कभी नागवारी व नफ़रत का बाइ़स न होंगी और हम हमेशा रहने वालियां हैं कभी फ़ना न होंगी।(2)

मुद्दत से जो अरमान था वोह आज निकाला
ह़ूरों ने किया ख़ूब नज़ारा शबे मे'राज(3)

---

(1)...मिरआतुल मनाजीह़, **मे'राज** का बयान, पहली फ़स्ल **2/300**

(2)...الدر المنثور، سورۃ الرحمن، تحت الآیۃ: ۷۲، ۱۴/ ۱۶۱.

(3)....क़बालए बख़्शिश, स. **84**.

www.dawateislami.net

....नूर में छुपा हुवा आदमी

सफ़रे **मे'राज** की सुहानी रात प्यारे प्यारे आक़ा, मीठे मीठे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का गुज़र एक ऐसे शख़्स के पास से हुवा जो अ़र्श के नूर में छुपा हुवा था। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : येह कौन है ? क्या कोई फ़िरिश्ता है ? कहा गया : नहीं। फ़रमाया : कोई नबी हैं ? कहा गया : नहीं। पूछा : फिर येह कौन है ? बताया गया : येह वोह शख़्स है कि दुन्या में इस की ज़बान ज़िक्रे इलाही से तर रहती थी, इस का दिल मस्जिदों में लगा रहता था और येह कभी अपने वालिदैन को बुरा कहे जाने या उन की बे इ़ज़्ज़ती की जाने का सबब नहीं बना।[1]

سُبْحٰنَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ इस रिवायत से पता चलता है कि ज़िक्रे इलाही की कसरत, मसाजिद से मह़ब्बत और वालिदैन के लिये बुराई का सबब बनने से बचना, येह तीनों आ'माल **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में बहुत ही मह़बूब हैं। इस रिवायत में इस बात की तरग़ीब मौजूद है कि इन्सान गाली गलोच, लड़ाई झगड़ा, नशा बाज़ी, जूआ वग़ैरा किसी भी ऐसे फ़े'ल का हरगिज़ मुर्तकिब न हो जो उस के वालिदैन के लिये त़ा'न व तशनीअ़ और बे इ़ज़्ज़ती का बाइ़स बने और ह़श्र के रोज़ ख़ुद उसे भी शर्मिन्दगी का सामना करना पड़े।

---

(1) ...موسوعة الامام ابن ابی الدنیا، کتاب الاولیا، ۲/ ۴۱۵، الحدیث: ۹۵.

www.dawateislami.net

.....राहे ख़ुदा में जिहाद

मे'राज की शब ताजदारे काइनात, शहनशाहे मौजूदात صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم कुछ ऐसे लोगों के पास तशरीफ़ लाए जो एक दिन काश्त करते और अगले दिन फ़स्ल काटते थे, जब भी वोह फ़स्ल काटते तो वोह पहले की त़रह़ लौट आती। ह़ज़रते जिब्रीले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام ने अ़र्ज़ किया : येह राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में जिहाद करने वाले हैं, इन की नेकियों में **700** गुना तक इज़ाफ़ा कर दिया गया है और इन्हों ने जो कुछ ख़र्च किया **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इस का इन्हें बदला अ़त़ा फ़रमाएगा।[1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अ़ज़ाबे इलाही से मुतअ़ल्लिक़

मे'राज की रात ज़मीनो आस्मान की सैर के दौरान प्यारे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जहां मुत़ीअ़ व फ़रमां बरदार बन्दों पर होने वाले इन्आ़माते इलाहिय्या का मुशाहदा फ़रमाया तो नाफ़रमानों को क़हरे इलाही में गिरिफ़्तार भी देखा, जो अपने गुनाहों की पादाश (सज़ा) में इन्तिहाई दर्दनाक अ़ज़ाबों में मुब्तला थे। उन तमाम अ़ज़ाबों में से चन्द अ़ज़ाब ग़ीबत के भी थे, जैसा कि

ग़ीबत के चार अ़ज़ाब

...अपना ही गोश्त खाने वाले लोग

मरवी है : **मे'राज** की रात सरवरे काइनात, शाहे मौजूदात صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का गुज़र कुछ ऐसे लोगों पर हुवा जिन पर कुछ

(1)...مجمع الزوائد، كتاب الايمان، باب منه فى الاسراء، ١/ ٩١، الحديث: ٢٣٥.

www.dawateislami.net

अफ़राद मुक़र्रर थे, इन में से बा'ज़ अफ़राद ने उन लोगों के जबड़े खोल रखे थे और बा'ज़ दूसरे अफ़राद उन का गोश्त काटते और ख़ून के साथ ही उन के मुंह में धकेल देते । प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दरयाफ़्त फ़रमाया कि ऐ जिब्रील ! येह कौन लोग हैं ? अ़र्ज़ किया : येह लोगों की ग़ीबतें और उन की ऐ़बजोई करने वाले हैं ।(1)

....मुर्दार ख़ोर जहन्नमी

एक रिवायत में है कि जब सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जहन्नम में देखा तो वहां कुछ ऐसे लोग नज़र आए जो मुर्दार खा रहे थे । आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दरयाफ़्त फ़रमाया कि ऐ जिब्रील ! येह कौन लोग हैं ? अ़र्ज़ किया : येह वोह हैं जो लोगों का **गोश्त खाते** (या'नी **ग़ीबत करते**) थे ।(2)

.....सीनों से लटके हुवे लोग

एक और रिवायत में है कि **मे'राज** की शब आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم कुछ ऐसी औ़रतों और मर्दों के पास से गुज़रे जो अपनी छातियों के साथ लटक रहे थे । आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने पूछा : ऐ जिब्राईल ! येह कौन लोग हैं ? अ़र्ज़ की : येह मुंह पर ऐ़ब लगाने वाले और पीठ पीछे बुराई करने वाले हैं और इन के मुतअ़ल्लिक़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :(3)

(1)...مسند الحارث، کتاب الایمان، باب ماجاء فی الاسراء، ۱/۱۷۲، الحدیث: ۲۷.

(2)...مسند احمد، مسند عبد اللہ بن العباس...الخ، ۲/۱٤٤، الحدیث: ۲۳٦٦.

(3)...شعب الایمان، الرابع والاربعون من شعب الایمان، ٥/۳۰۹، الحدیث: ٦۷٥۰.

www.dawateislami.net

وَيۡلٌ لِّكُلِّ هُمَزَةٍ لُّمَزَةِۣ ۙ﴿۱﴾
(پ۳۰، الھمزۃ:۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ख़राबी है उस के लिये जो लोगों के मुंह पर ऐब करे, पीठ पीछे बदी करे।*

.....तांबे के नाखुन

अबू दावूद शरीफ़ में है कि सरकारे दो आलम नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : मैं शबे **मे'राज** ऐसे लोगों के पास से गुज़रा जो अपने चेहरों और सीनों को तांबे के नाखुनों से नौच रहे थे। मैं ने पूछा : ऐ जिब्राईल ! येह कौन लोग हैं ? कहा : येह लोगों का गोश्त खाते (या'नी ग़ीबत करते) और उन की इज़्ज़त ख़राब करते थे।[1]

औरतें ज़ियादा ग़ीबत करती हैं

मुफ़स्सिरे शहीर, हकीमुल उम्मत हज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَنِی इस ह़दीस शरीफ़ के तह़्त फ़रमाते हैं : उन पर ख़ारिश का अ़ज़ाब मुसल्लत़ कर दिया गया था और नाखुन तांबे के धारदार और नोकीले थे, उन से सीने, चेहरा खुजलाते थे और ज़ख़्मी होते थे। ख़ुदा (عَزَّوَجَلَّ) की पनाह ! येह अ़ज़ाब सख़्त अ़ज़ाब है, येह वाक़िआ़ बा'दे क़ियामत होगा जो हुज़ूरे अन्वर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ने आंखों से देखा। मज़ीद फ़रमाते हैं : या'नी येह लोग मुसलमानों की ग़ीबत करते थे, उन की आबरू रैज़ी

(1)...سنن ابی داؤد، کتاب الادب، باب فی الغیبۃ، ص ۷۶۵، الحدیث:۴۸۷۸

www.dawateislami.net

(इ़ज़्ज़त ख़राब) करते थे येह काम औ़रतें ज़ियादा करती हैं उन्हें इस से इ़ब्रत लेनी चाहिये ।[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ग़ीबत करने का अन्जाम किस क़दर तबाह कुन है, बरोज़े क़ियामत ग़ीबत करने वाले को कैसे कैसे **दर्दनाक अ़ज़ाबों** का सामना होगा, इस का तसव्वुर ही लर्ज़ा देने के लिये काफ़ी है। ग़ौर कीजिये ! अगर ग़ीबत कर के बिग़ैर तौबा किये मर गए और इन में से कोई दर्दनाक अ़ज़ाब मुसल्लत़ कर दिया गया तो क्यूंकर बरदाश्त कर सकेंगे ? इस लिये ग़ीबतों, चुग़लियों और दीगर गुनाहों भरी बातों से रिश्ता तोड़ कर **ह़म्दो ना 'त** से रिश्ता जोड़िये, हर लम्ह़ा हर घड़ी **यादे इलाही** में मगन रहिये और प्यारे प्यारे आक़ा, मीठे मीठे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ख़ूब ख़ूब **दुरूदो सलाम** के फूल निछावर कीजिये ।

गुनाहों से मुझ को बचा या इलाही
बुरी आ़दतें भी छुड़ा या इलाही
मुझे ग़ीबतो चुग़ली व बद गुमानी
की आफ़ात से तू बचा या इलाही
तुझे वासित़ा सारे नबियों का मौला
मेरी बख़्श दे हर ख़त़ा या इलाही [2]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

---

(1)...मिरआतुल मनाजीह़, बाब छुपे उ़यूब की तलाश...इल्ख़, पहली फ़स्ल, 6/619.

(2)....वसाइले बख़्शिश, स. 79 .

www.dawateislami.net

सूदख़ोरी के दो अ़ज़ाब

ग़ीबत की त़रह़ सूदख़ोरी भी इन्तिहाई मोहलिक और जान लेवा बीमारी है जो इन्सान के दिल में ख़ैर ख़्वाहिये मुस्लिम का जज़्बा मुर्दा कर देती है। **मे'राज** की रात आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जिन लोगों को अ़ज़ाब में मुब्तला देखा उन में वोह लोग भी थे जो सूदख़ोरी के सबब अ़ज़ाब में मुब्तला थे, चुनान्चे,

....पथ्थर ख़ोर आदमी

ह़ज़रते सय्यिदुना समुरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है, फ़रमाते हैं कि रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : **मे'राज** की रात मैं ने एक आदमी देखा जो नह्र में तैरते हुवे पथ्थर निगल रहा था। मैं ने पूछा : येह कौन है ? बताया गया कि येह सूदख़ोर है।[1]

....पेटों में सांप

और इब्ने माजा शरीफ़ में ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है, फ़रमाते हैं कि सरवरे ज़ीशान, मह़बूबे रह़मान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : **मे'राज** की रात मैं कुछ लोगों के पास आया जिन के पेट मकानों की त़रह़ (बड़े बड़े) थे और उन के अन्दर सांप बाहर से नज़र आ रहे थे। मैं ने पूछा : ऐ जिब्राईल ! येह कौन लोग हैं ? कहा : येह सूदख़ोर हैं।[2]

(1)...شعب الایمان، الثامن والثلاثون من شعب الایمان، ٤/ ٣٩١، الحدیث: ٥١٢١.

(2)...سنن ابن ماجه، کتاب التجارات، باب التغلیظ فی الربا، ص ٣٦٣، الحدیث: ٢٢٧٣.

www.dawateislami.net

शर्हे ह़दीस

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِی इस ह़दीस की शर्ह़ करते हुवे फ़रमाते हैं : "चूंकि सूद ख़्वार हवसी होता है कि खाता थोड़ा है ह़िर्स व हवस ज़ियादा करता है, इस लिये इन के पेट वाक़ेई कोठड़ियों की त़रह़ होंगे, लोगों के माल जो ज़ुल्मन वुसूल किये थे वोह सांप बिच्छु की शक्ल में नुमूदार होंगे। आज अगर एक मा'मूली कीड़ा पेट में पैदा हो जाए तो तन्दुरुस्ती बिगड़ जाती है, आदमी बे क़रार हो जाता है तो समझ लो कि जब उस का पेट सांपों, बिच्छूओं से भर जाए तो उस की तक्लीफ़ व बे क़रारी का क्या ह़ाल होगा....? रब (عَزَّوَجَلَّ) की पनाह !"(1)

दर्से इ़ब्रत

इन रिवायात से उन लोगों को दर्से इ़ब्रत लेना चाहिये जो सूद का लैन दैन करते हैं। ज़रा तसव्वुर कीजिये ! अगर इस नाफ़रमानी के सबब ख़ुदाए ज़ुल जलाल नाराज़ हो गया, बरोज़े ह़श्र सूद ख़ोरों के इन दर्दनाक अ़ज़ाबों में मुब्तला कर दिया गया, पेट में सांप और बिच्छू भर दिये गए तो क्या बनेगा....? उस वक़्त येह सूदी नफ़्अ़ कुछ काम न आएगा। लिहाज़ा अ़क़्ल मन्द को चाहिये कि दुन्या के ह़क़ीर और आ़रिज़ी नफ़्अ़ की ख़ात़िर ख़ुद को क़ब्रो आख़िरत के हौलनाक अ़ज़ाब का ह़क़दार हरगिज़ हरगिज़ न ठहराए।

(1)....मिरआतुल मनाजीह़, सूद का बाब, तीसरी फ़स्ल, 4/259.

www.dawateislami.net

....सर कुचले जाने का अ़ज़ाब

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! कुरआने करीम और अहादीसे त़य्यिबा नमाज़ की अहम्मिय्यत से माला माल हैं कि हर नमाज़ को उस के वक़्ते मुक़र्ररा में पाबन्दी के साथ अदा करने के बे शुमार फ़ज़ाइल और बिला उ़ज़्रे शरई कोताही करने की सख़्त सज़ाएं सुनाई हैं। **मे'राज** की रात हमारे प्यारे रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने कुछ ऐसे लोग भी मुलाह़ज़ा फ़रमाए जो नमाज़ में सुस्ती करने की वजह से अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार थे। आइये ! इसे मुलाह़ज़ा कीजिये और नमाज़ों की पाबन्दी का ज़ेह्न बनाइये। चुनान्चे, रिवायत में है कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ऐसे लोगों के पास तशरीफ़ लाए जिन के सर पथ्थरों से कुचले जा रहे थे, हर बार कुचले जाने के बा'द वोह पहले की त़रह़ दुरुस्त हो जाते थे और (दोबारा कुचल दिये जाते), इस मुआ़मले में उन से कोई सुस्ती न बरती जाती थी। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام से दरयाफ़्त फ़रमाया : ऐ जिब्राईल ! येह कौन लोग हैं ? अ़र्ज़ किया : येह वोह लोग हैं जिन के सर नमाज़ से बोझल हो जाते थे।[1]

.....आग की क़ैंचियां

मे'राज की रात नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मां, सय्याह़े ला मकां صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم कुछ और लोगों के पास तशरीफ़ लाए, उन के होंट आग की क़ैंचियों से काटे जा रहे थे और हर बार कांटने के बा'द वोह दुरुस्त हो जाते थे। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दरयाफ़्त फ़रमाया :

(1)...مجمع الزوائد، كتاب الايمان، باب منه فى الاسراء، ١/٩٢، الحديث: ٢٣٥.

www.dawateislami.net

ऐ जिब्रील ! येह कौन लोग हैं? अ़र्ज़ किया : येह आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत के ख़ुत़बा हैं, येह अपने कहे पर अ़मल नहीं करते थे और किताबुल्लाह (कुरआने करीम) पढ़ते थे लेकिन इस पर अ़मल नहीं करते थे ।[1]

इस रिवायत से उन मुबल्लिग़ीन और वाइ़ज़ीन को दर्से इ़ब्रत लेना चाहिये जो दूसरों को तो **नेकी की दा'वत** देते, नमाज़, रोज़ा, ज़कात और ह़ज की त़रफ़ राग़िब करते नीज़ झूट, ग़ीबत, चुग़ली, ह़सद और तकब्बुर वग़ैरहा नाजाइ़ज़ व ह़राम कामों से मन्अ़ करते हैं मगर खुद को भूले हुवे हैं। उन्हें इस बात का एह़सास ही नहीं होता कि बरोज़े क़ियामत उन का भी मुह़ासबा होगा, उन से भी उन के आ'माल व अफ़्आ़ल के बारे में पूछा जाएगा। हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي अपने एक शागिर्द को नसीह़त करते हुवे फ़रमाते हैं : ऐ प्यारे बेटे ! इ़ल्म के बिग़ैर अ़मल पागल पन और दीवानगी से कम नहीं और अ़मल बिग़ैर इ़ल्म के नामुमकिन है । जो इ़ल्म आज तुझे गुनाहों से दूर नहीं कर सका और **अल्लाह** तआ़ला की इत़ाअ़त का शौक़ पैदा न कर सका तो याद रख ! येह कल क़ियामत में तुझे जहन्नम की (भड़कती हुई) आग से भी नहीं बचा सकेगा । अगर आज तू ने नेक अ़मल न किया और गुज़रे हुवे वक़्त का तदारुक न किया तो कल क़ियामत में तेरी एक ही पुकार होगी :

فَارْجِعْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا اِنَّا مُوْقِنُوْنَ ﴿۱۲﴾

(پ۲۱، السجدة:۱۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *हमें फिर भेज कि नेक काम करें हम को यक़ीन आ गया ।*

(1)...شعب الايمان، الثامن عشر من شعب الايمان، ۲/۲۸۳، الحديث: ۱۷۷۳.

www.dawateislami.net

तो तुझे जवाब दिया जाएगा : "ऐ अह़मक़ व नादान ! तू वहीं से तो आ रहा है !" रूह़ में हिम्मत पैदा कर, नफ़्स के ख़िलाफ़ जिहाद कर और मौत को अपने क़रीब तर जान, क्यूंकि तेरी मन्ज़िल क़ब्र है और क़ब्रिस्तान वाले हर लम्ह़ा तेरे मुन्तज़िर हैं कि तू कब उन के पास पहुंचेगा ? ख़बरदार ! ख़बरदार ! डर इस बात से कि बिग़ैर ज़ादे राह के तू उन के पास पहुंच जाए ।[1]

बे अ़मल वाइ़ज़ का अन्जाम

बे अ़मल वाइ़ज़ के लरज़ा ख़ेज़ अन्जाम से मुतअ़ल्लिक़ एक और ह़दीस शरीफ़ मुलाह़ज़ा हो । चुनान्चे, हुज़ूर सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इरशाद फ़रमाते हैं कि क़ियामत के दिन एक शख़्स को लाया जाएगा और उसे आग में डाल दिया जाएगा जिस से उस की आंतें बाहर आ जाएंगी, वोह उन के गिर्द ऐसे चक्कर लगाएगा जैसे गधा चक्की के गिर्द चक्कर लगाता है। जहन्नमी उस के पास आएंगे और पूछेंगे : ऐ फ़ुलां ! तुझे क्या हुवा ? क्या तू लोगों को **नेकी की दा'वत** नहीं देता था और बुराई से मन्अ़ नहीं करता था ? वोह कहेगा : हां, क्यूं नहीं ! मैं नेकी का हुक्म देता था मगर ख़ुद अ़मल नहीं करता था, बुराई से मन्अ़ करता था मगर ख़ुद इस का इर्तिकाब करता था ।[2]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जो मुबल्लिग़ीन तरग़ीब देने के लिये ख़ुद को सरापा तरग़ीब नहीं बनाते, दूसरों को बा अ़मल बनाने के लिये ख़ुद को बे अ़मली की अन्धेरी कोठरी से बाहर नहीं निकालते ऐसों की **नेकी की दा'वत** में तासीर भी नहीं पाई जाती ।

(1)...ایھا الولد، ص۱۲.

(2)...صحیح مسلم، کتاب الزھد...الخ، باب عقوبة من یامر بالمعروف ولا یفعله...الخ، ص۱۱٤۲، الحدیث۲۹۸۹.

www.dawateislami.net

इस के बर ख़िलाफ़ बा अ़मल मुबल्लीग़ की ज़बान से निकलने वाली बात **तासीर का तीर** बन कर सामने वाले के दिल में पैवस्त हो जाती और फिर उसे सुन्नतों की अ़मली तस्वीर बनने पर मजबूर कर देती है। आइये ! ऐसे ही एक बा अ़मल मुबल्लिग़ के नेकी की दा'वत पर मुश्तमिल बयान की ईमान अफ़रोज़ **मदनी बहार** पढ़िये और अपने अन्दर अ़मल का जज़्बा उजागर कीजिये। चुनान्चे,

क़ादियानी प्रोफ़ेसर की तौबा

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक्तबतुल मदीना के** मत़बूआ़ **49** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल रिसाले "**तज़किरए अमीरे अहले सुन्नत**" के सफ़ह़ा नम्बर **10** पर है : अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की बारगाह में ग़ालिबन **2003** ई. में एक मक्तूब पहुंचा जिस में किसी प्रोफ़ेसर ने कुछ इस त़रह़ से लिखा था कि मैं क़ादियानी मज़हब से तअ़ल्लुक़ रखता हूं और एक बड़े ओ़हदे पर फ़ाइज़ हूं, अब तक **70** मुसलमानों को गुमराह कर के क़ादियानी बना चुका हूं। सरदाराबाद (फ़ैसलाबाद) में होने वाले **दा'वते इस्लामी** के इजतिमाअ़ में तन्क़ीदी ज़ेह्न ले कर शरीक हुवा लेकिन आप का बयान सुन कर दिल की दुन्या ज़ेरो ज़बर हो गई फिर किसी मुबल्लिग़ ने आप के बयानात की केसिटें तोह़फ़े में दीं। दिल की कैफ़िय्यत तो एक बयान सुन कर ही बदल चुकी थीं मगर जब दीगर केसिटें सुनीं तो लरज़ उठा और सारी रात रोता रहा, अब मुझे क्या करना चाहिये ? अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने इनफ़िरादी कोशिश करते हुवे बिला ताख़ीर मक्तूब रवाना फ़रमाया कि फ़ौरन **तौबा कर के इस्लाम क़बूल कर लीजिये** और जितने मुसलमानों को (مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ) मुर्तद किया है उन्हें मुसलमान बनाने की कोई सूरत निकालिये।

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ जब येह जवाबी मक्तूब उस प्रोफ़ेसर तक पहुंचा तो आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की दा'वत पर लब्बैक कहते हुवे उस ने फ़ौरन तौबा की और मुसलमान हो गया । उस पर प्रोफ़ेसर इस्लामी भाई के बाप और ख़ानदान वालों ने उन पर बहुत सख़्तियां कीं लेकिन वोह साबित क़दम रहे । اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के बयान सुनने की बरकत से बिल आख़िर उन के पूरे ख़ानदान को **क़ादियानी मज़हब से नजात ह़ासिल हो गई** और वोह दामने इस्लाम से वाबस्ता हो गए ।[1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

....आग की शाख़ों से लटके हुवे लोग

मे'राज की शब नबियों के सरदार, रसूलों के सालार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दोज़ख़ में कुछ ऐसे लोग भी देखे जो आग की शाख़ों से लटके हुवे थे । आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दरयाफ़्त फ़रमाया : ऐ जिब्रील ! येह कौन लोग हैं ? अ़र्ज़ किया : येह वोह लोग हैं जो दुन्या में अपने **वालिदैन को गालियां देते थे** ।[2]

याद रखिये ! वालिदैन को सताना और उन्हें ईज़ा पहुंचाना ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है, **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ ने क़ुरआने पाक में वालिदैन को झिड़कने और उन्हें उफ़ तक कहने से मन्अ़ फ़रमाया है । चुनान्चे, इरशाद फ़रमाता है :

---

(1)....तज़किरए अमीरे अहले सुन्नत, क़िस्त अव्वल, स. 10

(2)...الزواجر، كتاب النفقات على الزوجات...الخ، الكبيرة الثانية بعد الثلاثمائة، ٢/١٢٥.

www.dawateislami.net

فَلَا تَقُلْ لَّهُمَآ اُفٍّ وَّ لَا تَنْهَرْهُمَا وَ قُلْ لَّهُمَا قَوْلًا كَرِیْمًا ﴿۲۳﴾

(پ۱۵، بنی اسرائیل:۲۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तो उन से हूं (उफ़ तक) न कहना और उन्हें न झिड़कना और उन से ता'ज़ीम की बात कहना।*

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वालिदैन की नाफ़रमानी व ईज़ा रसानी की उख़रवी सज़ा तो है ही, दुन्या में भी इ़ब्रतनाक सज़ा भुगतनी पड़ती है, बारहा देखा गया है कि जो अपने वालिदैन को सताते और उन्हें तक्लीफ़ पहुंचाते हैं ख़ुद अपनी ही अवलाद के हाथों ज़लीलो रुस्वा हो कर ज़िन्दगी गुज़ारते हैं। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि रसूले नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : हर गुनाह को **अल्लाह** तआ़ला जिस के लिये चाहता है बख़्श देता है मगर वालिदैन की नाफ़रमानी व ईज़ा रसानी को नहीं बख़्शता बल्कि ऐसा करने वाले को उस के मरने से पहले दुन्या की ज़िन्दगी में जल्द ही सज़ा दे देता है।[1]

दिल दुखाना छोड़ दे मां बाप का
वरना है इस में ख़सारा आप का[2]
कर ले तौबा रब की रह़मत है बड़ी
क़ब्र में वरना सज़ा होगी कड़ी[3]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(1)...شعب الایمان، الخامس والخمسون من شعب الایمان، ۶/۱۹۷، الحدیث: ۷۸۹۰.

(2)....वसाइले बख़्शिश, स. 668

(3)....वसाइले बख़्शिश, स. 667

www.dawateislami.net

ज़िनाकारों के तीन अ़ज़ाब

ज़िना इन्तिहाई घिनावना और घटया फ़े'ल है। कुरआने करीम व अह़ादीसे त़य्यिबा में इस से बचने की बहुत ताकीद आई है और जो इस का इर्तिकाब करे उस के लिये सख़्त सज़ाएं वारिद हैं। कुरआने करीम में इरशादे रब्बानी है :

وَلَا تَقْرَبُوا الزِّنٰۤى اِنَّهٗ كَانَ فَاحِشَةً ؕ وَسَآءَ سَبِيْلًا ۝۳۲
(پ۱۵، بنی اسرائیل:۳۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और बदकारी के पास न जाओ, बेशक वोह बे ह़याई है और बहुत ही बुरी राह।

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْغَنِى इस की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं : या'नी ज़िना के अस्बाब से भी बचो लिहाज़ा बद नज़री, ग़ैर औ़रत से ख़ल्वत, औ़रत की बे पर्दगी वग़ैरा सब ही ह़राम हैं।[(1)]

ज़िना कार आदमी दुन्या में भी ज़लीलो ख़्वार होता है और आख़िरत में भी इन्तिहाई ज़िल्लत के अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार होगा। **मे'राज** की शब सरकारे आ़ली वक़ार, मक्के मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इन के भी अ़ज़ाब मुलाह़ज़ा फ़रमाए चुनान्चे,

۞......बदबूदार गोश्त खाने वाले लोग

मरवी है कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का गुज़र ऐसे लोगों पर हुवा जिन के सामने (कुछ) हन्डियों में पका हुवा उ़म्दा क़िस्म का और (कुछ में) कच्चा, गन्दा और ख़राब क़िस्म का गोश्त रखा

(1).....नूरुल इरफ़ान, पारह 15, सूरए बनी इस्राईल, तह़तल आयत, 32, स. 343

www.dawateislami.net

हुवा था । येह लोग पके हुवे पाकीज़ा गोश्त को छोड़ कर कच्चा गोश्त खा रहे थे । सरकारे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने पूछा : ऐ जिब्रील ! येह कौन लोग हैं ? अ़र्ज़ किया : येह आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत का वोह शख़्स है जिस के पास ह़लाल औ़रत (बीवी) थी मगर येह उसे छोड़ कर ख़बीस औ़रत के पास जाता और रात भर ठहरा रहता और येह औ़रत वोह है जो ह़लाल व त़य्यिब मर्द के निकाह़ में होने के बा वुजूद ख़बीस मर्द के पास जाती और रात भर उस के पास ठहरी रहती ।[1]

....उलटे लटके हुवे लोग

सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ज़िनाकारों पर अ़ज़ाब का एक मन्ज़र येह भी मुलाह़ज़ा फ़रमाया कि कुछ औ़रतें छातियों से और कुछ पाऊं से लटकी हुई हैं । आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام से दरयाफ़्त फ़रमाया : ऐ जिब्राईल ! येह कौन हैं ? अ़र्ज़ किया : येह वोह औ़रतें हैं जो ज़िना करती और अवलाद को क़त्ल कर देती थीं ।[2]

....मुंह में आग के पथ्थर

मे'राज की रात सरकारे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने कुछ ऐसे लोग भी देखे जिन के होंट ऊंट के होंटों की त़रह़ (बड़े बड़े) थे, उन पर ऐसे अफ़राद मुक़र्रर थे जो उन के होंट पकड़ कर आग के

(1)...تفسیر الطبری، سورۃ الاسراء، تحت الآیۃ: ۱، ۸/۸، الحدیث: ۲۲۰۲۱.

(2)...المرجع السابق، ص۱۳، الحدیث: ۲۲۰۲۳.

www.dawateislami.net

बड़े बड़े पथ्थर उन के मुंह में डालते और वोह उन के नीचे से निकल जाते । आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दरयाफ़्त फ़रमाया : ऐ जिब्रील ! येह कौन लोग हैं ? अ़र्ज़ किया : येह वोह लोग हैं (फिर मुन्दरिजए ज़ैल आयत पढ़ी) :[1]

اَلَّذِيْنَ يَاْكُلُوْنَ اَمْوَالَ الْيَتٰمٰى ظُلْمًا اِنَّمَا يَاْكُلُوْنَ فِيْ بُطُوْنِهِمْ نَارًا ؕ (پ٤، النساء:١٠)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *जो यतीमों का माल ना ह़क़ खाते हैं वोह तो अपने पेट में निरी आग भरते हैं ।*

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! यतीमों का धन दौलत, साज़ो सामान, जागीर व जाईदाद अल ग़रज़ किसी भी क़िस्म का मालो मनाल नाह़क़ त़ौर पर लेने में आख़िरत का शदीद वबाल है । क़ुरआने करीम व अह़ादीसे त़य्यिबा में इस की बहुत सख़्त वई़दें आई हैं जैसा कि अभी आप ने मुलाह़ज़ा किया । ख़याल रहे कि जहां नाह़क़ त़ौर पर यतीमों का माल खाने और उन के साथ बुरा सुलूक करने की वजह से जहन्नम के दर्दनाक अ़ज़ाब की वई़दें हैं वहीं अगर उन के साथ नर्मी व एह़सान का बरताव किया जाए और शफ़क़त व मेहरबानी के साथ पेश आया जाए तो जहन्नम के हौलनाक अ़ज़ाब से नजात की बिशारत भी है चुनान्चे, दाफ़ेए़ रन्जो मलाल, साह़िबे जूदो नवाल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है : उस ज़ात की क़सम जिस ने मुझे ह़क़ के साथ मबऊ़स फ़रमाया ! जिस ने किसी यतीम पर रह़म किया, उस के साथ नर्म गुफ़्तगू की, उस की यतीमी व कमज़ोरी पर तरस खाया और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के अ़त़ा किये हुवे (मालो दौलत) की फ़ज़ीलत की वजह से अपने पड़ोसी

(1)...الشريعة للآجری، باب...انه اسری به...الخ، ٣/١٥٣٢، الحديث:١٠٢٧.

www.dawateislami.net

पर तकब्बुर न किया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बरोज़े क़ियामत उसे अ़ज़ाब न देगा।[1]

....ख़ारदार घास और थोहर खाने का अ़ज़ाब

इस रात सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ऐसे लोगों के पास भी तशरीफ़ लाए जिन के आगे और पीछे चीथड़े लटक रहे थे और वोह चोपायों की त़रह़ चरते हुवे ख़ारदार घास, थोहर[2] और जहन्नम के तपे हुवे (गर्म) पथ्थर निगल रहे थे। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दरयाफ़्त फ़रमाया : ऐ जिब्रील ! येह कौन लोग हैं ? अ़र्ज़ किया : येह वोह लोग हैं जो अपने मालों की ज़कात नहीं देते थे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इन पर ज़ुल्म नहीं किया और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बन्दों पर ज़ुल्म नहीं फ़रमाता।[3]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ज़कात फ़र्ज़ होने के बा वुजूद अदा न करना ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। कुरआने करीम व अह़ादीसे त़य्यिबा में इस की बहुत सख़्त सज़ाएं आई हैं जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिस को ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ ने माल अ़त़ा फ़रमाया और उस ने इस की ज़कात अदा न की तो क़ियामत के दिन उस के माल को एक गन्जे अज़दहे की सूरत में बना दिया जाएगा जिस की आंखों पर दो सियाह नुक़्ते

(1)...المعجم الاوسط، من اسمه مقدام، ٦/٢٩٦، الحديث: ٨٨٢٨.

(2).....एक ख़ारदार और ज़हरीला पौदा जिस के पत्ते सब्ज़ और फूल रंग बिरंगे होते हैं। इस की 100 के क़रीब अक़्साम हैं।

(3).....الترغيب والترهيب، كتاب الصدقات، الترهيب من منع الزكاة...الخ، ص٢٦٣، الحديث: ٩

www.dawateislami.net

होंगे और वोह अज़दहा उस के गले का तौक़ बना दिया जाएगा जो अपने जबड़ों से उस को पकड़ेगा और कहेगा : मैं हूं तेरा माल, तेरा ख़ज़ाना ।[1]

ज़कात न देने के हौलनाक अज़ाब

ग़ौर कीजिये ! कौन है जो क़ियामत के दिन के इस हौलनाक अज़ाब को सह सके, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! किसी में इस हौलनाक अज़ाब के बरदाश्त की ताक़त नहीं और फिर इसी पर इक्तिफ़ा नहीं बल्कि अहादीस में इस के इलावा और भी कई अज़ाबों का तज़किरा है, आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن इन का मुख़्तसर बयान करते हुवे फ़रमाते हैं : ख़ुलासा येह है कि जिस सोने चांदी की ज़कात न दी जाए, रोज़े क़ियामत जहन्नम की आग में तपा कर इस से उन की पेशानियां, करवटें, पीठें दाग़ी जाएगी । उन के सर, पिस्तान (छातियों) पर जहन्नम का गर्म पथ्थर रखेंगे कि छाती तोड़ कर शाने से निकल जाएगा और शाने की हड्डी पर रखेंगे कि हड्डियां तोड़ता सीने से निकल आएगा, पीठ तोड़ कर करवट से निकलेगा, गुद्दी तोड़ कर पेशानी से उभरेगा । जिस माल की ज़कात न दी जाएगी रोज़े क़ियामत पुराना ख़बीस ख़ूं ख़्वार अज़दहा बन कर उस के पीछे दौड़ेगा, येह हाथ से रोकेगा वोह हाथ चबा लेगा फिर गले में तौक़ बन कर पड़ेगा, उस का मुंह अपने मुंह में ले कर चबाएगा

(1)...صحیح البخاری، کتاب الزکاۃ، باب اثم مانع الزکاۃ، ص۳۹۳، الحدیث:۱۴۰۳.

www.dawateislami.net

कि मैं हूं तेरा माल, मैं हूं तेरा ख़ज़ाना, फिर उस का सारा बदन चबा डालेगा। وَالْعِيَاذُ بِاللّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْن.(1)

कर ले तौबा....!!

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ज़रा इन अ़ज़ाबों पर ग़ौर कीजिये और फिर अपनी नातुवानी व कमज़ोरी को देखिये, आह ! हमारी कमज़ोरी का ह़ाल तो येह है कि हलका सा सर दर्द या बुख़ार तड़पा कर रख देता है तो फिर आख़िरत के येह दर्दनाक अ़ज़ाब क्यूंकर बरदाश्त किये जा सकते हैं ? इस लिये अभी वक़्त है डर जाएं और जो फ़र्ज़ होने के बा वुजूद ज़कात अदा नहीं करते फ़ौरन से पेशतर इस से तौबा करें और जितने सालों की ज़कात बाक़ी है, ह़िसाब कर के जल्द अज़ जल्द अदा कर दें वरना अगर येह मौक़अ़ हाथ से निकल गया और तौबा से पहले ही मौत ने आ लिया तो फिर मौक़अ़ नहीं मिलेगा।

कर ले तौबा रब की रह़मत है बड़ी
क़ब्र में वरना सज़ा होगी कड़ी (2)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

---

(1)....फ़तावा रज़विय्या, 10/153.
(2)...वसाइले बख़्शिश, स 667.

www.dawateislami.net

मे'राज शरीफ़ से मुतअ़ल्लिक़ चन्द मन्ज़ूम कलाम

वो सरवरे किश्वरे रिसालत

अज़ : आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत **मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن

वोह सरवरे किश्वरे रिसालत जो अ़र्श पर जल्वा गर हुवे थे
नए निराले त़रब[1] के सामां अ़रब के मेहमान के लिये थे

बहार है शादियां मुबारक, चमन को आबादियां मुबारक
मलक फ़लक अपनी अपनी लय[2] में येह घर[3] अ़नादिल[4] का बोलते थे

वहां फ़लक पर यहां ज़मीन में रची थी शादी मची थी धूमें
उधर से अन्वार हंसते आते इधर से नफ़्ह़ात[5] उठ रहे थे

येह छूट पड़ती थी उन के रुख़ की, कि अ़र्श तक चांदनी थी छिटकी[6]
वोह रात क्या जगमगा रही थी जगह जगह नस्ब आइने थे

नई दुल्हन की फबन में का'बा निखर के संवरा संवर के निखरा
ह़जर के सदक़े कमर के इक तिल में रंग लाखों बनाव के थे

नज़र में दुल्हा के प्यारे जल्वे ह़या से मेह़राब सरझुकाए
सियाह पर्दे के मुंह पर आंचल तजल्लिये ज़ाते बह़त से थे

---

(1)....ख़ुशी, शादमानी। (2)....लहजा, सुर। (3)....ख़ुश इल्ह़ान परन्दे की आवाज़, नग़मए बुलबुल। (4)....अ़न्दलीब की जम्अ़, बुल बुल। (5)....नफ़्अ़ की जम्अ़, ख़ुश्बू। (6)....फ़ैली हुई।

www.dawateislami.net

ख़ुशी के बादल उमंड के आए दिलों के ताऊस[1] रंग लाए
वोह नग़मए ना'त का समां था हरम को ख़ुद वज्द आ रहे थे

येह झूमा मीज़ाबे ज़र[2] का झूमर कि आ रहा कान पर ढलक कर
फूहार बरसी तो मोती झड़ कर हतीम[3] की गोद में भरे थे

दुल्हन की ख़ुश्बू से मस्त कपड़े नसीम गुस्ताख़ आंचलों से
ग़िलाफ़े मुश्कीं जो उड़ रहा था ग़ज़ाल[4] नाफ़े[5] बसा रहे थे

पहाड़ियों का वोह हुस्ने तज़ई वोह ऊंची चोटी वोह नाज़ो तमकीं!
सबा से सब्ज़े में लहरें आतीं दूपट्टे धानी चुने हुवे थे

नहा के नहरों ने वोह चमकता लिबास आबे रवां का पहना
कि मौजें छड़ियां थी, धार लचका,[6] हबाबे[7] ताबां के थल[8] टके थे

पुराना पुरदाग़ मलगजा था उठा दिया फ़र्श चांदनी का
हुजूम तारे निगा से कोसों क़दम क़दम फ़र्श बादले थे

---

(1)....एक खुशनुमा परन्दे का नाम जो बड़े मुर्ग़ के बराबर होता है उस की दुम पर सब्ज़ व सुन्हरी निशान बने होते हैं, मोर। (2)....का'बतुल्लाह शरीफ़ का सोने का परनाला, इस से बारिश का पानी हतीम में निछावर होता है। (रफ़ीकुल हरमैन, स. 62, मुल्तक़तन) (3)....का'बए मुअ़ज़्ज़मा की शुमाली दीवार के पास निस्फ़ (या'नी आधे) दाइरे (Half circle) की शक्ल में फ़सील (या'नी बाउन्डरी) के अन्दर का हिस्सा। हतीम का'बा शरीफ़ ही का हिस्सा है और इस में दाख़िल होना ऐन का'बतुल्लाह शरीफ़ में दाख़िल होना है। (रफ़ीकुल हरमैन, स. 61) (4)....हिरन। (5)....एक ख़ास हिरन के पेट की थैली जिस में मुश्क होता है। (6)....एक क़िस्म का पतला गोटा। (7)....बिल बिला। (8)....गोल, गुरौह।

www.dawateislami.net

ग़ुबार बन कर निसार जाएं कहां अब उस रह गुज़र को पाएं
हमारे दिल हूरियों की आंखे फ़िरिश्तों के पर जहां बिछे थे

ख़ुदा ही दे सब्र जाने पुरग़म दिखाऊं क्यूं कर तुझे वोह आ़लम
जब उन को झुरमट में ले के कुदसी जिनां (1) का दुल्हा बना रहे थे

उतार कर उन के रुख़ का सदक़ा येह नूर का बट रहा था बाड़ा (2)
कि चांद सूरज मचल मचल कर जबीं (3) की ख़ैरात मांगते थे

वोही तो अब तक छलक रहा है वोही तो जोबन (4) टपक रहा है
नहाने में जो गिरा था पानी कटोरे तारों ने भर लिये थे

बचा जो तल्वों का उन के धोवन बना वोह जन्नत का रंगो रोग़न
जिन्हों ने दुल्हा की पाई उतरन वोह फूल गुलज़ारे नूर के थे

ख़बर ये तह़वील महर की थी कि रुत सुहानी घड़ी फिरेगी
वहां की पोशाक ज़ेबे तन की यहां का जोड़ा बढ़ा चुके थे

तजल्लिये ह़क़ का सहरा सर पर सलातो तस्लीम की निछावर
दो (5) रूया कुदसी परे जमा कर खड़े सलामी के वासिते थे

जो हम भी वां (6) होते ख़ाके गुलशन लिपट के क़दमों से लेते उतरन
मगर करें क्या नसीब में तो येह नामुरादी के दिन लिखे थे

---

(1)....जन्नत की जम्अ़। (2)....ख़ैरात। (3)....पेशानी मुबारक। (4)....ख़ूब सूरती, हुस्नो जमाल। (5)....दोनों जानिब। (6)....''वहां'' का मुख़फ़्फ़फ़।

www.dawateislami.net

अभी न आए थे पुश्ते ज़ीं तक कि सर हुई मग़फ़िरत की शिल्लिक
सदा शफ़ाअ़त ने दी मुबारक ! गुनाह मस्ताना झूमते थे

अ़जब न था रख़्श का चमकना ग़ज़ाले दम ख़ूर्दा सा भड़कना
शुआ़एं बुके उड़ा रही थीं तड़पते आंखों पे साइक़े थे

हुजूमे उम्मीद है घटाव मुरादें दे कर उन्हें हटाव
अदब की बागें लिये बढ़ाऊ मलाइका में येह ग़ुलग़ुले (1) थे

उठी जो गर्दे रहे मुनव्वर वोह नूर बरसा कि रास्ते भर
घिरे थे बादल भरे थे जल थल उमंड के जंगल उबल रहे थे

सितम किया कैसी मत कटी थी क़मर ! वोह ख़ाक उन के रह गुज़र की
उठा न लाया कि मलते मलते येह दाग़ सब देखता मिटे थे

बुराक़ के नक़्शे सुम (2) के सदक़े वोह गुल खिलाए कि सारे रस्ते
महकते गुलबन (3) लहकते ग़ुलशन हरे भरे लहलहा रहे थे

नमाज़े अक़्सा में था येही सिर्र (4) इ़यां हों मा'निये अव्वल आख़िर
कि दस्त बस्ता हैं पीछे ह़ाज़िर जो सलत़नत आगे कर गए थे

येह उन की आमद का दबदबा था निखार हर शै का हो रहा था
नुजूमो अफ़्लाक जामो (5) मीना (6) उजालते (7) थे खंगालते थे

---

(1)....शोहरत, चर्चा। (2)....खुर। (3)....गुलाब का पौदा। (4)....राज़, भेद। (5)....पियाला। (6)....सुराही। (7)....साफ़ करते।

www.dawateislami.net

निक़ाब उलटे वोह मेहरे अन्वर जलाले रुख़्सार गर्मियों पर
फ़लक को हैबत से तप[1] चढ़ी थी तपकते अन्जुम[2] के आबले थे

येह जो शिशे[3] नूर का असर था कि आबे गोहर कमर कमर था
सफ़ाए रह से फिसल फिसल कर सितारे क़दमों पे लौटते थे

बढ़ा येह लहरा के बहरे वहदत कि धुल गया नाम रैगे कसरत
फ़लक के टीलों की क्या हक़ीक़त येह अर्शो कुरसी दो बुलबुले थे

वोह ज़िल्ले रहमत वोह रुख़ के जल्वे कि तारे छुपते न खिलने पाते
सुन्हरी ज़र बफ़्त[4] ऊदी अतलस[5] येह थान[6] सब धूप छाऊं के थे

चला वोह सरवे चमां ख़िरामां न रुक सका सिद्रा से भी दामां
पलक झपकती रही वोह कब के सब ईनो आं से गुज़र चुके थे

झलक सी इक कुदसियों पर आई हवा भी दामन की फिर न पाई
सुवारी दुल्हा की दूर पहुंची बरात में होश ही गए थे

थके थे रूहुल अमीं के बाज़ू छुटा वोह दामन कहां वोह पहलू
रिकाब छूटी उम्मीद टूटी निगाहे हसरत के वलवले थे

---

(1)....बुख़ार। (2)....नज्म की जम्अ, सितारे। (3)....तेज़ी, तुग़यानी। (4)....एक कपड़ा जो सोने और रेशम के तारों से बुना जाता है। (5)....ऊदी अतलस : सुर्ख़ी लिये हुवे काले रंग का रेशमी कपड़ा। (6)....कपड़े।

www.dawateislami.net

रविश (1) की गर्मी को जिस ने सोचा दिमाग़ से इक भबूका (2) फूटा
ख़िरद (3) के जंगल में फूल चमका दहर दहर पेड़ (4) जल रहे थे

जिलो में जो मुर्ग़े अ़क़्ल उड़े थे अ़जब बुरे ह़ालों गिरते पड़ते
वोह सिद्रा ही पर रहे थे, थक कर चढ़ा था दम, तैवर आ गए थे

क़वी थे मुरग़ाने वहम के पर उड़े तो उड़ने को और दम भर
उठाई सीने की ऐसी ठोकर कि ख़ूने अन्देशा थूकते थे

सुनाया इतने में अ़र्शे ह़क़ ने कि ले मुबारक हो ताज वाले
वोही क़दम ख़ैर से फिर आए जो पहले ताजे शरफ़ तेरे थे

येह सुन कर बे ख़ुद पुकार उठा निसार जाऊं कहां है आक़ा
फिर उन के तलवों का पाऊं बोसा येह मेरी आंखों के दिन फिरे थे

जुका था मुजरे (5) को अ़र्शे आ'ला गिरे थे सजदे में बज़मे बाला
येह आंखें क़दमों से मल रहा था वोह गिर्द कुरबान हो रहे थे

ज़ियाईं (6) कुछ अ़र्श पर येह आईं कि सारी क़िन्दीलें (7) झिलमिलाईं
हुज़ूरे ख़ुरशीद (8) क्या चमकते चराग़ मुंह अपना देखते थे

(1)....रफ़्तार। (2)....आग का शो'ला, अंगारा। (3)....अ़क़्ल। (4)....दरख़्त। (5)....सलाम व आदाब। (6)....रोशनियां। (7)....एक क़िस्म का शीशे का ज़रफ़ जिस में बत्ती रोशन कर के छत में ज़न्जीरों से लटका देते हैं। (8)....सूरज।

www.dawateislami.net

येही समां था कि पैके रह़मत ख़बर येह लाया कि चले ह़ज़रत
तुम्हारी ख़ातिर कुशादा हैं जो कलीम पर बन्द रास्ते थे

बढ़ ऐ मुह़म्मद, क़रीं[1] हो अह़मद, क़रीब आ सरवरे मुमज्जद[2]
निसार जाऊं येह क्या निदा थी, येह क्या समां था, येह क्या मज़े थे

तबारकल्लाह शान तेरी तुझी को ज़ैबा है बे नियाज़ी
कहीं तो वोह जोशे لَنْ تَرٰىنِیْ[3] कहीं तक़ाज़े विसाल[4] के थे

ख़िरद[5] से कह दो कि सर झुका ले गुमां से गुज़रे गुज़रने वाले
पड़े हैं यां[6] ख़ुद जिहत[7] को लाले किसे बताए किधर गए थे

सुराग़े ऐनो[8] मता[9] कहां था, निशाने कैफ़ो[10] इला[11] कहां था
न कोई राही न कोई साथी न संगे मन्ज़िल[12] न मरह़ले थे

उधर से पैहम[13] तक़ाज़े आना, इधर था मुश्किल क़दम बढ़ाना
जलालो हैबत का सामना था जमालो रह़मत उभारते थे

---

(1)....नज़दीक, पास । (2)....बुज़ुर्गी वाले । (3)....उस वाक़िए की त़रफ़ इशारा है कि जब ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَیْہِ السَّلَام ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से दीदार की तमन्ना की थी और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाया था لَنْ تَرٰىنِیْ "या'नी तू मुझे हरगिज़ न देख सकेगा।" (4)....मुलाक़ात । (5)....अ़क़्ल । (6)...."यहां" का मुख़फ़्फ़फ़ । (7)....सम्त । (8)....ज़रफ़े मकान, कहां । (9)....कब । (10)....कैसे । (11)....कहां तक । (12)....पथ्थर का वोह निशान जो मन्ज़िल का पता देता है । (13)....मुसलसल ।

www.dawateislami.net

बढ़े तो लेकिन झिझकते डरते, ह़या से झुकते अदब से रुकते
जो क़ुर्ब इन्हीं की रविश[1] पे रखते तो लाखों मन्ज़िल के फ़ासिले थे

पर उन का बढ़ना तो नाम को था ह़क़ीक़तन फ़े'ल था उधर का
तनज़्ज़ुलों में तरक़्क़ी अफ़्ज़ा दना तदल्ला के सिलसिले थे

हुवा न आख़िर कि एक बजरा[2] तमव्वुजे बह़रे हू में उभरा
दना की गोदी में उन को ले कर, फ़ना के लंगर उठा दिये थे

किसे मिले घाट का किनारा किधर से गुज़रा कहां उतारा
भरा जो मिस्ले नज़र त़रारा वोह अपनी आंखों से ख़ुद छुपे थे

उठे जो क़स्रे दना के पर्दे, कोई ख़बर दे तो क्या ख़बर दे
वहां तो जाही नहीं दूई की न कह कि वोह भी न थे अरे थे

वोह बाग़ कुछ ऐसा रंग लाया, कि गुन्चा[3] व गुल का फ़र्क़ उठाया
गिरह में कलियों की बाग़ फूले, गुलों के तुकमे[4] लगे हुवे थे

मुह़ीत़ो मर्कज़ में फ़र्क़ मुश्किल, रहे न फ़ासिल[5] ख़ुतूते वासिल[6]
कमानें ह़ैरत में सर झुकाए अ़जीब चक्कर में दाइरे थे

ह़िजाब उठने में लाखों पर्दे हर एक पर्दे में लाखों जल्वे
अ़जब घड़ी थी कि वस्लो फ़ुरक़त जनम के बिछड़े गले मिले थे

---

(1)....रफ़्तार। (2)....एक क़िस्म की गोल और ख़ूब सूरत कश्ती। (3)....कली, बन्द फूल। (4)....बटन। (5)....जुदा करने वाला, फ़र्क़ करने वाला। (6)....मिलाने वाला।

www.dawateislami.net

ज़बानें सुखी दिखा के मौजें, तड़प रही थीं कि पानी पाएं
भंवर (1) को येह ज़ो'फ़े तिश्नगी था कि ह़ल्क़े आंखों में पड़ गए थे

वोही है अव्वल वोही है आख़िर वोही है बात़िन वोही है ज़ाहिर
उसी के जल्वे उसी से मिलने उसी से उस की त़रफ़ गए थे

कमाने इम्कां के झूटे नुक़्तो! तुम अव्वल आख़िर के फैर में हो
मुह़ीत़ की चाल से तो पूछो किधर से आए किधर गए थे

इधर से थीं नज़्रे शह नमाज़ें उधर से इन्आ़मे ख़ुसरवी में
सलामो रह़मत के हार गुंध कर गुलूए (2) पुरनूर में पड़े थे

ज़बान को इन्तिज़ारे गुफ़्तन (3) तो गोश (4) को ह़सरते शुनीदन (5)
यहां जो कहना था कह लिया था जो बात सुननी थी सुन चुके थे

वोह बुरजे बत़ह़ा का माहपारा बिहिश्त की सैर को सिधारा
चमक पे था ख़ुल्द का सितारा कि उस क़मर के क़दम गए थे

सुरूरे मक़दम (6) की रोशनी थी कि ताबिशों (7) से महे अ़रब (8) की
जिनां (9) के गुलशन थे, झाड़ फ़र्शी, जो फूल थे सब कंवल बने थे

---

(1)....पानी का चक्कर। (2)....नूरानी गला। (3)....बात करना। (4)....कान। (5)....सुनना। (6)....सुरूरे मक़्दम : आमद की ख़ुशी। (7)....चमक, रोशनी, नूर। (8)....महे अ़रब : अ़रब का चांद। (9)....जन्नत की जम्अ़।

www.dawateislami.net

त़रब[1] की नाज़िश कि हां लचकिये, अदब वोह बन्दिश कि हिल न सकें
येह जोशे ज़िद्दैन था कि पौदे कशाकशी[2] अर्रा[3] के तले थे
ख़ुदा की क़ुदरत कि चांद ह़क़ के, करोरों मन्ज़िल में जल्वा कर के
अभी न तारों की छाऊं बदली कि नूर के तड़के[4] आ लिये थे
नबिय्ये रह़मत शफ़ीए़ उम्मत ! रज़ा पे लिल्लाह हो इनायत
इसे भी उन ख़िलअ़तों से ह़िस्सा जो ख़ास रह़मत के वां[5] बटे थे
सनाए सरकार है वज़ीफ़ा, क़बूले सरकार है तमन्ना
न शाइ़री की हवस[6] न परवा रवी[7] थी क्या कैसे क़ाफ़िये[8] थे

(ह़दाइक़े बख़्शिश, ह़िस्सा अव्वल, स. 229)

(1)....ख़ुशी, शादमानी। (2)....खींचा तानी। (3)....लकड़ी चीरने का औज़ार, आरा। (4)....सुब्ह़ के वक़्त, बहुत सवेरे। (5)....वहां का मुख़फ़्फ़फ़। (6)....आरज़ू, ख़्वाहिश। (7) वोह ह़र्फ़ जिस पर क़ाफ़िये की बुन्याद हो, क़ाफ़िये का सब से पिछला बार बार आने वाला ह़र्फ़। (8)....चन्द ह़ुरूफ़ व ह़रकात का मजमूआ़ जिस की तकरार अलफ़ाज़े मुख़्तलिफ़ के साथ आख़िरे मिस्रअ़ या आख़िरे बैत में पाई जाए, वोह अलफ़ाज़ लफ़्ज़न मुख़्तलिफ़ हों या मा'नन।

www.dawateislami.net

अ़र्श की अ़क़्ल दंग है

अज़ : आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** (عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن)

अ़र्श की अ़क़्ल दंग है चर्ख़ (1) में आस्मान है
जाने मुराद अब किधर हाए तेरा मकान है

ब़ज़्मे सनाए ज़ुल्फ़ में मेरी उ़रूसे फ़िक्र को
सारी बहारे हश्त ख़ुल्द (2) छोटा सा इ़त्र दान है

अ़र्श पे जा के मुर्ग़े (3) अ़क़्ल थक के गिरा ग़श आ गया
और अभी मन्ज़िलों परे पहला ही आस्तान है

अ़र्श पे ताज़ा छेड़ छाड़ फ़र्श में तुरफ़ा (4) धूम धाम
कान जिधर लगाइये तेरी ही दास्तान है

इक तेरे रुख़ की रोशनी चैन है दो जहान की
इन्स (5) का उन्स (6) उसी से है जान की वोह ही जान है

वोह जो न थे तो कुछ न था वोह जो न हों तो कुछ न हो
जान हैं वोह जहान की जान है तो जहान है

गोद में आ़लमे शबाब ह़ाले शबाब कुछ न पूछो!
गुल्बुने बाग़े नूर की और ही कुछ उठान है

---

(1)....चक्कर, गर्दिश । (2)....हश्त ख़ुल्द : आठों जन्नतें । (3)....परन्दा । (4)....अ़जीब, अनोखी । (5)....इन्सान । (6)....महब्बत, उल्फ़त, रग़बत ।

www.dawateislami.net

तुज सा सियाह कार कौन उन सा शफ़ीअ़ है कहां
फिर वोह तुझी को भूल जाएं दिल ! येह तेरा गुमान है

पेशे नज़र वोह नौ बहार सजदे को दिल है बे क़रार
रोकिये सर को रोकिये हां येही इम्तिहान है

शाने ख़ुदा न साथ दे उन के ख़िराम (1) का वोह बाज़
सिद्रा से ता ज़मीन जिसे नर्म सी इक उड़ान है

बारे जलाल उठा लिया गर्चे कलेजा शक़ हुवा
यूं तो येह माहे सब्ज़ा रंग नज़रों में धान पान (2) है

ख़ौफ़ न रख रज़ा ज़रा तू तो है अ़ब्दे मुस्तफ़ा
तेरे लिये अमान है तेरे लिये अमान है

(हदाइक़े बख़्शिश, हिस्सा अव्वल, स. 178)

मुअ़ज़्ज़ज़ कौन...?

हज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने अ़र्ज़ की : ऐ रब्बे आ'ला عَزَّوَجَلَّ तेरे नज़दीक कौन सा बन्दा ज़ियादा इ़ज़्ज़त वाला है ? फ़रमाया : वोह जो बदला लेने की क़ुदरत के बा वुजूद मुआ़फ़ कर दे।

(شعب الایمان، باب فی حسن الخلق، فصل فی ترک الغضب، ٦/٣١٩، الحدیث: ٨٣٢٧)

(1)....नाज़ व अदा की रफ़्तार। (2)....नाज़ुक।

www.dawateislami.net

अ़र्शे बरीं पर जल्वा फ़िगन

अज़ : हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते मौलाना मुह़म्मद ह़ामिद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن

हैं अ़र्शे बरीं[1] पर जल्वा फ़िगन महबूबे ख़ुदा سُبْحَانَ الله

इक बार हुवा दीदार जिसे सो बार कहा سُبْحَانَ الله

ह़ैरान हुए बर्क़[2] और नज़र इक आन है और बरसों का सफ़र

राकिब[3] ने कहा अल्लाहु ग़नीं[4] मर्कब[5] ने कहा سُبْحَانَ الله

त़ालिब का पता मत़लूब को है मत़लूब है त़ालिब से वाक़िफ़

पर्दे में बुला कर मिल भी लिये पर्दा भी रहा سُبْحَانَ الله

है अ़ब्द कहां मा'बूद कहां, मे'राज की शब है राज़े निहां[6]

दो नूर ह़िजाबे नूर में थे ख़ुद रब ने कहा سُبْحَانَ الله

जब सजदे की आख़िरी ह़दों तक जा पहुंचा उ़बूदिय्यत वाला

ख़ालिक़ ने कहा مَاشَآءَ الله ह़ज़रत ने कहा سُبْحَانَ الله

समझे ह़ामिद इन्सान ही क्या येह राज़ हैं हुस्नो उल्फ़त के

ख़ालिक़ का ह़बीबी[7] कहना था ख़ल्क़त[8] ने कहा سُبْحَانَ الله

(बयाज़े पाक, स. 33)

---

(1)....आ'ला, बुलन्द। (2)....बिजली। (3)....सुवार। (4)....अल्लाह ग़नी : अल्लाह बे नियाज़ है। (5)....सुवारी। (6)....राज़े निहां : पोशीदा राज़। (7)....मेरा ह़बीब। (8)....मख़्लूक़।

www.dawateislami.net

मे'राज की येह रात है

अज़ : बरादरे आ'ला ह़ज़रत

मौलाना मुह़म्मद ह़सन रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن

साक़ी कुछ अपने बादा कशों की ख़बर भी है
हम बेकसों के ह़ाल पे तुझ को नज़र भी है
जोशे अ़त़श (1) भी शिद्दते सोज़े जिगर भी है
कुछ तल्ख़ कामियां (2) भी हैं कुछ दर्दे सर भी है
ऐसा अ़त़ा हो जाम (3) शराबे त़हूर का
जिस के ख़ुमार में भी मज़ा हो सुरूर का

अब देर क्या है बादए इरफ़ां क़िवाम दे
ठन्ड पड़े कलेजे में जिस से वोह जाम दे
ताज़ा हो रूह़ प्यास बुझे लुत्फ़े ताम दे
येह तिश्ना काम (4) तुझ को दुआएं मुदाम (5) दे
उठें सुरूर आएं मज़े झूम झूम कर
हो जाऊं बे ख़बर लबे साग़र (6) को चूम कर

फ़िक्रे बुलन्द से हो इयां (7) इक़्तिदारे औज (8)
चहके हज़ार ख़ामा सरे शाख़सारे औज

---

(1)....प्यास। (2)....तल्ख़ कामियां : नाकामियां। (3)....पियाला। (4)....तिश्ना काम : प्यासा। (5)....हमेशा। (6)....पियाला। (7)....ज़ाहिर। (8)....बुलन्दी।

www.dawateislami.net

टपके गुले कलाम से रंगे बहारे औज
हो बात बात शाने उ़रूज, इफ़्तिख़ारे औज
फ़िक्रो ख़याल नूर के सांचों में ढल चलें
मज़मूं फ़राज़े (1) अ़र्श से ऊंचे निकल चलें
इस शान इस अदा से सनाए रसूल हो
हर शे'र शाख़े गुल हो तो हर लफ़्ज़ फूल हो
हुज़्ज़ार (2) पर सह़ाबे (3) करम का नुज़ूल हो
सरकार में येह नज़रे मुह़क़्क़र (4) क़बूल हो
ऐसी तअ़ल्लियों (5) से हो मे'राज का बयां
सब ह़ामिलाने अ़र्श सुनें आज का बयां
मे'राज की येह रात है रह़मत की रात है
फ़रह़त की आज शाम है उ़शरत की रात है
हम तीरा अख़्तरों (6) की शफ़ाअ़त की रात है
ए 'ज़ाज़े माहे त़यबा की रूयत की रात है
फैला हुवा है सुर्मए तस्ख़ीर चर्ख़ (7) पर
या ज़ुल्फ़ खोले फिरती हैं ह़ूरें इधर उधर

---

(1)....बुलन्दी, ऊंचाई । (2)....ह़ाज़िर की जम्अ़, मौजूदीन । (3)....बादल । (4)....ह़क़ीर, मा'मूली । (5)....बुलन्दियों, बुज़ुर्गियों । (6)....तीरा अख़्तर : बद क़िस्मत (7)....आस्मान ।

www.dawateislami.net

दिल सोख़्तों (1) के दिल का सुवैदा (2) कहूं उसे
पीरे फ़लक की आंख का तारा (3) कहूं उसे
देखूं जो चश्मे क़ैस से लैला कहूं उसे
अपने अन्धेरे घर का उजाला कहूं उसे

येह शब है या सवादे वत़न आश्कार है
मुश्कीं ग़िलाफ़े का'बए परवर दगार है

उस रात में नहीं येह अन्धेरा झुका हुवा
कोई गलीम (4) पोश मुराक़िब है, या ख़ुदा
मुश्कीं लिबास या कोई महबूबे दिलरुबा
या आहूए (5) सियाह येह चरते हैं जा बजा

अब्रे सियाह मस्त उठा ह़ाले वज्द में
लैला ने बाल खोले हैं सह़राए नज्द में

येह रुत (6) कुछ और है येह हवा ही कुछ और है
अब की बहारे होश रुबा ही कुछ और है
रूए ज़रूसे गुल में सफ़ा ही कुछ और है
चुभती हुई दिलों में अदा ही कुछ और है

---

(1)....दिल सोख़्ता : दिल जला। (2)....वोह सियाह नुक़्ता जो इन्सान के दिल पर होता है। (3)....आंख की पुतली। (4)....कम्बल। (5)....हिरन। (6)....समां, मौसिम।

www.dawateislami.net

गुलशन खिलाए बादे सबा ने नए नए
गाते हैं अ़न्दलीब[1] तराने नए नए

हर हर कली है मशरुक़ ख़ुरशीदे नूर से
लिपटी है हर निगाह तजल्ली तूर से
रूहत[2] है सब के मुंह पे दिलों के सुरूर से
मुर्दे हैं बे क़रार हिजाबे कुबूर से

माहे अ़रब के जल्वे जो ऊंचे निकल गए
ख़ुर्शीद[3] व माहताब[4] मुक़ाबिल से टल गए

हर समत से बहारे नव इख़्वानियों में है
नैसाने जूदे रब, गुहर अफ़्शानियों में है
चश्मे कलीम जल्वे के कुरबानियों में है
ग़ुल आमदे हुज़ूर का रूहानियों में है

इक धूम है हबीब को मेहमां बुलाते हैं
बहरे बुराक़े ख़ुल्द को जिब्रील जाते हैं

(ज़ौक़े ना'त, स. 194)

---

(1)....बुलबुल। (2)....ताज़गी। (3)....सूरज। (4)....चांद।

www.dawateislami.net

पर्दा रुख़े अन्वर से जो उठा शबे मे'राज

अज़ : मद्दाहे ह़बीब ह़ज़रते मौलाना

जमीलुर्रह़मान क़ादिरी रज़वी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه

पर्दा रुख़े अन्वर से जो उठा शबे मे'राज
जन्नत का हुवा रंग दोबाला शबे मे'राज

हूरों ने भी गाया येह तराना शबे मे'राज
ख़ालिक़ ने मुह़म्मद को बुलाया शबे मे'राज

गैसू खुले घनघोर घटा उठी कि हम पर
बाराने करम झूम के बरसा शबे मे'राज

ऐ रह़मते आ़लम तेरी रह़मत के तसद्दुक़
हर इक ने पाया तेरा सदक़ा शबे मे'राज

जिस वक़्त चली शाहे मदीना की सुवारी
सजदे में भी झुका अ़र्शे मुअ़ल्ला शबे मे'राज

ख़ुर्शीदो क़मर अज़्रों समा अ़र्श व मलाइक
किस ने नहीं पाया तेरा सदक़ा शबे मे'राज

वोह जोश था अन्वार का अफ़्लाक के ऊपर
मिलता न था नज़ारे को रस्ता शबे मे'राज

मेहमान बुलाने के लिये अपने नबी को
अल्लाह ने जिब्रील को भेजा शबे मे'राज

www.dawateislami.net

येह शाने जलालत कि निहायत ही अदब से
जिब्रील ने आक़ा को जगाया शबे मे'राज

जिब्रील भी हैरान हुवे देख के रुत्बा
सिद्रा से क़दम जब कि बढ़ाया शबे मे'राज

जिब्रील थके हो गए सरकार रवाना
मुंह तक्ता हुवा रह गया सिद्रा शबे मे'राज

हमराह सुवारी के थीं अफ़वाजे मलाइक
बन कर चले इस शान से दुल्हा शबे मे'राज

यूं मस्जिदे अक़्सा में नमाज़ उस ने पढ़ाई
त़ालिब से मिलीं बढ़ के दोगाना शबे मे'राज

हर एक नबी बल्कि सब अफ़्लाक के कुदसी
पढ़ते थे शहनशाह का ख़ुत़बा शबे मे'राज

जाने दो जहां रिफ़्अ़ते सरकार पे कुरबां
कहता था येह बढ़ बढ़ के रफ़ा 'ना शबे मे'राज

मुद्दत से जो अरमान था वोह आज निकाला
हूरों ने किया ख़ूब नज़ारा शबे मे'राज

आरास्ता हो ख़ुल्द मुअद्दब हों फ़िरिश्ते
यूं हातिफ़े ग़ैबी ने पुकारा शबे मे'राज

www.dawateislami.net

बहम चली आती थीं दुआ़ओं की सदाएं
हर रात नबी की हो ख़ुदाया शबे मे'राज

थी रास्ते भर उन पे दुरूदों की निछावर
बांधा गया तस्लीम का सहरा शबे मे'राज

दुल्हा थे मुह़म्मद तो बराती थे फ़िरिश्ते
इस शान से पहुंचे मेरे मौला शबे मे'राज

अल्लाह की रह़मत वोह महका गुले वह़दत
ख़ुश्बू से बसा आ़लमे बाला शबे मे'राज

रोशन हुवे सब अर्ज़ो समा नूर से उस के
जब माहे अ़रब अ़र्श पे चमका शबे मे'राज

था चर्ख़े चहारुम (1) पे कोई त़ूर के ऊपर
सरकार गए अ़र्श से बाला शबे मे'राज

जब पहुंचे मक़ामे फ़तदल्ला पे मुह़म्मद
ख़ालिक़ से रहा कुछ भी न पर्दा शबे मे'राज

ऐ सल्ले अ़ला बज़मे तदल्ला में पहुंच कर
उस ज़ात में गुम हो गए आक़ा शबे मे'राज

---

(1).....चर्ख़े चहारुम : चौथा आस्मान।

www.dawateislami.net

मुमकिन ही नहीं अ़क़्ल दो आ़लम की रसाई
ऐसा दिया अल्लाह ने रुत्बा शबे मे'राज

अ़र्शो मलक व अज़्रो समा जन्नत व दोज़ख़
उस शाह ने हर चीज़ को देखा शबे मे'राज

तफ़्सील से की सैर मगर इस पे येह तुर्रा (1)
इक पल में येह तै़ हो गया रस्ता शबे मे'राज

ज़न्जीर दरे पाक की हिलती हुई पाई
और गर्म था वोह बिस्तर शबे मे'राज

ऐ माहे मदीना तेरी तन्वीर के कुरबां
चमका दिया उम्मत का नसीबा शबे मे'राज

लो आ़सियो! वोह तुम को वहां पर भी न भूले
काटा गया इस्या का सियाहा शबे मे'राज

ऐ मोमिनो! मुज़्दा (2) कि वोह अल्लाह से लाए
बख़्शाइशे उम्मत का क़बाला शबे मे'राज

भेजूंगा मैं उम्मत को तेरी ख़ुल्द में पहले
हक़ ने किया महबूब से वा'दे शबे मे'राज

उस में से जमीले रज़वी को भी अ़ता हो
रहमत का बटा ख़ास जो हिस्सा शबे मे'राज

(क़बालए बख़्शिश, 82)

(1)....बढ़ कर, अनोखा, अ़जीब। (2)....ख़ुश ख़बरी।

www.dawateislami.net

इक धूम है अ़र्शे आ'ज़म पर

अज़ : अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना **अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

हैं सफ़ आरा सब ह़ूरों मलक और ग़िल्मां [1] ख़ुल्द सजाते हैं
इक धूम है अ़र्शे आ'ज़म पर मेहमान ख़ुदा के आते हैं

है आज फ़लक रोशन रोशन, हैं तारे भी जगमग जगमग
मह़बूब ख़ुदा के आते हैं मह़बूब ख़ुदा के आते हैं

क़ुरबान मैं शानो अ़ज़मत पर, सोए हैं चैन से बिस्तर पर
जिब्रीले अमीं ह़ाज़िर हो कर मे'राज का मुज़्दा [2] सुनाते हैं

जिब्रीले अमीन बुराक़ लिये जन्नत से ज़मीं पर आ पहुंचे
बारात फ़िरिश्तों की आई मे'राज को दुल्हा जाते हैं

है ख़ुल्द का जोड़ा ज़ैबे बदन, रह़मत का सजा सहरा सर पर
क्या ख़ूब सुहाना है मन्ज़र मे'राज को दुल्हा जाते हैं

है ख़ूब फ़ज़ा महकी महकी चलती है हवा ठन्डी ठन्डी
हर सम्त समां है नूरानी मे'राज को दुल्हा जाते हैं

येह इ़ज़्ज़ों जलाल अल्लाह ! अल्लाह ! येह औजो [3] कमाल अल्लाह ! अल्लाह !
येह हुस्नो जमाल अल्लाह ! अल्लाह ! मे'राज को दुल्हा जाते हैं

---

(1)....गुलाम की जम्अ़, लड़का । वोह लड़के जो जन्नत में जन्नतियों की ख़िदमत के लिये होंगे । (2)....ख़ुश ख़बरी । (3)....बुलन्दी, बरतरी ।

www.dawateislami.net

दीवानो ! तसव्वुर में देखो ! असरा के दुल्हा का जल्वा
झुरमट में मलाइका ले कर इन्हें मे'राज का दुल्हा बनाते हैं

अक़्सा में सुवारी जब पहुंची जिब्रील ने बढ़ के कही तक्बीर
नबियों की इमामत अब बढ़ कर, सुल्ताने जहां फ़रमाते हैं

वोह कैसा हसीं मन्ज़र होगा जब दुल्हा बना सरवर होगा
उ़श्शाक़ तसव्वुर कर कर के, बस रोते ही रह जाते हैं

येह शाह ने पाई सआ़दत है, ख़ालिक़ ने अ़ता की ज़ियारत है
जब एक तजल्ली पड़ती है, मूसा तो ग़श खा जाते हैं

जिब्रील ठहर कर सिद्रा पर बोले जो बढ़े हम एक क़दम
जल जाएंगे सारे बालो पर, अब हम तो यहीं रह जाते हैं

अल्लाह की रह़मत से सरवर, जा पहुंचे दना की मन्ज़िल पर
अल्लाह का जल्वा भी देखा दीदार की लज़्ज़त पाते हैं

मे'राज की शब तो याद रखा फिर ह़श्र में कैसे भूलेंगे ?
अ़त्तार इसी उम्मीद पे हम दिन अपने गुज़ारे जाते हैं

(वसाइले बख़्शिश, स. 259)

www.dawateislami.net

तफ़्सीली फ़ेहरिस्त

इजमाली फ़ेहरिस्त	4	अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के खुत़बे	22
किताब को पढ़ने की 10 निय्यतें	5		
अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (तआ़रुफ़)	6	आस्मान की त़रफ़ उ़रूज	26
पेशे लफ़्ज़	8	पहला आस्मान	//
कुछ इस किताब के बारे में	9	जन्नती व जहन्नमी अरवाह़	28
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	10	दूसरा आस्मान	//
मो'जिज़ए मे'राज और ज़माने के ह़ालात	11	तीसरा आस्मान	29
वाक़िअए मे'राज का बयान	13	चौथा आस्मान	30
शक़्क़े सद्र	14	पांचवां आस्मान	31
बुराक़ की सुवारी	//	छटा आस्मान	//
बैतुल मुक़द्दस की त़रफ़ रवानगी	16	सातवां आस्मान	33
तीन मक़ामात पर नमाज़	//	सिद्रतुल मुन्तहा	34
सफ़रे बैतुल मुक़द्दस के चन्द मुशाहदात	18	मक़ामे मुस्तवा	//
ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام नमाज़ में	19	अ़र्शे उ़ला से भी ऊपर	35
बैतुल मुक़द्दस आमद	20	दीदारे इलाही और हम कलामी का शरफ़	36
अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की इमामत	//	ला मकां की वह़ी	//
		पचास से पांच नमाज़ें	37
दूध और शराब के पियाले	22	जन्नत की सैर	39

www.dawateislami.net

नहरे कौसर पर तशरीफ़ आवरी	40	मे'राजे जिस्मानी का सुबूत	59
जहन्नम का मुआ़यना	//	नोट	//
वापसी का सफ़र	41	दूसरा मक़ाम	60
वाक़िआ़ए मे'राज का ए'लान	42	तीसरा मक़ाम	//
अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की कुदरते कामिला	//	**मे'राज के हवाले से मुफ़ीद मा'लूमात**	**62**
बैतुल मुक़द्दस का रूबरू पेश होना	45		
क़ाफ़िलों की ख़बरें	//	मे'राज शरीफ़ का इन्कार करना कैसा ?	//
सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की तस्दीक़	46	मे'राज शरीफ़ की हिक्मतें	//
		मे'राज शरीफ़ कितनी बार हुई ?	65
वाक़िआ़ए मे'राज से माख़ूज़ चन्द अनमोल मदनी फूल	49	क्या दीगर अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को भी मे'राज हुई ?	//
कुरआन में मे'राज का बयान	**56**	क्या दीगर अम्बिया عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام भी बुराक़ पर सुवार हुवे ?	66
पहला मक़ाम	//		
मदनी फूल	//	ज़मीन से सिद्रतुल मुन्तहा का फ़ासिला	68
आयत को लफ़्ज़े سُبْحٰنَ से शुरूअ़ करने की हिक्मत	57	दीदारे इलाही	//
		शबे मे'राज के मुशाहदात	**70**
गुनाहों से नजात पाने का नुस्ख़ा	//	इन्आ़माते इलाही से मुतअ़ल्लिक़	//
ख़ुदा तआ़ला की कुदरत का बयान	58	जन्नत के दरवाज़े पर क्या लिखा था ?	//

www.dawateislami.net

मोतियों से बने हुवे गुम्बद नुमा ख़ैमे	72	पथ्थर ख़ोर आदमी	85
बुलन्दो बाला महल्लात	73	पेटों में सांप	//
गुस्सा बिल्कुल न आए तो....?	74	शर्हे हदीस	86
शाने सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ	75	दर्से इब्रत	//
हज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के क़दमों की आहट	76	सर कुचले जाने का अ़ज़ाब	87
		आग की क़ैंचियां	//
शर्हे हदीस	77	बे अ़मल वाइ़ज़ का अन्जाम	89
ज़बरजद और याक़ूत के ख़ैमे	79	क़ादियानी प्रोफ़ेसर की तौबा	90
नूर में छुपा हुवा आदमी	80	आग की शाख़ों से लटके हुवे लोग	91
राहे ख़ुदा में जिहाद	81	ज़िनाकारों के तीन अ़ज़ाब	93
अ़ज़ाबे इलाही से मुतअ़ल्लिक़	//	बदबूदार गोश्त खाने वाले लोग	//
ग़ीबत के चार अ़ज़ाब	//	उलटे लटके हुवे लोग	94
अपना ही गोश्त खाने वाले लोग	//	मुंह में आग के पथ्थर	//
मुर्दार ख़ोर जहन्नमी	82	ख़ारदार घास और थोहर खाने का अ़ज़ाब	96
सीनों से लटके हुवे लोग	//		
तांबे के नाख़ुन	83	ज़कात न देने के हौलनाक अ़ज़ाब	97
औ़रतें ज़ियादा ग़ीबत करती हैं	//	कर ले तौबा....!!	98
सूदख़ोरी के दो अ़ज़ाब	85	मे'राज शरीफ़ के चन्द मन्ज़ूम कलाम	99

www.dawateislami.net

वोह सरवरे किश्वरे रिसालत	99	इक धूम है अ़र्शे आ'ज़म पर	120
अ़र्श की अ़क्ल दंग है	109	तफ़्सीली फ़ेहरिस्त	122
अ़र्शे बरीं पर जल्वा फ़िगन	111	माख़ज़ो मराजेअ़	126
मे'राज की येह रात है	112	अल मदीनतुल इल्मिय्या कुतुब लिस्ट	133
पर्दा रुख़े अन्वर से जो उठा शबे मे'राज	116	याद दाश्त बराए मुतालआ़	134

इ़ल्म का बाब सीखना हज़ार नवाफ़िल से अफ़्ज़ल है

हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र गिफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, फ़रमाते हैं कि मक्की मदनी सरकार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से फ़रमाया : ऐ अबू ज़र ! तुम सुब्ह़ के वक़्त किताबुल्लाह की एक आयत सीख लो तो येह तुम्हारे लिये सो100 नवाफ़िल पढ़ने से अफ़्ज़ल है। (سنن ابن ماجه، باب فضل من تعلم القرآن وعلمه، ص٤٨، الحديث:٢١٩)

बिग़ैर इ़ल्म फ़तवा देना कैसा....?

ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने सरापा इ़ब्रत है : जिस ने बिग़ैर इ़ल्म के फ़तवा दिया तो इस का गुनाह फ़तवा देने वाले पर है। (سنن ابی داود، کتاب العلم، باب التوقی فی الفتیا، ص٥٨٠، الحدیث:٣٦٥٧)

www.dawateislami.net

مآخذومراجع

نمبر شمار	کتاب مصنف / مؤلف مع سن وفات	ناشر مع سن طباعت
1	القرآن الکریم کلامِ باری تعالیٰ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۳۲ھ
2	کنز الایمان فی ترجمۃ القرآن اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان، متوفی ۱۳۴۰ھ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۳۲ھ
3	جامع البیان فی تاویل القرآن (تفسیر الطبری) امام ابو جعفر محمد بن جریر طبری، متوفی ۳۱۰ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت 2009ء
4	الجامع لاحکام القرآن (تفسیر القرطبی) امام ابو عبد اللہ محمد بن احمد انصاری قرطبی، متوفی ۶۷۱ھ	دار الفکر، بیروت ۱۴۲۹ھ
5	الدر المنثور فی التفسیر بالمأثور امام جلال الدین عبد الرحمٰن بن ابو بکر سیوطی، متوفی ۹۱۱ھ	مرکز ھجر للبحوث والدراسات، ۱۴۲۴ھ
6	تفسیر المظھری قاضی ثناء اللہ مظہری پانی پتی، متوفی ۱۲۲۵ھ	دار احیاء التراث العربی، ۱۴۲۵ھ
7	خزائن العرفان صدر الافاضل مفتی سید محمد نعیم الدین مراد آبادی، متوفی ۱۳۶۷ھ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۳۲ھ
8	نور العرفان حکیم الامت مفتی احمد یار خان نعیمی، متوفی ۱۳۹۱ھ	نعیمی کتب خانہ گجرات

www.dawateislami.net

9	شانِ حبیب الرحمٰن حکیم الامت مفتی احمد یار خان نعیمی، متوفی ۱۳۹۱ھ	نعیمی کتب خانہ گجرات
10	صحیح البخاری امام ابو عبد اللہ محمد بن اسماعیل بخاری، متوفی ۲۵۶ھ	دار المعرفۃ بیروت ۱۴۲۸ھ
11	صحیح مسلم امام ابو حسین مسلم بن حجاج قشیری، متوفی ۲۶۱ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت 2008ء
12	سنن ابن ماجہ امام ابو عبد اللہ محمد بن یزید ابن ماجہ، متوفی ۲۷۳ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت 2009ء
13	سنن ابی داود امام ابو داؤد سلیمان بن اشعث سجستانی، متوفی ۲۷۵ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۸ھ
14	سنن الترمذی امام ابو عیسیٰ محمد بن عیسیٰ ترمذی، متوفی ۲۷۹ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت 2008ء
15	سنن النسائی امام ابو عبد الرحمن احمد بن شعیب نسائی، متوفی ۳۰۳ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت 2009ء
16	المؤطا للامام مالک امام ابو عبد اللہ مالک بن انس بن مالک، متوفی ۱۷۹ھ	دار المعرفۃ، بیروت ۱۴۳۳ھ
17	صحیح ابن حبان امام ابو حاتم محمد بن حبان بن احمد تمیمی، متوفی ۳۵۴ھ	دار المعرفۃ، بیروت ۱۴۲۵ھ
18	المستدرک علی الصحیحین امام ابو عبد اللہ محمد بن عبد اللہ حاکم نیشاپوری، متوفی ۴۰۵ھ	دار المعرفۃ، بیروت ۱۴۲۷ھ

www.dawateislami.net

19	المصنف لابن ابی شیبہ حافظ عبد اللہ بن محمد بن ابی شیبہ کوفی عبسی، متوفی ۲۳۵ھ	مدینۃ الاولیاء ملتان
20	مسند الامام احمد امام احمد بن حنبل، متوفی ۲۴۱ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۹ھ
21	المعجم الاوسط حافظ سلیمان بن احمد طبرانی، متوفی ۳۶۰ھ	دار الفکر، عمان ۱۴۲۰ھ
22	المسند للشاشی ابو سعید الہیثم بن کلیب بن سریج شاشی، متوفی ۳۳۵ھ	مکتبۃ العلوم والحکم ۱۴۱۰ھ
23	مسند الفردوس ابو شجاع شیرویہ بن شہر دار دیلمی، متوفی ۵۰۹ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۰۷ھ
24	بغیۃ الباحث عن زوائد مسند الحارث حافظ نور الدین علی بن سلیمان ہیثمی، متوفی ۸۰۷ھ	مرکز خدمۃ السنۃ والسیرۃ النبویۃ، ۱۴۱۳ھ
25	شعب الایمان امام ابو بکر احمد بن حسین بیہقی، متوفی ۴۵۸ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۹ھ
26	السنن الکبریٰ امام ابو بکر احمد بن حسین بیہقی، متوفی ۴۵۸ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
27	الجامع الصغیر امام جلال الدین عبد الرحمٰن بن ابو بکر سیوطی، متوفی ۹۱۱ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۳۳ھ
28	الشریعۃ امام ابو بکر محمد بن حسین آجری بغدادی، متوفی ۳۶۰ھ	دار الوطن، الریاض ۱۴۱۶ھ

www.dawateislami.net

29	مجمع الزوائد حافظ ابو الحسن نور الدین علی بن ابو بکر ہیثمی، متوفی ۸۰۷ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۲ھ
30	موسوعۃ الامام ابن ابی الدنیا امام ابو بکر عبد اللہ بن محمد قرشی، متوفی ۲۸۱ھ	المکتبۃ العصریۃ بیروت ۱۴۲۹ھ
31	مشکاۃ المصابیح ابو عبد اللہ ولی الدین محمد بن عبد اللہ تبریزی، متوفی ۷۴۱ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۸ھ
32	کنز العمال علاء الدین علی متقی بن حسام الدین ہندی، متوفی ۹۷۵ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۴ھ
33	دلائل النبوۃ امام ابو بکر احمد بن حسین بیہقی، متوفی ۴۵۸ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۹ھ
34	الخصائص الکبریٰ امام جلال الدین عبد الرحمٰن بن ابو بکر سیوطی، متوفی ۹۱۱ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت 2008ء
35	الریاض النضرۃ ابو جعفر احمد بن عبد اللہ بن محمد طبری، متوفی ۶۹۴ھ	دار الغرب الاسلامی 1996ء
36	فتح الباری حافظ احمد بن علی بن حجر عسقلانی، متوفی ۸۵۲ھ	دار السلام، الریاض ۱۴۲۱ھ
37	عمدۃ القاری علامہ بدر الدین ابو محمد محمود بن احمد عینی، متوفی ۸۵۵ھ	دار الفکر، بیروت ۱۴۲۶ھ
38	مرآۃ المناجیح حکیم الامت مفتی احمد یار خان نعیمی، متوفی ۱۳۹۱ھ	نعیمی کتب خانہ گجرات

www.dawateislami.net

39	الزواجر عن اقتراف الكبائر شہاب الدین احمد بن محمد بن حجر ہیتمی، متوفی ۹۷۴ھ	دار الحدیث، القاہرہ ۱۴۲۳ھ
40	الترغیب والترھیب امام زکی الدین منذری، متوفی ۶۵۶ھ	دار المعرفۃ، بیروت ۱۴۲۹ھ
41	السیرۃ النبویۃ ابو محمد عبد الملک بن ہشام، متوفی ۲۱۳ھ	دار الفجر للتراث القاہرہ ۱۴۲۵ھ
42	مواھب اللدنیۃ شہاب الدین احمد بن محمد قسطلانی، متوفی ۹۲۳ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت 2009ء
43	شرح الزرقانی علی المواھب محمد بن عبد الباقی بن یوسف زرقانی، متوفی ۱۱۲۲ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۱۸ھ
44	السیرۃ الحلبیۃ امام ابو الفرج نور الدین علی بن ابراہیم، متوفی ۱۰۴۴ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت 2008ء
45	السیرۃ النبویۃ و الآثار المحمدیۃ ابو العباس احمد بن زینی دحلان مکی شافعی، متوفی ۱۳۰۴ھ	دار القلم العربی حلب ۱۴۱۷ھ
46	انوارِ جمالِ مصطفےٰ رئیس المتکلمین مفتی نقی علی خان، متوفی ۱۲۹۷ھ	شبیر برادرز لاہور
47	کتاب المعراج امام ابو القاسم عبد الکریم بن ہوازن قشیری، متوفی ۴۶۵ھ	دار بیبلیون باریس
48	حاشیۃ الدمدیر علی قصۃ المعراج للغیطی ابو البرکات سیدی احمد دَرْدِیر، متوفی ۱۲۰۱ھ	دار احیاء الکتب العربیۃ

www.dawateislami.net

49	البداية والنهاية حافظ عماد الدين بن اسمٰعيل بن عمر دمشقی، متوفی ۷۷۴ھ	دار المعرفة بيروت ۱۴۲۶ھ
50	صورة الارض ابو القاسم محمد بن حوقل بغدادی، متوفی بعد ۳۶۷ھ	دار مكتبة الحياة ۱۹۹۲ء
51	الخيرات الحسان شہاب الدين احمد بن محمد بن حجر مکی، متوفی ۹۷۴ھ	دار الكتب العلمية بيروت ۱۴۰۳ھ
52	تذکرۂ امیر اہلسنت شعبہ امیر اہلسنت، مجلس المدینۃ العلمیۃ (دعوتِ اسلامی)	مكتبة المدينه، باب المدينة، كراچی
53	منح الروض الازهر علامہ علی بن سلطان محمد القاری، متوفی ۱۰۱۴ھ	دار البشائر الاسلامية ۱۴۱۹ھ
54	ایہا الولد حجۃ الاسلام امام ابو حامد محمد بن محمد غزالی، متوفی ۵۰۵ھ	مكتبہ نظامیہ گجرات ۱۴۰۴ھ
55	كتاب الكبائر شمس الدين ابو عبد الله محمد بن احمد ذہبی، متوفی ۷۴۸ھ	دار الندوة الجديدة بيروت
56	فتاوی رضویہ اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان، متوفی ۱۳۴۰ھ	رضا فاؤنڈیشن لاہور
57	ملفوظاتِ اعلیٰ حضرت مفتی اعظم ہند مولانا محمد مصطفےٰ رضا خان، متوفی ۱۴۰۲ھ	مكتبة المدينه باب المدينه كراچی ۱۴۳۰ھ
58	بہارِ شریعت صدر الشریعۃ مفتی محمد امجد علی اعظمی، متوفی ۱۳۶۷ھ	مكتبة المدينه باب المدينه كراچی ۱۴۳۲ھ

www.dawateislami.net

59	مقالاتِ کاظمی غزالیٔ زماں علامہ سید احمد سعید کاظمی، متوفی ۱۴۰۶ھ	کاظمی پبلی کیشنز ملتان
60	کفریہ کلمات کے بارے میں سوال جواب امیرِ اہلسنّت حضرت علامہ مولانا محمد الیاس عطار قادری	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۳۰ھ
61	قصیدۃ البردۃ مع شرحھا عصیدۃ الشھدۃ احمد بن ابو بکر بوصیری، متوفی ۸۴۰ھ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۳۴ھ
62	حدائقِ بخشش اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان، متوفی ۱۳۴۰ھ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۳۳ھ
63	ذوقِ نعت شہنشاہِ سخن مولانا حسن رضا خان، متوفی ۱۳۲۶ھ	شبیر برادرز لاہور ۱۴۲۸ھ
64	بیاضِ پاک حجۃ الاسلام مولانا حامد رضا خان، متوفی ۱۳۶۲ھ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۳۴ھ
65	قبالۂ بخشش خلیفہ اعلیٰ حضرت مولانا جمیل الرحمن رضوی	اکبر بک سیلرز لاہور
66	وسائلِ بخشش امیرِ اہلسنّت حضرت علامہ مولانا محمد الیاس عطار قادری	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۳۲ھ
67	اردو لغت ادارہ ترقی اردو بورڈ	ترقی اردو لغت بورڈ کراچی

www.dawateislami.net

शो'बए इस्लाही कुतुब

(1) ख़ौफ़े खुदा عَزَّوَجَلَّ (कुल सफ़हात : 160)
(2) इनफ़िरादी कोशिश (कुल सफ़हात : 200)
(3) तंग दस्ती के अस्बाब (कुल सफ़हात : 33)
(4) फ़िक्रे मदीना (कुल सफ़हात : 164)
(5) इमतिहान की तय्यारी कैसे करें ? (कुल सफ़हात : 32)
(6) नमाज़ में लुक़्मा देने के मसाइल (कुल सफ़हात : 39)
(7) जन्नत की दो चाबियां (कुल सफ़हात : 152)
(8) काम्याब उस्ताज़ कौन ? (कुल सफ़हात : 43)
(9) निसाबे मदनी क़ाफ़िला (कुल सफ़हात : 196)
(10) काम्याब त़ालिबे इल्म कौन ? (कुल सफ़हात : तक़रीबन 63)
(11) फ़ैज़ाने एह्याउल उ़लूम (कुल सफ़हात : 325)
(12) मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी (कुल सफ़हात : 96)
(13) ह़क़ व बात़िल का फ़र्क़ (कुल सफ़हात : 50)
(14) तह़क़ीक़ात (कुल सफ़हात : 142)
(15) दा'वते इस्लामी की जेलख़ाना जात में ख़िदमात (कुल सफ़हात : 24)
(16) मदनी कामों की तक़्सीम (कुल सफ़हात : 68)
(17) त़लाक़ के आसान मसाइल (कुल सफ़हात : 30)
(18) तौबा की रिवायात व ह़िकायात (कुल सफ़हात : 132)
(19) क़ब्र खुल गई (कुल सफ़हात : 48)
(20) आदाबे मुर्शिदे कामिल (मुकम्मल पांच ह़िस्से) (कुल सफ़हात : 275)
(21) टी वी और मूवी (कुल सफ़हात : 32)
(22 ता 29) फ़तावा अहले सुन्नत (सात ह़िस्से)
(30) क़ब्रिस्तान की चुड़ैल (कुल सफ़हात : 24)
(31) ग़ौसे पाक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के ह़ालात (कुल सफ़हात :106)
(32) तआ़रुफ़े अमीरे अहले सुन्नत (कुल सफ़हात : 100)
(33) रहनुमाए जदवल बराए मदनी क़ाफ़िला (कुल सफ़हात : 255)

www.dawateislami.net

याद दाश्त

(दौराने मुत़ालआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़ह़ा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये । اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इ़ल्म में तरक़्क़ी होगी ।)

उ़नवान	सफ़ह़ा	उ़नवान	सफ़ह़ा

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के महके महके मदनी माह़ोल में ब कषरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमा'रात इशा की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की मदनी इल्तिजा है, आ़शिक़ाने रसूल के मदनी क़ाफ़िलों में ब निय्यते षवाब सुन्नतों की तर्बिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना "फ़िक्रे मदीना" के ज़रीए मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह के इबतिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की ह़िफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।" اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये "मदनी इन्आ़मात" पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये "मदनी क़ाफ़िलों" में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

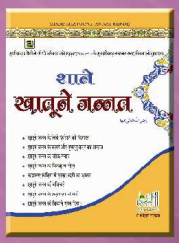

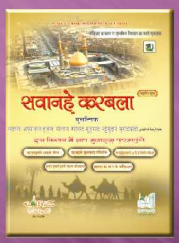

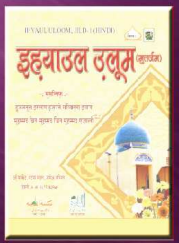

ISBN 978-969-631-363-2
0101933

MAKTABATUL MADINA
421, URDU MARKET, MATYA MAHAL, JAMA MASJID
DELHI - 110006, PH : 011-23284560
email : maktabadelhi@gmail.com
web : www.dawateislami.net